छत्तीसगढ़ का पहला राष्ट्रीय दैनिक

SUNDAY

बिलासपुर, रविवार, 10 दिसंबर 2023

वर्ष - 33 | अंक -221 | पृष्ठ - 12

मूल्य - 4.00 रु.

www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ...

संपर्क करें :-
bilaspurdeshbandhu@gmail.com

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

चुनाव में हार से पार्टी के मोल-भाव की शक्ति कम नहीं होगी : कांग्रेस पृष्ठ 3

मड़ई
▸ बिगड़े झन लोक गीत-संगीत : जयंती यादव पृष्ठ 4

▸ भारत अब द. अफ्रीका में भी जीत का सिलसिला जारी रखने को बेताब
जिम्बाब्वे के कप्तान सिंकदर रजा पर दो मैच की पाबंदी पृष्ठ 10

देश विदेश
▸ सबसे बड़े शहर खान यूनिस को घेर रहा इजराइल
▸ भारतीय-अमेरिकी डेमोक्रेट कैनसस प्रांतीय सीनेट के लिए एक बार फिर मैदान में
▸ यूएई के गाजा युद्धविराम प्रस्ताव पर अमेरिका ने लगाया वीटो
पृष्ठ 9

सार संक्षेप

दिव्यांगजन को सहानुभूति नहीं, मान्यता का पात्र मानना चाहिए : धनखड़

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि दिव्यांगजनों को सहानुभूति का पात्र नहीं बल्कि उन्हें उनके ज्ञान, योग्यता, झुकाव और विशेषज्ञता के लिए मान्यता का पात्र माना जाना चाहिए। श्री धनखड़ ने कहा, एक ऐसा इको-सिस्टम बनाने की आवश्यकता है जिससे हम अपने दिव्यांग जनों को सशक्त बना सकें जिनके पास अपार प्रतिभा है। विकलांगता मानसिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक चुनौतियों के दायरे तक फैली हुई है। वे गुरुग्राम में विकलांगता पर 10 वें राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

सुकमा में बीस नक्सलियों ने किया समर्पण

सुकमा। छत्तीसगढ़ के अति नक्सल प्रभावित सुकमा जिले में एक साथ 2 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। इनमें पाँच महिलाएं शामिल हैं। पुलिस अधीक्षक किरण चौहान ने बताया कि आत्मसमर्पण करने वाले नक्सली सुकमा जिले के जगरगुंडा इलाके में सक्रिय थे। आत्मसमर्पण कर पुनर्वास योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। इसी कड़ी में इन नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में 3.59 करोड़ का नामांकन

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई) के अंतर्गत 3.59 करोड़ से अधिक लाभार्थियों का नामांकन किया गया है। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की संसद में रखी एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2017-18 में इस योजना के प्रारंभ होने से लेकर दो दिसंबर 2023 तक 3.21 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को 14,428.35 करोड़ रुपये से अधिक के मातृत्व लाभ वितरित किए गए हैं। इसमें केंद्र और राज्य दोनों के हिस्से शामिल हैं।

दिल्ली से लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के दो सदस्य गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के वसंत कुंज के पास संक्षिप्त मुठभेड़ के बाद लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया है। दिल्ली पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। दिल्ली पुलिस ने दावा किया कि दोनों की पहचान हरियाणा के मूल निवासी अनीश (23) और 15 वर्षीय किशोर के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि ये दोनो जबरन वसूली के लिए दक्षिण दिल्ली इलाके में एक प्रसिद्ध पांच सितारा होटल के पास गोलीबारी करने जा रहे थे।

सरकार के छह सलाहकारों को बर्खास्त किया

हैदराबाद। पद संभालने के तीन दिन के भीतर एक और महत्वपूर्ण फैसले में तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने सरकार के छह सलाहकारों को बर्खास्त कर दिया है। मुख्य सचिव शांति कुमारी ने एक सरकारी आदेश जारी कर तीन मुख्य सलाहकारों और तीन सलाहकारों की नियुक्ति या विस्तार को रद्द कर दिया। सभी सलाहकारों की नियुक्ति के. चंद्रशेखर राव की अध्यक्षता वाली पिछली बीआरएस सरकार द्वारा की गई थी। उसमें पूर्व मुख्य सचिव राजीव शर्मा और सोमेश कुमार, पूर्व डीजीपी अनुराग शर्मा, पूर्व आईपीएस अधिकारी ए.के. खान, सेवानिवृत्त आईईएस जी.आर. रेड्डी और सेवानिवृत्त आईएफएस आर. शोबा शामिल थे।

भाजपा विधायक दल की बैठक आज, पार्टी ने 54 सीटों पर जीत की है दर्ज

छत्तीसगढ़ में नए मुख्यमंत्री के नाम पर आज लगेगी मुहर

रायपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ में हुए विधानसभा चुनावों में सत्ता में धमाकेदार वापसी करने वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायकों की विधायक दल का नेता चुनने के लिए कल यहां बैठक होंगी। भाजपा आलाकमान ने छत्तीसगढ़ में विधायक दल का नेता चुनने के लिए आहूत बैठक के लिए केन्द्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा एवं सर्वानंद सोनोवाल और पार्टी महासचिव दुष्यंत कुमार गौतम को छत्तीसगढ़ के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किया है। तीनो पर्यवेक्षकों के कल सुबह यहां पहुंचने की संभावना है।नवनिर्वाचित विधायकों की प्रदेश भाजपा मुख्यालय में बैठक होंगी।

राज्य की 90 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा ने 54 सीटों पर जीत दर्ज की है।भाजपा ने सत्तारूढ़ कांग्रेस को अप्रत्याशित रूप से शिकस्त कर सत्ता में वापसी की है।कांग्रेस को महज 35 सीटों पर सन्तोष करना पड़ा।

डा.रमन सिंह रेस में आगे

भाजपा नेतृत्व ने अभी तक किसी को मुख्यमंत्री बनने के संकेत नही दिए है,लेकिन राजनीतिक जानकारों के अनुसार रेस में पूर्व मुख्यमंत्री डा.रमन सिंह आगे बताए जा रहे है। उनके

अलावा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरूण साव,पूर्व केन्द्रीय मंत्री विष्णुदेव साय एवं रेणुका सिंह के भी रेस में होने की चर्चा है। इस बीच प्रदेश भाजपा कार्यालय और वरिष्ठ भाजपा नेताओं के आवास पर बधाई देने के लिए लोगो का तांता लगा है। पूर्व मुख्यमंत्री डा.सिंह के आवास पर सर्वाधिक भीड़ देखी गई है।उन्हे राज्यभर से बधाई देने लोग पहुंच रहे है।

अरुण साव, विष्णुदेव साय और रेणुका सिंह की सुरक्षा बढ़ाने के निर्देश

प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की शानदार जीत के 6 दिन बाद भी इस बात पर 'सस्पेंस' जारी है कि छत्तीसगढ़ का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा। वहीं बड़ी खबर सामने आ रही है कि पुलिस प्रशासन को अरुण साव, विष्णुदेव साय और रेणुका सिंह की सुरक्षा बढ़ाने के निर्देश दिए गए है। तीनों ही छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री पद के

कद्दावर दावेदार बने हुए है। वहीं खबर यह भी है कि कोर कमेटी की बैठक के बाद कभी भी सीएम के नाम की घोषणा हो सकती है।

मध्य प्रदेश व राजस्थान में कल हो जाएगी तस्वीर साफ

भोपाल। मध्य प्रदेश व राजस्थान में मुख्यमंत्री पद को लेकर कल तस्वीर साफ हो जाएगी। दोनों राज्यों में सोमवार को विधायक दल की बैठक बुलाई गई हे।

भारतीय जनता पार्टी की मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने आज बताया कि आगामी 11 तारीख को विधायक दल की बैठक होगी, जिसमें पार्टी की ओर से नियुक्त किए गए तीनों पर्यवेक्षक शामिल होंगे। श्री शर्मा ने यहां संवाददाताओं को बताया कि सोमवार 11 तारीख को शाम चार बजे विधायक दल की बैठक होगी, जिसके लिए विधायकों को आमंत्रण चला गया है।

सोमवार को होगी बैठक

तीनों पर्यवेक्षक 11 तारीख की सुबह यहां पहुंचेंगे, जिसके बाद संगठन की पद्धति के अनुरूप प्रक्रिया होगी। मुख्यमंत्री पद की दौड़ के संबंध में श्री शर्मा ने कहा कि केंद्रीय नेतृत्व ही सब कुछ तय करेगा। राज्य के विकास को आगे बढ़ाने और 2024 में श्री मोदी को पुनः प्रधानमंत्री बनाने के लिए, राज्य की दृष्टि से जो सर्वश्रेष्ठ होगा, वही होगा। राजस्थान का नया मुख्यमंत्री चुनने को लेकर भी दिल्ली से लेकर जयपुर तक भाजपा में गहमागहमी का माहौल है। भाजपा के विधायक दल की बैठक सोमवार को होगी। इससे पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सभी विधायकों से बातचीत करेंगे।

बसपा ने सांसद दानिश अली को पार्टी से निकाला

लखनऊ, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने अमरोहा से सांसद दानिश अली को पार्टी से निकाल दिया है। उन्हें निलंबित करने के पीछे पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल होना बताया जाता है। बसपा के महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा ने पत्र जारी करके कहा कि 2018 में पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा के कहने पर दानिश को टिकट दिया गया था। टिकट देने के साथ ही उन्हें पार्टी की रीति-नीति के बारे में अच्छी तरह से बता दिया गया था। लेकिन, वह लगातार पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल थे। इसी कारण उन्हें पार्टी से बाहर कर दिया गया। अमरोहा से सांसद दानिश अली हाल ही में काफी सुर्खियों में रहे थे। दिल्ली से भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी ने उन पर संसद के अंदर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। दानिश अली ने लोकसभा स्पीकर को पत्र लिखकर बिधूड़ी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। दूसरी ओर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए बिधूड़ी से पूछा था कि उनके खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की जाए। गौरतलब है कि 2019 में लोकसभा चुनाव में बसपा ने दानिश अली को अमरोहा सीट से उम्मीदवार घोषित किया था। दानिश अली ने भी मायावती की उम्मीदों पर खरा उतरते हुए विजय प्राप्त की थी।

बसपा सुप्रीमो का फैसला दुर्भाग्यपूर्ण : दानिश

बहुजन समाज पार्टी से निकाले जाने के बाद सांसद दानिश अली की पहली प्रतिक्रया आई है। उन्होंने बसपा सुप्रीमो मायावती के फैसले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। दानिश अली को यह कहते हुए बीएसपी से निकाला गया है कि उन्होंने पार्टी की विचारधारा, नीतियों और अनुशासन का पालन नहीं किया। दानिश अली ने कहा, मैं इतना ही कहूंगा कि बहन कुमारी मायावती जी का हमेशा मैं शुक्रगुजार रहूंगा कि उन्होंने मुझे बहुजन समाज पार्टी का टिकट देकर लोकसभा का सदस्य बनने में मेरी मदद की। बहन जी ने मुझे बहुजन समाज पार्टी से लोकसभा में संसदीय दल का नेता भी बनाया. मुझे सदैव उनका असीम स्नेह और समर्थन मिला है। उनका आज का फैसला जरूर दुर्भाग्यपूर्ण है। मैंने भारतीय जनता पार्टी की सरकार की जन-विरोधी नीतियों का विरोध जरूर किया है और आगे भी करता रहूंगा। चंद पूंजीपतियों द्वारा जनता की संपत्तियों की लूट के खिलाफ मैंने आवाज उठाई है और आगे भी उठाता रहूंगा क्योंकि यही सच्ची जनसेवा है।

हार के बाद कांग्रेस में घमासान

चंदन यादव ने टिकट के लिए मांगे सात लाख : विनय जायसवाल

रायपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद कांग्रेस में घमासान मचा है। प्रदेश प्रभारी महासचिव कुमारी सैलजा के बाद अब प्रभारी सचिव चंदन यादव पर पूर्व विधायक विनय जायसवाल ने टिकट के एवज में सात लाख रु मांगने का आरोप लगाया है।

■ पूर्व विधायक ने कांग्रेस नेताओं पर लगाए कई गंभीर आरोप

कांग्रेस की हार के बाद अब कांग्रेस नेताओं का गुस्सा फूट रहा है।बृहस्पत सिंह के बाद अब विनय जायसवाल ने भी पार्टी पदाधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। पत्रकारों से चर्चा करते हुए विनय जायसवाल ने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सचिव चंदन यादव ने उनसे टिकिट के एवज में पार्टी फंड के लिए सात लाख रुपए लिए थे। इसके अलावा पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव पर भी विनय जायसवाल ने गंभीर आरोप लगाया है। उन्होंने राजदरबारियों को टिकट देने का आरोप लगाया है।उन्होंने कहा कि रमेश सिंह और जतिन

➤➤ शेष पृष्ठ 2 पर ➤

नेताओं को पार्टी फोरम में रखनी चाहिए बात : भगत

विधनसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद कांग्रेस की अंतरकलह सामने आ रही है। पूर्व विधायक बृहस्पति सिंह ने प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा और पूर्व उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव पर गंभीर आरोप लगाए थे। साथ ही कुमारी सैलजा को हटाने मांग की थी. वहीं कांग्रेसी नेता विनय जायसवाल ने भी पार्टी पदाधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने प्रभारी सचिव चंदन यादव पर रुपए लेने का बड़ा आरोप लगाया है। नेताओं के इस रवैये की वजह से पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में खासी नाराजगी है। इसी बीच पूर्व मंत्री अमरजीत भगत ने बड़ा बयान दिया है। अमरजीत भगत ने कहा कि राज्य में कांग्रेस की सरकार किसी भी सूरत-ए-हाल में बननी थी। लेकिन कई कारणों से हम चुनाव हार गए।विधानसभा चुनाव में मिली हर की समीक्षा जारी है।लेकिन बृहस्पत सिंह और विनय जयसवाल का दर्द भी छलक

➤➤ शेष पृष्ठ 2 पर ➤

सैलजा व अन्य कांग्रेस नेताओं के खिलाफ बयान बाजी करने वालो पर कार्यवाही की जरूरत : डॉ. महंत

प्रदेश कांग्रेस इलेक्शन कम्पैन कमेटी के चेयरमैन व विधानसभा अध्यक्ष व सक्ती के नव निर्वाचित विधायक डॉ. चरणदास महंत ने चुनाव 2023 में मिले जनादेश का सम्मान करते हुए प्रदेश भर के मतदाताओं का आभार जताया। डॉ. महंत ने कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव व प्रदेश प्रभारी व पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी शैलजा के खिलाफ दिये गए बयानबाजी की तल्ख लहजे में निंदा करते हुए गहरी नाराजगी ब्यक्त करते हुए कहा कि इस

➤➤ शेष पृष्ठ 2 पर ➤

आदिवासी विधायको को हराने का षड्यंत्र रचा गया : मोहितराम

कांग्रेस में जारी बयानबाजी के बीच अब एक और पूर्व विधायक ने पार्टी नेताओं के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। पाली तानाखार से पूर्व विधायक मोहित राम केरकेट्टा ने नेताओं पर बड़ा आरोप लगाया है। उनका आरोप है कि आदिवासी विधायकों को हारने का षडयंत्र किया गया है।पार्टी के अंदर के कुछ नेताओं ने मिलकर षड्यंत्र रचा है। केरकेट्टा ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को भी गुमराह किया गया। बैज को चुनाव लड़ाने का काम

➤➤ शेष पृष्ठ 2 पर ➤

दिलीप षड़ंगी ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा, लगाया उपेक्षा का आरोप

छत्तीसगढ़ी कलाकार और कांग्रेस नेता दिलीप षड़ंगी ने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी है। उन्होंने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है।साथ ही उन्होंने सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष पद से भी इस्तीफा दे दिया है। दिलीप षड़ंगी ने पार्टी पर उपेक्षा का आरोप भी लगाया है।

षड़ंगी ने प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज को लिखे अपने पत्र में कहा है कि 'मैं साढ़े पांच वर्ष पहले नौकरी छोड़कर कांग्रेस में कलाकारों की सेवा,

➤➤ शेष पृष्ठ 2 पर ➤

सबूत है मेरे पास,दिल्ली जाकर आलाकमान को सौंपूंगा : बृहस्पत

कांग्रेस में कलह थमने का नाम नहीं ले रहा है. प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा और टीएस सिंहदेव को लेकर की गई बयानबाजी पर बृहस्पत सिंह को कांग्रेस ने कारण बताओ नोटिस जारी किया है।नोटिस जारी होने के बाद बृहस्पत सिंह का बयान सामने आया है। बृहस्पत सिंह ने कहा, मैं दिल्ली जा रहा हूं, हाईकमान के पास। जो मैं बयान दिया हूं, उसका पुख्ता सबूत है मेरे पास। एक-एक शब्द सही है। बृहस्पत सिंह ने कहा, मैं राष्ट्रीय

➤➤ शेष पृष्ठ 2 पर ➤

भारत विश्व पटल का चमकता सितारा : अमित शाह

देहरादून, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि आज का शक्तिशाली भारत विश्व के पटल का चमकता सितारा है, जिसके प्रकाश पुंज से चहुं दिशाएं जगमग हैं। पर्यावरण से लेकर आर्थिक मोर्चा हो या शांति स्थापित करने के प्रयास हों, सभी जगह भारत दुनिया का नेतृत्व करता दिखाई देता है और यह सब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से संभव हो पाया है। एफआरआई में ग्लोबल इन्वेस्टर समिट के समापन सत्र को संबोधित करते हुए करते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास के नए आयाम स्थापित करता जा रहा है।

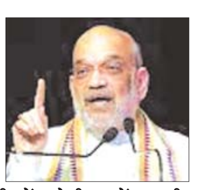

आज भारत दुनिया में आर्थिक विकास का इंजन बनकर उभरा है। पूरी दुनिया भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रही है। दिल्ली में हुए जी 20 सम्मेलन की सफलता और दिल्ली डिक्लेरेशन इस ओर बखूबी करता है कि विश्व के सभी देशों को एकजुट रखने में भारत पूर्ण रूप से सफल रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी का लक्ष्य है कि भारत 2047 तक एक विकसित देश बने। शाह ने कहा कि पर्यावरण हो या फिर शांति की बात भारत सभी देशों को एक मंच पर लाने में कामयाब हुआ है।

बस्तर में फिर एक भाजपा नेता हुआ टार्गेट किलिंग का शिकार

नारायणपुर, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। बस्तर संभाग के भाजपा नेताओ को नक्सली एक के बाद एक निशाने पर ले रहे हैं। नक्सली चुन चुनकर भाजपा नेताओं की हत्या कर रहे हैं। संभाग के छोटे डोंगर थाना क्षेत्र में पूजा करने मंदिर पहुंचे भाजपा नेता कोमल मांझी को नक्सलियों ने कुल्हाड़ी से काट डाला। चंद माह के भीतर नक्सली दो भाजपा नेताओं को मौत के घाट उतार चुके हैं। इन घटनाओं से जाहिर होता है कि नक्सली भाजपा नेताओं की टार्गेट किलिंग कर रहे हैं तथा वे हिंदुत्व विरोधी भी हैं।

■ मंदिर में पूजा करते भाजपा नेता कोमल मांझी का नक्सलियों ने किया हत्या
■ जिला भाजपा उपाध्यक्ष सागर साहू की हत्या के बाद यह दूसरी वारदात

पुलिस और सुरक्षा बलों द्वारा चलाए जा रहे नक्सल विरोधी अभियानों व की जा रही कार्रवाई से नक्सली विचलित हो उठे हैं। वे अपनी भड़ास आम ग्रामीणों तथा भाजपा कार्यकर्ताओं पर उतार रहे हैं। चंद माह पहले ही नक्सलियों ने नारायणपुर जिला भाजपा के उपाध्यक्ष सागर साहू की हत्या कर दी थी। आज शनिवार को एकबार फिर नक्सलियों ने नारायणपुर जिले के ही दूसरे भाजपा नेता की जान ले ली। नारायणपुर जिले के छोटेडोंगर थाना क्षेत्र अंतर्गत मुंडाटिकरा गांव के निवासी भाजपा नेता कोमल मांझी गांव के शीतला मंदिर में पूजा करने गए थे तभी वहां कुछ नक्सली आ धमके। नक्सलियों ने भाजपा नेता कोमल मांझी को निको जायसवाल कंपनी का एजेंट बताते हुए उन पर टंगिए से ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दिया। कोमल मांझी के शरीर पर अनगिनत वार किए गए, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। श्री मांझी पूजा के लिए जो जल कलश साथ लेकर गए थे, वह उनके हाथ

देश में ब्लॉक हुई तकरीबन 37 हजार वेबसाइट

नई दिल्ली, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। केंद्र सरकार ने बीते पांच साल में देश विरोधी गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए बडे पैमाने पर कार्रवाई की और तकरीबन 37 हजार बेवसाइट्स पर प्रतिबंध लगा दिया। यह जानकारी केंद्रीय इलेक्टानिक्स एवं आईटी मंत्रालय के राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर ने दी। राज्यसभा में सीपीआई सांसद जॉन ब्रिटास के एक सवाल के लिखित जवाब में उन्होंने बताया कि जनवरी 2018 से अक्टूबर 2023 के बीच मंत्रालय ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 69 ए के तहत 36,838 वेबसाइटों को प्रतिबंधित किया। सर्वाधिक वेबसाइटों के यूआरएल ब्लॉक करने में एक्स पहले स्थान पर रहा।

पॉक्सो के 2.43 लाख मामले अदालतों में लंबित

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। तमाम नीतियों, प्रयासों और वित्तीय प्रतिबद्धताओं के बावजूद पॉक्सो के मामलों की सुनवाई के लिए बनाई गई विशेष त्वरित अदालतों में 31 जनवरी 2023 तक देश में दो लाख 43 हजार 237 मामले लंबित थे। एक शोधपत्र जस्टिस अवेट्स 'ऐन एनालिसिस ऑफ द एफिकेसी ऑफ जस्टिस डेलिवरी मैकेनिज्म्स इन केसेज ऑफ चाइल्ड सेक्सुअल एब्यूज' के अनुसार अगर लंबित मामलों की इस संख्या में एक भी नया मामला नहीं जोड़ा जाए तो भी इन सारे मामलों के निपटारे में औसतन नौ साल का समय लगेगा। शोधपत्र के अनुसार मौजूदा हालात में जनवरी, 2023 तक के पॉक्सो के लंबित मामलों के निपटारे में अरुणाचल प्रदेश को 30 साल लग जाएंगे, जबकि दिल्ली को 27, पश्चिम बंगाल को 25, मेघालय को 21, बिहार को 26 और उत्तर प्रदेश को 22 साल लगेंगे। वर्ष 2022 में पॉक्सो के सिर्फ तीन फीसदी मामलों में सजा सुनाई गई।

तेलंगाना सरकार ने महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा शुरू की

हैदराबाद, 8 दिसम्बर (एजेंसियां)। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने शनिवार को कांग्रेस पार्टी द्वारा हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में लोगों को दी गई छह में से दो गारंटियों को लागू करने की शुरुआत की है।

सीएम ने राज्य के मालिकाना हक वाली टीएसआरटीसी बसों में महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा और राजीव आरोग्यश्री योजना के तहत कवरेज को मौजूदा 5 लाख रुपये से बढ़ाकर 10 लाख रुपए करने की योजना का उद्घाटन किया। महिला मंत्री सीताक्का और कोंडा सुरेखा ने विधानसभा परिसर में पूरे मंत्रिमंडल और कांग्रेस विधायकों की मौजूदगी में बस को हरी झंडी दिखाई। उन्होंने सोनिया गांधी को तेलंगाना की मां बताया।

उन्होंने दोहराया कि तेलंगाना को एक कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए सभी छह गारंटी 100 दिनों में पूरी की जाएंगी। सभी आयु वर्ग की लड़कियों, महिलाओं और ट्रांसजेंडर, जो तेलंगाना के मूल निवासी हैं।

प्रदुषण

चेन्नई में 2023 में प्रदूषण में आई 23 प्रतिशत की कमी , मुंबई में भी पिछले चार वर्षों में हुई बढ़ोतरी

दिल्ली दुनिया के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में चौथे स्थान पर

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। भारत के 1.3 अरब लोग उन क्षेत्रों में रहते हैं जहां वार्षिक औसत कण प्रदूषण स्तर डब्ल्यूएचओ दिशानिर्देश से अधिक है। विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के अनुसार, 222 में पीएम 2.5 के स्तर के मामले में दिल्ली दुनिया के 5 सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में चौथे स्थान पर है।

मुंबई में पिछले चार वर्षों में 110 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जबकि लखनऊ, पटना, बेंगलुरु और चेन्नई में पीएम 2.5 के स्तर में गिरावट देखी गई, चेन्नई में 2023 में 23 प्रतिशत की कमी देखी गई। जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीसीएचएच) के सलाहकार डॉ. नरेश पुरोहित ने शनिवार को पटियाला स्थित सरकारी मेडिकल कॉलेज द्वारा 'वायु प्रदूषण से उत्पन्न खतरों' विषय पर आयोजित एक सेमिनार को संबोधित करने के बाद मीडिया संवाददाताओं को बताया कि वायु प्रदूषण बढ़ते अदृश्य संकट में एक मूक सहयोगी के रूप में उभरा है। इस मुद्दे पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए प्रसिद्ध महामारी विशेषज्ञ डॉ. पुरोहित ने कहा कि वायु प्रदूषण भारत में कई मौतों का एक मूक हत्यारा है। यह एक रहस्यमयी धुंध है जो आमतौर पर फसल जलने, वाहनों के उत्सर्जन, निर्माण गतिविधि के कारण धूल भरी आंधियों और औद्योगिक उत्सर्जन के कारण होती है। उन्होंने बताया कि वायु प्रदूषण कोई अकेला दुश्मन नहीं है, बल्कि प्रदूषकों का एक जटिल मिश्रण है, जिसे संख्यात्मक रूप से एक्यूआई (वायु गुणवत्ता सूचकांक) के रूप में आंका जाता है। सूक्ष्म कण पदार्थ (पीएम2.5), नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, ओजोन और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक एक जहरीला मिश्रण बनाते हैं जो हर सांस के साथ फेफड़ों में प्रवेश करता है। शोधकर्ताओं के अनुसार ये प्रदूषक श्वसन प्रणाली और यहां तक कि मानव मस्तिष्क को भी प्रदूषित करते हैं।-

सीईओ जिला पंचायत पर बड़ा आरोप

कांग्रेस प्रत्याशी वर्तमान विधायक को फायदा पहुंचाने बैक डेट पर दी प्रशासकीय स्वीकृति

बीजापुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम शाह मंडावी को चुनाव में फायदा पहुंचाने में प्रशासन ने बैक डेट पर 6 करोड़ 82 लाख 58 हजार रुपए की लागत से 43 मिट्टी मुरूम सड़क का प्रशासकीय स्वीकृति दिया था ।

9 अक्टूबर को प्रदेश में विधानसभा संपन्न हेतु आदर्श आचार संहिता लागू हुआ था, परन्तु चुनाव से पहले 6 अक्टूबर को जिला पंचायत सीईओ ने 43 सड़कों के लिए प्रशासकीय स्वीकृति देकर कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम शाह मंडावी को चुनाव में फायदा पहुंचाने के लिए किया है। भाजपा जिलाध्यक्ष श्रीनिवास मुदलियार ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि सीईओ जिला पंचायत रवि कुमार साहू के काले कारनामे की उच्च स्तरीय जांच भाजपा करेगी।

जिला पंचायत सीईओ पर कड़ी कार्रवाई के लिए जिलाध्यक्ष श्रीनिवास मुदलियार बड़ी बात कहीं। बैक डेट पे प्रशासकीय स्वीकृति दिए जाने के सवाल पर जिला पंचायत ष्टश्वह्र का हैरान कर देने वाला बयान भी सामने आया। जिला पंचायत सीईओ ने कहा मुझे जानकारी नहीं, मुझे याद नहीं, मैं देखकर बता पाऊंगा, जैसे गोलमोल जवाब दिया गया।

■ आबकारी मंत्री के खास माने जाते है बीजापुर जिला पंचायत सीईओ रवि साहू

बेक डेट से करोड़ों के चेक काट रहे कलेक्टर कटारा–मुदलियार

प्रदेश में भाजपा की सरकार को बनते देखकर बीजापुर कलेक्टर राजेंद्र कटारा ने बेक डेट से करोड़ों रुपए के चेक कट रहे हैं । बेक डेट से चेक काटने की शिकायत मुख्य सचिव को दी गई । मुख्य सचिव ने बीजापुर कलेक्टर राजेंद्र कटारा को फटकार भी लगाया लेकिन उसके बावजूद भी कलेक्टर राजेंद्र कटारा ने बेक डेट से करोड़ों रुपए के चेक काट रहे हैं। कलेक्टर राजेंद्र कटारा कमीशनखोरी के चलते लगातार बेक डेट से चेक कट रहे हैं। भाजपा जिलाध्यक्ष श्रीनिवास मुदलियार ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर जानकारी दी हैं। आगे श्रीनिवास मुदलियार ने बताया कि कलेक्टर राजेंद्र कटारा ने विधायक विक्रम मंडावी के साथ साठगांठ बनाकर बीजापुर जिले के विकास कार्य के पैसों को बंदरबाट कर रहे है। जिस तरह प्रदेश में कांग्रेस सरकार की हार हुई उसके बाद बीजापुर में विक्रम मंडावी और कलेक्टर राजेंद्र कटारा ने बौखलाहट में आकर ऐसे कारनामें को अंजाम दे रहे हैं। पूर्व में प्रेस वार्ता के माध्यम से पूर्व मंत्री महेश गागड़ा ने सभी विभाग के अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि विधायक और कलेक्टर के चाहते ठेकेदारों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बेक डेट में चेक काट रहे हैं। ऐसे अधिकारियों को बक्शा नहीं जानें की समझाइश दी।

लेकिन बीजापुर कलेक्टर राजेंद्र कटारा ने लगातार बेक डेट पर चेक कट रहे है। बेक डेट से चेक काट रहे इसकी पूरी जानकारी फ़ोटो सहित सबूत के साथ हमारे पास है। जितने भी फर्जी चेक काट रहे हैं उसकी जांच कर कार्यवाही करवाएंगे।

राज्य न्यायिक अकादमी में तनाव प्रबंधन पर कार्यशाला

मनोचिकित्सक ने जीवन में आने वाली कठिनाईयों से निपटने का समाधान सुझाया

रायपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और छत्तीसगढ़ राज्य न्यायिक अकादमी के संरक्षक न्यायमूर्ति रमेश सिन्हा और अकादमी के अध्यक्ष न्यायमूर्ति संजय के. अग्रवाल के कुशल मार्गदर्शन में, छत्तीसगढ़ राज्य न्यायिक अकादमी में 9 दिसम्बर को एक प्रभावशाली कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला में न्यायिक अधिकारियों के बीच तनाव की चुनौतियों का समाधान करने और स्वयं के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए मूल्यवान उपायो के संबध में चर्चा की गई। तनाव प्रबंधन की इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को उनके मानसिक व भावनात्मक कल्याण के प्रति सजग करना था।

छत्तीसगढ़ राज्य न्यायिक अकादमी में आयोजित इस कार्यशाला में मुम्बई के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक श्री हरीश शेट्टी मुख्य वक्ता थे। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये कार्य के व्यापक अनुभव के आधार पर तनाव से छुटकारा पाने एवं दिन प्रतिदिन जीवन में आने वाली कठिनाईयों से निपटने हेतु व्यावहारिक रणनीतियाँ बताई।

इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायिक सेवा के सदस्यों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी निभाई। श्री शेट्टी ने कार्यशाला में उपस्थित सभी न्यायिक अधिकारियो को स्वतंत्र रूप से उनके विचार व्यक्त करने की सुविधा प्रदान की, जिसमें उपस्थित प्रतिभागियों ने अपने अनुभव तो साझा किये ही, दिन प्रतिदिन के कार्य से उत्पन्न होने वाले तनाव के संबध में श्री शेट्टी से खुल कर चर्चा की, प्रत्येक समस्या का समाधान मनोचिकित्सक श्री शेट्टी द्वारा किया गया ।

इस कार्यशाला में श्री हरीश शेट्टी द्वारा साझा की गई जानकारी न केवल ज्ञान वर्धक थी बल्कि कानूनी पेशे से जुडे लोगों के सामने आने वाली अनोखी चुनौतियों के अनुरूप भी थी।

लोक जन सुनवाई होने के लिये बने टेट मंच को तोड़ फोड़ करने वाले 17 आरोपियो को किया गिरफ्तार

भाटापारा, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। प्रकाश बाचवानी पता सिंधी कैम्प झुलेलाल मंदिर के सामने तिल्दा थाना तिल्दा जिला रायपुर दिनांक 24/09/2023 के 03/00 बजें ग्राम मोहभठ्ठा के लोगो महिला द्वारा बलवा करने के उद्देश्य से हाथ में लाठी डंडा लेकर गाली गुप्तार एवं जान से मारने की धमकी देते हुए लोक जन सुनवाई मे लगे लगाये कैम्प निर्माण कार्य को तोडफोड़ कर टेंट में लगे निर्माण कार्य करने वाले व्यक्तिमयो को को दौड़ाया गया। टेन्ट निर्माण हो गया था उसका तोड – फोड़ कर दिया। टेन्ट में लगे कुर्सी– टेबल, बांस बल्ली, तारपोलीन– दरी कारपेट को तोड फोड़ कर एवं टेंट में लगे कपड़े को फाड़ दिया सामान को इधर ऊधर तोडफोड कर बिखेर दिये। कि रिपोर्ट पर अपराध क्र. 97/2023 धारा 147,148,294,506,427 पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय श्री दीपक कुमार झा के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बलौदाबाजार एवं एसडीओपी भाटापारा श्री आशीष अरोरा के मार्गदर्शन एवं श्री अजय झा निरीक्षक थाना प्रभारी हथबंद के नेतृत्व तोडफोड करने वाले आरोपीगणो को गिर. कर मामला जमानतीय होने से जमानत मुचलता पर रिहा किया गया है

आरोपिगणो के नाम– मधु वर्मा पति अनिल वर्मा उम्र 40 साल , मुन्नी वर्मा पति समेलाल वर्मा उम्र 45 साल, किर्ती निषाद पति प्रमोद कुमार निषाद उम्र 43 साल, नितु यादव पिता शिव चरण यादव उम्र 19 साल, रितेश वर्मा पिता नारद वर्मा उम्र 25 साल, राजू वर्मा पिता मनोहर वर्मा उम्र 39 साल, प्रमोद कुमार निषाद पिता स्व लल्लु राम निषाद उम्र 45 साल, खिलेश्वर वर्मा पिता बंशीलाल वर्मा उम्र 54 साल, घनश्याम वर्मा पिता बलराम वर्मा उम्र 40 साल, प्रहलाद वर्मा पिता मनोहर वर्मा उम्र 42 साल, विरेनू उर्फ सोनू पिता झालाराम वर्मा उम्र 29 साल, बिरेनू बघेल पिता देवशिंग बघेल उम्र 44 साल, बेदराम वर्मा पिता स्व केजूराम वर्मा उम्र 56 साल, बली राम वर्मा पिता केजूराम वर्मा उम्र 48 साल, राजेश वर्मा पिता राम कुमार वर्मा उम्र 32 साल, भिखम चंद वर्मा पिता भगत राम वर्मा उम्र 45 साल, दुष्यंत वर्मा उर्फ राजा पिता श्रवण वर्मा उम्र 28 साल सभी साकिनान मोहभटठा थाना हथबंद जिला बलौदाबाजार भाटापारा छ.ग.उक्त कार्यवाही में सउनि जगदेव कुमार साहू आरक्षक प्रशांत धर दीवान, धर्मेन्द्र यादव, भरत बंजारे, कमलेश्वर बर्मन, भुवन वर्मा का विशेष योगदान रहा।

देवांगन समाज ने निकाली विशाल शोभायात्रा

तखतपुर 09 दिसंबर (देशबन्धु)। परमेश्वरी जयंती के समापन के अवसर पर आज देवांगन समाज द्वारा देवांगन भवन में स्थापित मां परमेश्वरी की प्रतिमा की पूजा अर्चना कर विशाल शोभायात्रा निकाली गई जहां नगर में जगह जगह मां परमेश्वरी की पूजा अर्चना कर शोभायात्रा का स्वागत किया गया।

हिंदू युवा मंच एवं भाजपा द्वारा शोभायात्रा का स्वागत किया गया। नगर में देवांगन समाज द्वारा सात दिनों तक माँ परमेश्वरी उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस दौरान प्रतिदिवस परमेश्वरी पुराण का आयोजन हुआ साथ ही सांस्कृतिक और रचनात्मक आयोजन किया गया जिसमें समाज के लोगों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आयोजन में खरोरा के कथावाचक किशन राव जी महराज ने माँ परमेश्वरी पुराण के विषय में विस्तृत प्रकाश डाला एवं कथा वाचन किया। समापन दिवस को चढोत्री हवन पुजन के पश्चात शोभायात्रा लगभग दोहपर 3 बजे जनकपुर भवन से निकाली गई। जिसमें समाज के लोग बाजे गाजे के साथ उत्साह पूर्वक नगर भ्रमण किये आर इस शोभायात्रा का जगह जगह स्वागत किया गया।

शोभायात्रा में 251 बालिकाओं ने कलश यात्रा निकाली। लगभग तीन हजार देवांगन समाज के महिला, पुरूष, युवक, बुजुर्ग एवं बच्चे आदि शामिल थे। उक्त शोभायात्रा देवांगन मोहल्ले से होकर ठाकुर देव मंदिर, बजरंग नगर, संगम नगर होते हुए निकली उक्त शोभायात्रा में किशन राव, राजेश अमरिका देवांगन, रामाधार देवांगन, गंगाराम देवांगन, राजेश देवांगन, राजू देवांगन, कांत देवांगन, दिनेश देवांगन, शेखर देवांगन, रवि देवांगन, चंद्रप्रकाश देवांगन, सुरेश देवांगन, कृष्णा देवांगन, तिलक देवांगन, मुकेश देवांगन, शत्रुहन देवांगन, सन्नी देवांगन, अरब देवांगन, पप्पू देवांगन, विकास देवांगन, जनकराम देवांगन, कैलाश देवांगन हनुमान प्रसाद देवांगन, भोलाराम देवांगन, अरूण देवांगन, झाडूराम देवांगन, अजय देवांगन, ईश्वर देवांगन, बिहारी देवांगन, तोरन देवांगन, सुनील देवागंन, उमेन्द्र देवागंन, दल्लु देवागंन, मुकेश देवागंन, राजेश देवांगन, माधो देवांगन, शिव देवांगन, संतोष देवांगन, सतीश देवागंन, सुभाष देवांगन, महेन्द्र देवांगन, मनहरण लाल देवांगन, प्रमोद देवांगन, अमृत विष्णु, अरूण, अशोक, श्यामजी देवांगन, शिवनाथ, रामकुमार, शत्रुहन, शरद, कैलाश, बजरंग, गुनाराम, केशव, प्रहलाद, गुल्लू , छोटेलाल, किरीत, मनहरण देवांगन सहित अन्य उपस्थित रहे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

चंदन यादव ने टिकट के लिए...

जायसवाल सब राज दरबारी हैं। भाजपा और आरएसएस के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा गया ।फर्जी सर्वे रिपोर्ट तैयार की गई ।जिस विधायक का काम अच्छा था जानबूझकर खराब सर्वे रिपोर्ट का डर फैलाया गया ।इससे विधायक दिल्ली की दौड़ लगाने लगे। जायसवाल ने कहा मैं जितने वाला प्रत्याशी था ।राजदरबारी नही इसलिए टिकट काटी गई ।पार्टी फोरम में सब बात बताऊंगा ।किस होटल में किंतने बजे रूपए मांगे ।उन्होंने दोनो प्रभारी सचिव और टी एस सिंहदेव को पार्टी से बाहर निकलने मांग की है। छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी ने बृहस्पत सिंह को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। 3 दिन में लिखित में जवाब मांगा गया है। उन पर पार्टी की छवि धूमिल करने का आरोप लगा है। जिसके चलते उन्हें नोटिस जारी किया गया है।

नेताओं को पार्टी फोरम में...

रहा है। पार्टी के नेताओं को पार्टी फोरम में बात रखनी चाहिए। हमें संगठन को पहले की तरह मजबूत करने की जरूरत है। बदलाव की आवश्यकता हो तो उस पर विचार करना चाहिए।

सैलजा व अन्य कांग्रेस नेताओं के...

तरह की बयानबाजी करने वालो के खिलाफ सख्त कार्यवाही किये जाने की जरूरत है। डॉ. महंत ने कहा कि कांग्रेस पार्टी को तोडने़– बांटने व कमजोर करने वालो की अब कांग्रेस में कोई जरूरत नही है ! इस तरह के लोगों के खिलाफ अनुशासन का डंडा चलाने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि राष्ट्रीय नेतृत्व कुमारी शैलजा व प्रदेश के सह प्रभारियों ने कांग्रेस को एकजुट रखा, बावजूद किसी को अपनी बात रखना है तो पार्टी फोरम में रखे, पार्टी के बाहर बात रखने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जरूरत है। डॉ. महंत ने कहा कि पूर्व उप मुख्यमंत्री टीएस बाबा सहित अन्य कांग्रेस नेताओं के खिलाफ बयानबाजी करने वालों को बर्दाश्त नही किया जाएगा।

आदिवासी विधायको को ...

षड्यंत्रकारियों ने किया है ।केरकेट्टा ने अपने विधानसभा क्षेत्र पाली तानाखार में प्रदेश महामंत्री प्रशांत मिश्रा द्वारा पार्टी विरोधी काम करने का आरोप भी लगाया है। वहीं बड़ी संख्या में सिटिंग विधायकों की टिकट काटने को भी नुकसान बताया है ।पूर्व विधायक ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस में संगठनात्मक बदलाव की जरूरत है। इससे पहले भी कई विधायकों ने अपने ही पार्टी के नेताओं को टारगेट किया है।

इन पूर्व विधायकों ने इशारों–इशारों में छत्तीसगढ़ के आला नेताओं को ही हार का जिम्मेदार बताया है। वहीं पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने तो यहां तक कह दिया है कि मंत्रियों को पावर नहीं दिया गया, एक ताकत ही सरकार चला रही थी।

दिलीप षड़ंगी ने ...

एवं कलाकारों के माध्यम से कांग्रेस की सेवा करने हेतु कांग्रेस पार्टी में प्रवेश किया था। किन्तु लगातार पांच वर्षो तक मैं कांग्रेस के समर्थन में गाना बनाता रहा, गाता रहा, एवं कलाकारों के सम्मेलन हेतु लगातार प्रयास करता रहा ।तद्सम्बन्ध में मुख्यमंत्री , संस्कृति मंत्री, एवं कई वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं से निवेदन करता रहा किन्तु केवल आश्वासन मिला। किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिला जिस वजह से छत्तीसगढ़ के बहुत सारे कलाकार हमारी पार्टी से एवं हमारे सांस्कृतिक प्रकोष्ठ से दूर होते गए ।जिसका खामियाजा भुगतना पड़ा।

अत: इस तारतम्य में मैं अपने आपको समस्त दायित्वों सहित कांग्रेस के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष एवं कांग्रेस के प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे रहा हूं ।अत: मेरा त्याग पत्र स्वीकृत करें।

सबूत है मेरे पास...

अध्यक्ष से मिलूंगा, राहुल गांधी, सोनिया गांधी से मिलकर सबूत उनके हाथ में सौंपूंगा। जिसने ग़लत किया उसको यह नोटिस दिए होते तो सरकार नहीं जाती। गलत को गलत कहने पर नोटिस दिया गया है। इस तरह के गीदड़भभकी से डरने वाला नहीं हूं। पार्टी से बाहर निकालने की धमकी से नहीं डरूंगा, जो सच है वही कहूंगा। प्रदेश प्रभारी इसके लिए ज़िम्मेदार है ।बृहस्पत सिंह को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। वहीं 3 दिन के भीतर पार्टी ने लिखित में जवाब मांगा है।

सामाजिक बदलाव में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका : बल्देव शर्मा

रायपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में मीडिया परिसंवाद का आयोजन किया गया। यह आयोजन ब्रह्माकुमारी संस्थान के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी की आठवीं पुण्यतिथि पर आयोजित था। विषय था–सामाजिक परिवर्तन के लिए जागरूक मीडिया। सम्बोधित करते हुए कुशाभाऊ ठाकरे जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि पत्रकार समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लोक जागरण और लोकोपकार करना मीडिया का प्रमुख कार्य है। जो असहाय हैं, जिनका कोई नहीं है ऐसे रोते हुए लोगों के आंसू पोंछना और उनको हिम्मत देना हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सजगता, निर्भयता, सत्यान्वेषण और मानवीय संवेदना यह चार चीजें नहीं हो तो मीडिया मूल्यनिष्ठ नहीं रह पाएगा। वह पूरी तरह से मूल्यहीन और व्यावसायिक हो जाएगा।

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई की पुण्यतिथि पर मीडिया परिसंवाद

सोशल मीडिया से अनेक फ्रॉड हो रहे हैं : सतीश श्रीवास्तव

नई दुनिया के सम्पादक सतीश श्रीवास्तव ने कहा कि समाज मीडिया से अपेक्षा रखता है कि वह सामाजिक बदलाव के कार्य में अपनी भूमिका निभाए। मीडिया विचारों का श्रोत है। मीडिया को संवाद का माध्यम बतलाते हुए उन्होंने कहा कि आजादी के आन्दोलन में भी उसने जागरूकता फैलाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। हमारे समाज में जाति और वर्ण व्यवस्था लड़ाई के लिए नहीं है वरन् सामाजिक समरसता के लिए है। आजकल सोशल मीडिया अनसोशल बन चुकी है। इससे अनेक फ्रॉड हो रहे हैं। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. मानसिंह परमार ने कहा कि मैं चार साल बाद रायपुर आया हूँ। जिससे सुखद अनुभूति हो रही है। सामाजिक परिवर्तन के लिए मीडिया ने बहुत कार्य किया है। आजकल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की अपेक्षा प्रिन्ट मीडिया पर लोगों का ज्यादा भरोसा है। संविधान ने पत्रकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दिया है किन्तु आज स्वनियमन की आवश्यकता है । तब ही हम सामाजिक परिवर्तन की ओर आगे बढ़ सकेंगे। अंग्रेजी दैनिक हितवाद के सम्पादक ई.वी. मुरली ने कहा कि वर्तमान समय मीडिया कितना जागरूक है वह बतलाने की जरूरत नहीं है। चाहे सोशल मीडिया हो, प्रिन्ट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया हो सबमें सूचनाओं की सुनामी आयी हुयी है। समाज में जागरूकता फैलाना मीडिया की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। जब सब लोग अध्यात्म से जुड़ेंगे तब ही सामाजिक परिवर्तन के कार्य में तेजी आएगी। सही जानकारी सही समय पर प्रसारित करना मीडिया की जवाबदेही है। आई.बी.सी. 24 न्यूज चैनल के सम्पादक रविकान्त मित्तल ने कहा कि मीडिया का काम परिवर्तन लाना नहीं है। मीडिया तो सामाजिक कुरीतियों को सामने लाने का एक माध्यम मात्र है। परिवर्तन लाना ब्रह्माकुमारीज जैसे आध्यात्मिक संगठनों का कार्य है। वर्तमान समय हरेक व्यक्ति जिसके पास स्मार्ट फोन है वह पत्रकार है।

मीडिया ऐसा कुछ न परोसे जिनसे समाज में विकृति आए : हेमलता

क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने कहा कि मीडिया समाज का सजग प्रहरी है। मीडिया द्वारा एकता, सदभावना और सदाचार को सारे विश्व में फैलाया जा सकता है। निर्भीकता के साथ समाज की बुराइयों को सामने लाना मीडिया का कार्य है। मीडिया दर्शकों को ऐसा कुछ न परोसे जिनसे समाज में विकृति आए। रायपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने कहा कि मीडिया ऐसा प्रभावशाली माध्यम से जिसका प्रभाव लाखों लोगों पर पड़ता है। मीडिया में हम जैसा देखते, सुनते और पढ़ते हैं वैसा ही हम सोचने लगते हैं। मीडिया हमारी सोच को बदलने की ताकत रखता है।

पेंशनरों को 80 वर्ष से अधिक उम्र में अतिरिक्त पेंशन और मूल पेंशन पर गणना कर डीआर का भुगतान करें बैंक : महासंघ

रायपुर, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री व छत्तीसगढ़ पेंशनर फेडरेशन के प्रदेश संयोजक वीरेन्द्र नामदेव और पेंशनर्स महासंघ के राष्ट्रीय मंत्री पूरन सिंह पटेल ने भारत सरकार संचार विभाग के जारी निर्देश अनुसार केन्द्र तथा राज्य सरकार के पेंशनभोगी व कुटुम्ब पेंशनरों की उम्र सीमा 80 वर्ष पार होने पर मूल पेंशन पर 20त्नप्रतिशत अतिरिक्त पेंशन राशि को जोड़ कर मासिक पेंशन की भुगतान करने मांग की है। छत्तीसगढ़ राज्य के पेंशनरों से संबंधित सेन्ट्रल पेंशन प्रोसेसिंग सेल और सभी बैंको को इसे संज्ञान में लेकर त्रुटि सुधार हेतु समीक्षा करने का आग्रह किया है। जारी विज्ञप्ति में उन्होंने बताया कि केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा प्रति वर्ष जनवरी और जुलाई माह में महंगाई राहत (डीआर) के किस्त का घोषणा किया जाता है। इसका भुगतान बैंको द्वारा बैंक के खाते में किया जाता है ।इसका सही पालन नहीं हो रहा है।

इस विषय पर भारत सरकार संचार मंत्रालय ने 6 नवंबर 23 को भुगतान के जिम्मेदार अधिकारियों को निर्देश जारी कर कहा है कि कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है कि डी आर का भुगतान केवल मूल पेंशन पर किया जा रहा है इसे मूल पेंशन और अतिरिक्त पेंशन को जोड़कर गणना कर सभी बकाया का भुगतान हेतु कहा गया है। जारी विज्ञप्ति में पेंशनर नेता क्रमश: वीरेन्द्र नामदेव, पूरन सिंह पटेल, जे पी मिश्रा, सुरेश मिश्रा, अनिल गोल्हानी, आर जी बोहरे आदि ने कहा है छत्तीसगढ़ राज्य में सभी भुगतानकर्ता एजेंसी को भी इस तरह के प्रकरण पर ध्यान देने की जरूरत है। सभी स्तर पर राज्य सरकार को भी पेनशन भोगियो के हित में जरूरी निर्देश जारी करना चाहिए। ताकि पेंशन भोगी सेवानिवृत कर्मचारियों के साथ अन्याय न हो और उम्र के अंतिम पड़ाव में उनको मिलने वाली रकम में घोटाला होने पर रोक लगाई जा सके।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बिलासपुर (छ.ग.)

निविदा निरस्तीकरण सूचना जी क्रमांक (04011/2)

जिला बिलासपुर के विकासखण्ड बिल्हा के ग्राम गतौरी में डी.एम.एफ.टी. अंतर्गत पाईपलाईन विस्तार कार्य की ऑनलाईन आमंत्रित पंचम निविदा सूचना क्रमांक 23 दिनांक 06.10.2023 सिस्टम क्रमांक 149290 को प्रकाशन हेतु भेजा गया था, परंतु आचार संहिता प्रभावशील होने के कारण निविदा का प्रकाशन नहीं होने के कारण ऑनलाईन निविदा सूचना निरस्त किया जाता है।

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड
बिलासपुर (छ.ग.)

जी– 06241/1

कार्यालय जिला बाल संरक्षण अधिकारी, जिला– बिलासपुर (छ.ग.)

दावा– आपत्ति

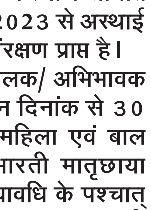

1 बच्चे का नाम – राहुल (संस्था द्वारा)
2 बच्चे का प्राप्ति दिनांक :– 24.05.2023
3 संस्था :– सेवा भारती मातृछाया बिलासपुर (छ.ग.)
4 रंग :– गोरा
5 उम्र :– 05 वर्ष लगभग

उक्त बालक दिनांक 24.05.2023 को बाल कल्याण समिति बिलासपुर के आदेश क्र./163 दिनांक 24.05.2023 से अस्थाई संरक्षण हेतु सेवा भारती मातृछाया बिलासपुर में संरक्षण प्राप्त है।

सर्व संबंधित को जो कि बालक के वैधानिक पालक/ अभिभावक होने का दावा आपत्ति दर्ज कराना चाहते हैं प्रकाशन दिनांक से 30 दिवस के भीतर जिला बाल संरक्षण अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग जिला बिलासपुर अथवा सेवा भारती मातृछाया बिलासपुर छ.ग. में दर्ज करा सकते हैं। उक्त समयावधि के पश्चात् प्राप्त दावा आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा तथा दत्तक ग्रहण की कार्यवाही की जावेगी।

यह विज्ञापन मेरे द्वारा जारी किया गया।

जिला बाल संरक्षण अधिकारी
मिशन वात्सल्य (मबावि)
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

जी– 06247/1

देश

उवाच

"हमारा गठबंधन भाजपा की तरह नहीं है, जहां केवल नरेंद्र मोदी और अमित शाह ही सारी सत्ता पर नियंत्रण रखते हैं। यह कहना कि राहुल गांधी दूल्हा हैं, ऐसा नहीं है। हमारा स्पष्ट मानना है कि लोकसभा चुनाव नतीजों के बाद प्रधानमंत्री चुना जाएगा।

-चितरंजन गगन, राजद के वरिष्ठ नेता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	25°	11°
मुंबई	25°	24°
कोलकाता	23°	16°
चेन्नई	28°	27°

चुनाव में हार से पार्टी के मोल-भाव की शक्ति कम नहीं होगी : कांग्रेस

- लोकसभा चुनावों में अभी भी भाजपा को चुनौती देने का भरा दम
- मप्र, छत्तीसगढ़ व राजस्थान में सबसे पुरानी पार्टी की है उपस्थिति

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। भले ही कांग्रेस हाल ही में तीन हिंदी भाषी राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव हार गई, लेकिन पार्टी नेताओं का कहना है कि इस हार ने इंडिया गठबंधन में 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए सबसे पुरानी पार्टी की संभावनाओं और मोल-भाव की शक्ति को कम नहीं किया है। नाम न छापने की शर्त पर पार्टी के एक वरिष्ठ नेता के मुताबिक, तीन राज्यों के नतीजे बेशक निराशाजनक हैं, लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि कांग्रेस का सफाया हो गया है। आगामी लोकसभा चुनावों में कांग्रेस अभी भी भाजपा के खिलाफ मुख्य ताकत बनी हुई है और सबसे पुरानी पार्टी की मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में उपस्थिति है, जहां क्षेत्रीय दलों की कोई पकड़ नहीं है। जब उन्हें याद दिलाया गया कि कांग्रेस उत्तर भारत में केवल हिमाचल प्रदेश में सत्ता में है और झारखंड तथा बिहार में वह क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ गठबंधन में है, तो पार्टी नेता ने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमें बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में गठबंधन में चुनाव लड़ना होगा क्योंकि राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल (यूनाइटेड), झारखंड मुक्ति मोर्चा और समाजवादी पार्टी जैसी क्षेत्रीय पार्टियां वहां मजबूत हैं। पार्टी के एक सूत्र ने भी नेता की भावनाओं से सहमति जताई और कहा, हमें जमीनी हकीकत को स्वीकार करना होगा कि इन राज्यों में क्षेत्रीय दल मजबूत हैं और कांग्रेस को उनका समर्थन हासिल करने की जरूरत है। हालांकि, सूत्रों ने बताया कि बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के बाद कांग्रेस की मौजूदगी बाकी सभी राज्यों में है और विशेष रूप से पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में यह भाजपा की मुख्य प्रतिद्वंद्वी है। सूत्रों ने कहा कि पार्टी उत्तर भारत में भाजपा के लिए सीधा खतरा पेश करती है और वह उसे चुनौती जरूर देगी।

सूत्रों ने कहा कि जब इंडिया गठबंधन में राज्यों के लिए सीट बंटवारे की बातचीत शुरू होगी, तो हालिया विधानसभा चुनावों के नतीजों का सबसे पुरानी पार्टी के मोल-भाव की शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इस बीच, पार्टी के एक अन्य नेता ने कहा कि पिछले कुछ महीनों में खराब संबंधों को देखते हुए आप और समाजवादी पार्टी से निपटना आसान नहीं होगा। इंडिया ब्लॉक की 14 सदस्यीय समन्वय समिति में कांग्रेस के केसी वेणुगोपाल, एनसीपी के शरद पवार, डीएमके के टीआर बालू, झामुमो के हेमंत सोरेन, शिवसेना के संजय राउत, राजद के तेजस्वी यादव, तृणमूल कांग्रेस के अभिषेक बनर्जी, आप के राघव चड्ढा, समाजवादी पार्टी के जावेद अली खान, जेडीयू के ललन सिंह, सीपीआई के डी. राजा, नेशनल कॉन्फ्रेंस के उमर अब्दुल्ला और पीडीपी की महबूबा मुफ्ती शामिल हैं। सीपीआई (एम) कमेटी के लिए अपनी पार्टी के नेता का नाम बाद में देगी।

सीट बंटवारे पर गठबंधन सहयोगियों के बीच चर्चा शीघ्र

पार्टी नेता ने आगे कहा कि सीट बंटवारे पर बातचीत के दौरान गठबंधन सहयोगियों के बीच सभी मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। बुधवार शाम को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इंडिया गठबंधन फ्लोर नेताओं के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की थी और 2024 की रणनीति तैयार करने तथा सीट बंटवारे के लिए बातचीत शुरू करने के लिए दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में गठबंधन की अगली बैठक बुलाने का निर्णय लिया। 31 अगस्त और 1 सितम्बर को मुंबई में इंडिया गठबंधन की तीसरी बैठक के बाद, घोषणा की गई थी कि वह 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा से मुकाबला करने के लिए 14 सदस्यीय समन्वय समिति और 19 सदस्यीय चुनाव रणनीति समिति बनाएगी।

मोदी ने किसान निजामा से की बातचीत

गांधीनगर, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के भरूच के वीबीएसवाई लाभार्थी, आईटीआई-प्रमाणित किसान अल्पेशभाई चंदूभाई निजामा के साथ शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बातचीत की। मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए विकसित भारत संकल्प यात्रा (वीबीएसवाई) के लाभार्थियों से बातचीत के दौरान आईटीआई-प्रमाणित किसान और हार्डवेयर इंजीनियरिंग में डिप्लोमा धारक गुजरात में भरूच के वीबीएसवाई लाभार्थी निजामा से परस्पर बातचीत के बाद कृषि क्षेत्र में शामिल होने के उनके निर्णय के बारे में पूछा। निजामा ने उत्तर दिया कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ने और 40 एकड़ की अपनी पैतृक भूमि पर किसान बनने का निर्णय लिया। उन्होंने राज्य और केंद्र सरकार दोनों द्वारा प्रदत्त लाभों का उपयोग किया जहां उन्होंने रियायती कीमतों पर कृषि उपकरण खरीदे। उन्होंने ड्रिप सिंचाई तकनीक में तीन लाख रुपए की सब्सिडी का लाभ उठाया। मोदी ने कहा कि आपकी उम्र में मुझे नहीं पता था कि लाख रुपए कैसे दिखते हैं और आप लाखों के बारे में बात कर रहे हो। उन्होंने निजामा को प्राप्त सब्सिडी पर संतोष व्यक्त किया और उनसे अपने साथी किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों और आधुनिक उपकरणों के बारे में सलाह देने का भी आग्रह किया। निजामा ने 2008 से एटीएमए परियोजनाओं के साथ अपने जुड़ाव के बारे में बात की, जहां उन्होंने अन्य क्षेत्रों और राज्यों की कृषि तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

युवाओं के सहयोग से झारखंड की बदलेंगे तकदीर : हेमंत सोरेन

- देवघर के गौरीपुर पंचायत में आयोजित कार्यक्रम को किया संबोधित

रांची, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि राज्य वर्ष 2025 तक एक ताकतवर प्रदेश बनाएंगे। मुख्यमंत्री सोरेन ने देवघर जिले के गौरीपुर पंचायत में आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार के चल रहे तीसरे चरण में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए युवाओं से कहा झारखंड एक युवा राज्य है। ऐसे में आपके सहयोग से झारखंड की तकदीर और तस्वीर बदल सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कोई पहला मौका नहीं है, जब यह सरकार गांव-गांव पंचायत-पंचायत पहुंच रही है। बल्कि वर्ष 2021 और 2022 के बाद लगातार तीसरी बार इस वर्ष आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। इस कार्यक्रम के तहत मैं भी कई शिविरों में शामिल हो रहा हूं और यह देखने का प्रयास कर रहा हूं कि लोगों को सरकार की योजनाओं और सेवाओं का लाभ किस तरीके से मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड अलग राज्य का 23 वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं। लेकिन, इस दौरान अधिकारीकर आपके गांव नहीं गए। क्षेत्र का भ्रमण नहीं किया। वे आज योजनाओं की गठरी लेकर आपके दरवाजे पर आ रहे हैं। आपको सिर्फ इतना करना है कि इस गठरी से अपनी जरूरत की योजनाओं को चुनें और अपने घर के अंदर ले जाएं तथा खुद को सशक्त बनाने के साथ राज्य के विकास में भागीदार बने। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 में हमारी सरकार वजूद में आई तो उसके कुछ ही महीने बाद कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। सारी व्यवस्थाएं ठप हो गई ।

शिविरों में लोगों के जुड़ने पर जताई खुशी

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि मुझे खुशी है कि सभी शिविरों में बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं और अपनी जरूरत की योजनाओं से जुड़ रहे हैं। सोरेन ने कहा कि पंचायतों में लग रहे शिविरों के सकारात्मक और सुखद परिणाम सामने आ रहे हैं। विभिन्न माध्यमों से जन सेवा करना ही राज्य सरकार का लक्ष्य है। उनकी समस्याओं का समाधान करना है और उन्हें सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के साथ इसका लाभ भी प्रदान करना है।

सार संक्षेप

तेलंगाना कांग्रेस ने मनाया सोनिया का जन्मदिन

हैदराबाद। तेलंगाना कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने शनिवार को यहां गांधी भवन में संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी का 77वां जन्मदिन भव्य तरीके से मनाया। मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद पहली बार पार्टी कार्यालय पहुंचे मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रेवंत रेड्डी ने इस अवसर पर अपने पूर्ववर्ती अध्यक्ष वी हनुमंत राव के साथ 78 किलोग्राम का केक काटा। रेड्डी ने इस मौके पर कहा कि पृथक तेलंगाना राज्य की घोषणा नौ दिसम्बर-29 को सोनिया गांधी के जन्मदिन पर की गई थी।

जम्मू-कश्मीर के तापमान में गिरावट, शीत लहर जारी

श्रीनगर। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में तापमान शून्य से 4.6 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया, जिससे पूरी घाटी में शीत लहर जारी है। दक्षिण कश्मीर का शोपियां कश्मीर में सबसे ठंडा स्थान रहा, यहां तापमान शून्य से 5.9 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया। श्रीनगर में न्यूनतम तापमान शून्य से 4.6 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया, जबकि पिछली रात यह शून्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस नीचे था। दक्षिण कश्मीर के पर्यटन स्थल पहलगाम में रात का तापमान शून्य से 5. डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया।

मऊ दीवार हादसे में मरने वालों की संख्या हुई सात

मऊ। उत्तर प्रदेश में मऊ जनपद के घोसी कोतवाली क्षेत्र में दीवार गिरने के कारण हुए हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़कर सात हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिवार को 2 लाख व घायलों को 5 हजार रुपए की सहायता राशि जारी किए जाने की घोषणा की। एक वैवाहिक कार्यक्रम के हल्दी रसम में शुक्रवार की शाम शामिल होने जा रही महिलाओं के ऊपर दीवार गिरने से महिलाएं वह बच्चे दीवाल के नीचे दब गए थे। इस दर्दनाक हादसे में अब तक सात लोगों की मौत हो चुकी है।

अखिल भारतीय लेखा सम्मेलन शुरू

तिरुवनंतपुरम। केरल के प्रधान महालेखाकार बीजू जैकब ने करियावट्टोम परिसर में शनिवार को लेखांकन शिक्षा व अनुसंधान पर दो दिवसीय 45वें अखिल भारतीय लेखा सम्मेलन और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। डॉ. जैकब ने कहा कि उन्होंने लेखांकन को एक बेहद सकारात्मक पेशे के रूप में रेखांकित किया, जहां व्यक्तियों और राष्ट्रों की समृद्धि आपस में जुड़ी हुई है व एकाउंटेंट के लिए खुशी लाती है क्योंकि वे धन और सफलता में योगदान करते हैं।

दिव्यांगजन को सहानुभूति नहीं चाहिए : धनखड़

दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने पर दिया जोर

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि दिव्यांगजनों को सहानुभूति का पात्र नहीं बल्कि उन्हें उनके ज्ञान, योग्यता, झुकाव और विशेषज्ञता के लिए मान्यता का पात्र माना जाना चाहिए। धनखड़ ने कहा कि एक ऐसा इको-सिस्टम बनाने की आवश्यकता है जिससे हम अपने दिव्यांग जनों को सशक्त बना सकें जिनके पास अपार प्रतिभा है। विकलांगता मानसिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक चुनौतियों के दायरे तक फैली हुई है। गुरुग्राम में विकलांगता पर 10 वें राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने उन सामाजिक धारणाओं में आए बदलाव का उल्लेख किया और कहा कि जो लोग बाहरी तौर पर शारीरिक रूप से सक्षम दिखते हैं उनमें किसी न किसी प्रकार की विकलांगता हो सकती है। उन्होंने प्रमुख कॉर्पोरेट संस्थाओं से अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) फंड को समाज के इन वर्गों को सशक्त बनाने के लिए देने का आग्रह किया।

अनुच्छेद 370 पर शीर्ष अदालत के निर्णय से पहले बोले उमर

जम्मू-कश्मीर के लोगों के पक्ष में फैसला आने की उम्मीद

कश्मीर के राजनेताओं को नजरबंद कर सकती है सरकार : उमर अब्दुल्ला

श्रीनगर, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को कहा कि वह केवल आशा और प्रार्थना कर सकते हैं कि अनुच्छेद 370 याचिकाओं पर उच्चतम न्यायालय का फैसला जम्मू-कश्मीर के लोगों के पक्ष में होगा। उमर ने कहा कि ऐसा कोई नहीं है जो अधिकार के साथ कह सके कि सोमवार को क्या होना है। उमर ने कुलगाम में पार्टी के एक सम्मेलन के बाद संवाददाताओं से कहा, मेरे पास ऐसा कोई तंत्र या तरीका नहीं है जिससे मुझे आज यह पता चल सके कि पांच माननीय न्यायाधीशों के मन में क्या है, या उन्होंने फैसले में क्या लिखा है। मैं केवल आशा और प्रार्थना कर सकता हूं कि निर्णय हमारे पक्ष में हो, लेकिन, मैं न तो यह दावा कर सकता हूं कि सफलता हमें मिलेगी और न ही कोई और बता सकता है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष ने कहा कि वे फैसले का इंतजार कर रहे हैं और इसे आने दीजिए। उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद भविष्य की कार्रवाई के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, हम निर्णय आने के बाद प्रतिक्रिया देंगे। पूर्व मुख्यमंत्री ने आशंका व्यक्त कि शीर्ष अदालत के निर्णय से पहले सरकार कश्मीर के राजनेताओं को नजरबंद कर सकती है। उन्होंने कहा कि हमें नजरबंद करने का उन्हें बहाना चाहिए और उनके पास एक बहाना है। जैसा कि हम नहीं जानते कि निर्णय क्या होगा, वे भी नहीं जानते हैं और अगर वे जानते हैं तो इसी जांच होनी चाहिए। इससे पहले रैली में अब्दुल्ला ने कहा कि 11 दिसम्बर को संग्रामा बारामूला में पार्टी के एक सम्मेलन की योजना थी और अधिकारियों ने शुक्रवार शाम उन्हें सूचित किया कि कार्यक्रम के लिए दी गई अनुमति वापस ले ली गई है। उन्होंने कहा कि सोमवार को संग्रामा में हमारा एक कार्यक्रम होने वाला था। हम एक-दूसरे से चर्चा कर रहे थे कि क्या हमें कार्यक्रम को आगे बढ़ना चाहिए और इस बीच हमें सरकार से एक पत्र मिला जिसमें कहा गया कि उन्होंने कार्यक्रम की अनुमति रद्द कर दी है। उन्होंने यह भी नहीं बताया कि अनुमति क्यों रद्द की गई। उन्हें किस बात का डर है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी के सहयोगियों से कहा गया है कि उन्हें सोमवार को अपने घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं दी जाएगी। गौरतलब है कि मुख्य न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ पांच अगस्त, 2019 की केंद्र सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के निर्णय पर सोमवार को फैसला सुनाएगी, जिसके माध्यम से जम्मू-कश्मीर के संवैधानिक प्रावधान को समाप्त कर दिया गया था।

संविधान पीठ कल सुनाएगी फैसला

सुप्रीम कोर्ट की ऑनलाइन कार्य सूची में 11 दिसम्बर को अनुच्छेद 37 हटाने से जुड़े मामले को सूचीबद्ध किया गया है। देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ अपना फैसला सुनाएगी। इससे पहले गत शुक्रवार को कश्मीर घाटी में पुलिस और प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक कर कानून एवं व्यवस्था की समीक्षा की। बैठक में सभी दस जिलों के उपायुक्तों व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों को किसी भी शरारत या सोशल मीडिया के दुरुपयोग में लिप्त पाए जाने वाले व्यक्ति के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने के लिए कहा गया है।

सरकार ने महिलाओं को सशक्त बनाया : राजनाथ

फिक्की की वार्षिक आम बैठक को किया संबोधित

नई दिल्ली, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बताया कि आर्थिक विकास लिंग तटस्थ होना चाहिए। सरकार ने पहले की उस कहानी को सफलतापूर्वक बदल दिया है जिसमें अर्थव्यवस्था के विकास का श्रेय अकेले पुरुषों के योगदान को दिया जाता था। शीर्ष व्यापार मंडल फिक्की की 96वीं वार्षिक आम बैठक और सम्मेलन को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाना हमारी प्राथमिकता रही है। हमने यह सुनिश्चित किया है कि भारत का आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विकास न केवल पुरुषों के बल पर हो, बल्कि नारी शक्ति के आधार पर भी हो। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा उठाए गए कदमों को गिनाते हुए सिंह ने कहा कि लड़कियां अब सैनिक स्कूलों में पढ़ रही हैं, जबकि महिला अधिकारियों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

अब महिलाओं को लड़ाकू पायलट के रूप में नियुक्त किया जा रहा है, युद्धपोतों पर तैनात किया जा रहा है और सीमा पार अग्रिम चौकियों पर तैनात किया जा रहा है। इसके अलावा, अग्निपथ योजना के माध्यम से बड़ी संख्या में युवा लड़कियां सशस्त्र बलों में शामिल हो रही हैं। मंत्री ने कहा कि भारत एक वैश्विक विकास इंजन के रूप में उभरा है और दुनिया को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय विकास की कहानी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में एक अरब से अधिक भारतीयों की कड़ी मेहनत और क्षमता का परिणाम है।

हमने हरित विकास का रास्ता चुना

राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत ने प्रतिबद्धता जताई है कि उसका विकास पर्यावरणीय क्षरण की कीमत पर नहीं होगा। हमने हरित विकास का रास्ता चुना है। हमने पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किये। हमने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन बनाया है। हमने स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए पहल की है। हमने जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता भी कम कर दी है।

मराठवाड़ा में सूखे की निगरानी करेंगी केंद्रीय टीम

छत्रपति संभाजीनगर, 9 दिसबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र सहित राज्य के प्रभावित हिस्सों में केन्द्रीय टीमें सूखे की निगरानी के लिए जाएंगी। राजस्व एवं वन विभाग और राहत एवं पुनर्वास सूत्रों के शनिवार को यह जानकारी दी। सूत्रों के अनुसार, संयुक्त सचिव प्रिया राजन के नेतृत्व में चार टीमों का गठन किया गया है। उनके नेतृत्व में केंद्रीय कृषि मंत्रालय की 12 सदस्यीय टीम राज्य में सूखे और खरीफ नुकसान की समीक्षा करने के लिए मराठवाड़ा के विभिन्न जिलों का दौरा करेगी। केंद्रीय टीम 13 और 14 दिसम्बर को मराठवाड़ा के चार जिलों का निरीक्षण करेंगी। यह टीम छत्रपति संभाजी नगर, जालना, बीड और धाराशिव जिलों के कुछ तालुकों और गांवों का दौरा करेगी।

साथ ही निरीक्षण के बाद टीम 15 दिसम्बर को पुणे में बैठक करेगी और केंद्र सरकार को रिपोर्ट सौंपेगी। मराठवाड़ा में इस साल अपेक्षित बारिश नहीं होने से सभी आठ जिलों के कई हिस्सों में सूखे जैसे हालात बने हुए हैं। इससे किसानों को भारी परेशानी हो रही है।

बिहार के टॉपर्स घोटालेबाज के आवास पर ईडी ने की छापेमारी

पटना, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शनिवार को बिहार के टॉपर्स घोटालेबाज अमित कुमार उर्फ बच्चा यादव के आवास और एक कॉलेज भवन पर छापेमारी की। ईडी अधिकारियों ने किरतपुर राजाराम में आरोपी के आवास और भगवानपुर ब्लॉक में भी तलाशी ली, जहां आरोपी ने कॉलेज का निर्माण किया है। 2016 में, अमित कुमार बिहार टॉपर घोटाले में शामिल थे, जब उम्मीदवारों ने जाली दस्तावेजों के साथ विभिन्न परीक्षाएं पास की थीं।

उन पर ईडी द्वारा जब्त की गई जमीनों पर इमारतें बनाने का भी आरोप है। ईडी के अधिकारियों ने कहा कि उन्होंने आरोपियों के पास से कई दस्तावेज जब्त किए हैं। इससे पहले ईडी ने भगवानपुर में 42 डिसमिल जमीन (18293.52 वर्ग फुट) जब्त की थी और साथ ही एक बोर्ड भी लगाया था। इसके बावजूद अमित कुमार ने जमीन पर निर्माण शुरू कर दिया। किरतपुर मौजा में अमित के पिता राजदेव राय के नाम पर 42 डिसमिल जमीन दर्ज थी। ईडी ने 15 अक्टूबर 2018 को मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत संपत्ति जब्त कर ली थी।

ईडी के अतिरिक्त निदेशक राजीव रंजन ने 18 नवंबर को पटना पुलिस और वैशाली के जिला मजिस्ट्रेट को भी सूचित करते हुए भगवानपुर थाने में एफआईआर दर्ज करायी थी। भगवानपुर के थाना प्रभारी परमहंस कुमार ने कहा, हमें ईडी से एक आवेदन प्राप्त हुआ है और तदनुसार जमीन के वेरिफिकेशन के बाद अमित कुमार के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है, जहां उन्होंने अवैध रूप से इमारत का निर्माण किया था। जांच चल रही है।

चिंता *कश्मीर में एक बार फिर मानक संचालन प्रक्रिया चर्चा में*

सुरक्षाबलों को ही भुगतना पड़ा है लापरवाही का खामियाजा

■ सुरेश एस डुग्गर

जम्मू, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। करीब 39 दिनों के उपरांत जिस पुलिस अधिकारी को डाक्टरों ने सिर में गोली लगने के कारण मृत घोषित कर दिया उसकी मृत्यु के उपरांत कश्मीर में एक बार फिर एसओपी अर्थात मानक संचालन प्रक्रिया चर्चा में है। यह चर्चा में इसलिए है क्योंकि पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने फिर दोहराया है।

कि पुलिस को एसओपी का सख्ती से पालन करना होगा। पर यह एक कड़वी सच्चाई है कि कश्मीर में पुलिस पर हुए प्रत्येक आतंकी हमले के उपरांत ऐसे दिशा निर्देशों को हमेशा ही नजरअंदाज किया जाता रहा है। ज्यादा पुरानी बात न करें तो भी 13 दिसम्बर 2021 को आतंकियों ने श्रीनगर के जेवान चौक में एक उस पुलिस बस पर हमला बोल कर तीन पुलिसवालों को मार डाला था जो बिना किसी सुरक्षा कवच के अपनी ड्यूटी निभा कर वापस आ रही थी। इस हमले के उपरांत जब बहुत हो हल्ला मचा तो यह फैसला लिया गया था कि भविष्य में पुलिसकर्मियों को बुलेट प्रूफ वाहन मुहैया करवाने के अतिरिक्त उन्हें एस्कार्ट भी दिए जाएंगें। और इस साल 31 अक्टूबर को आतंकियों ने एक पुलिसकर्मी गुलाम मुहम्मद डार को पटन में उस समय गोली मार कर मार डाला जब वह अपने घर आया हुआ था। ऐसे कई मामले हैं जिसमें छुट्टी पर घर आए पुलिसकर्मियों पर आतंकियों ने हमले कर मार डाला था। और प्रत्येक ऐसी घटना के लिए एसओपी का पालन न करने की बात कही गई और फिर से दोहराया गया कि सभी को एसओपी का सख्ती से पालन करना होगा।

- हवा में उड़ते रहे हैं एसओपी पालन के दिशा निर्देश

जिस पुलिस इंस्पेक्टर मसरूर वानी को श्रीनगर के खेल मैदान में गोली मार दी गई थी उसके प्रति अब वरिष्ठ पुलिस अधिकारी दावा करते थे कि उन पर हमला किए जाने के इनपुट थे लेकिन मानक संचालन प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया था जो एक भारी भूल थी। ऐसे ही एसओपी की अनदेखी 14 फरवरी 2019 को पुलवामा हमले के दौरान भी सामने आई थी जब केरिपुब के 47 से अधिक जवान कश्मीर में आज तक के हुए सबसे भयानक विस्फोट में मारे गए थे। यह एक कड़वी सच्चाई है कि कश्मीर में 36 सालों से फैले हुए पाक समर्थित आतंकवाद के दौर में न जाने कितनी बार मानक संचालन प्रक्रिया का पालन करने के निर्देश निकाले गए होंगें और कितनी बार उनकी अनदेखी की गई होगी, इसका कोई रिकार्ड ही नहीं है। लेकिन इतना जरूर था कि हर बार ऐसी कथित लापरवाही का खिमयाजा सुरक्षाबलों को ही भुगतना पड़ा है। देश के सम्मान, एकता और अखंडता और ऐसी अन्य चीजों की रक्षा करने वाले सैनिकों को सशस्त्र बल विशेष अधिकार अधिनियम और वास्तविक सैन्य कब्जे के पूरे तंत्र के बारे में शहर के सवालों का जवाब देने के बजाय गोली मारकर हत्या करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

हाना

दूसर ला सिखौना देय, अपन बैठ के लौनिया लेय।
दूसर ल सिखौना देथे के घाम में बइठे ले तबियत खराब हो जाथे अउ उही काम ल अपन करथे तब ये हाना ल केहे जाथे।

शब्द अरथ

1. चौंरी- छोटा चबूतरा
2. चौंसेला- चाउर पिसान के सोंहारी
3. चौकोनियां-चतुष्कोण, चार कोने वाला
4. चौंखूटिया- चौकोना
5. चौखंडा- चार खंडों का
6. चौखट- चार लकड़ियों का वह ढांचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगाए जाते हैं
7. चौखना- लाल रंग गमछा
8. चौतरा- चबूतरा
9. चौथिया- विवाहोपरांत कन्या को प्रथम बार वापस लाने के लिए जाने वाली बरात।'देपइली'।
10. चौमसिया- चार मासे का बाट।

बारिश अउ धान

हर बछर फसल बहुत बढ़िया होवत हावय। अकाल.के छाया घलो नइ परय। बढ़िया देवारी के.समय म धान कटाई शुरु होथे। ओखर बाद मिंजाई होथे। आजकल तो मशीन म धान कटाई होवत हावय फेर देशी सुगंधित धान ल हाथ में ही काटे जाथे। कमतर किसान मन अपन हाथ म धान के कटाई मिंजाई कर लेथें। जेन मशीन म करिस तेखर धान ह बोरा म भरा जथे फेर बियारा म या खेत म रखाये रहिथे।

बरसात के बादर ह तो बिदा हो जथे फेर कोनो न कोनो डाहर ले तूफान आ जथे अउ पानी बरसे ले लग जथे। देवारी म खेत म कटाये धान ह भींज जथे या फेर खेत म पूरा पानी भर जथे। धान म जरइ आ जथे। सालभर के मेहनत खराब हो जथे। किसान कर्ज म बूड़ जथे। एकादशी तक ओखर बाद तक धान ह बियारा म आथे या फेर बोरी मन म भरा के रखा जथे। अतेक धान ल जब तक नइ बेचावय तब तक बाहिर ही रखे बर परथे। धीरे-धीरे धान मंडी ले बेचावत जाथे। मंडी म खुला धान रखाये रहिथे।

अब हर बछर के नियम बनगे हावय पानी गिरना। कई टन धान के बरबादी। मंडी के धान भी खुला रखाये रहिथे वहू ह भींज जथे जरइ आ जथे अउ सड़ जथे। एखर एके इलाज हावय धान ल ऊंच जगह म रखे जाये। एखर बर चबूतरा बनाये जाये। दूसर एला ढके जाये। ढके बर बड़े-बड़े तालपत्री रखे जाये।

हर बछर के नुकसान ह बंद हो जही। फेर खर्चा तो एक बेर करे बर ही परही। किसान ह ये बात ल समझय काबर.नहीं। हर बछर अपन नुकसान कराथे। जतका नुकसान होथे ओतका म तो तालपत्री आ सकथे। मंडी म चबूतरा बनाये के काम ल पंचायत ह कर सकथे। पूरा गांव ल एक बछर सोच के ये सब के इंतजाम कर लेवय त हर बछर के नुकसान ले बांच जही।

बादर ये सब ल देखके मुंह बिचका के अइसने भाग जही। चबूतरा म रखे धान तालपत्री म ढकाये रहिही तब पूरा सुरक्षित रहिही। किसान भाई मन ल चबूतरा अउ तालपत्री बर सोचना चाही।

सुधा वर्मा

बिगड़े झन लोक गीत-संगीत : जयंती यादव

छत्तीसगढ़ के हर खास-आम के जुबान म जिंखर गाए गीत ह रचे बसे हे तेमा जयंती यादव के नाम ह अव्वल हे। नानपन ले गरीबी म गुजरे जयंती अउ ओखर खानदान ह छत्तीसगढ़ी गीत बर बड़ मया दया राखिस हे। ओखर बेटी अन्नपूर्णा ह खानदानी गुन ल आघु लेगे म लगे हे।

पचास बछर ले ऊपर होगे जयंती जी के गायकी के बानगी ह सुनोईया के कान ले सीधा हिरदे म उतर जाथे। मया-दया,धरम- करम,लोक जीवन के गीत उंखर अवाज म अइसे छनके निकलथे जइसे अमरईया म कोयली के कुक हर आथे। इही पाए के छत्तीसगढ़ शासन ह जयंती जी ल बछर 2022 म कला जगत के सबले बड़का पुरस्कार दाऊ मंदराजी दीस।

कलागढ़ दुर्ग म जयंती जी अपन जिनगी के सुरता के संदूक ल रंगमंच दिन म खोलत बताईन-धार्मिक नगरी डोंगरगढ़ के तीर पथरी गांव म बछर 1953 मोर जनम होय रहिस। मोर ददा समय लाल अउ दाई कारी मरकाम ह नाचे गाए म माहिर रहीस। परिवार के खर्चा ह नाचे-गाए ले होए आमदनी के भरोसा चलय। ददा ढोलक बजाए में जुन्ना फिल्मी गीत गावत नाचवं।

पथरी गांव म गरीब के गोदरी म पलत गायकी के पूछ परख कइसे बाढ़िस? पूछे म ओमन बताइन- मोर भीतर के जनम जात गुन ल रवेली (राजनांदगांव) के मालगुजार दाऊ दुलार सिंग मंदराजी के पारखी आंखी ह सबले पहिली चिनहीस। ओहर छत्तीसगढ़ी नाचा रवेली साज पार्टी चलावत रहिस। मोर ददा ले ओहर मोला बेटी कस मांग लीस। मोर ददा ल टीबी के बीमारी रहिस। ओखर मुंहू ले लहू आए लागय। एला देखके दाऊ जी हर इलाज, घर खर्चा सहित मोर कला ल बड़े मंच देहे के वादा करीस तब मोर ददा ह राजी होगे। दाऊ जी हर मोला बेटी कस अपन घर म राख के हीरा तराशे बर जौहरी कस काम करीस।

थोरिक सोंचत जयंती जी बोलिन-एक दिन दाऊजी मोला बोलिस ,बेटी नचई के दुनिया चार दिन के होथे फेर गायक-गायिका मन के पहचान ह अमिट होथे। जनमन के हिरदे म तोर गायकी ह जल्दी पहिचान बनाही। दाऊ जी के ए बात ल धरके ओखरे गुरूवाई म गायन के दुनिया म समा गेवं। मोर गायकी के डंका बाजे लागिस। दाऊ जी के संगे संग मोला मदन निषाद, गोविंदराम, बाबूदास भुलवाराम, लालूराम, गणेश यादव, फिदा बाई, माला बाई, राधा बाई असन खांटी कलाकार मनके संगत मिलगे।

राज्य अंलकृत गायिका जयंती संग विजय मिश्रा के गोठबात

गोठ -बात ल बढ़ावत में ह बोलेवं- जिनगी भर सुरता राखे लाईक कोनो कार्यक्रम के बारे म कांहि बतावव न । तब हांसत उन बोलिन -विजय भईया, बछर सत्तर के बात आए। रायपुर म हमर कार्यक्रम चलीस त टिकट लेके देखोईया के भीड़ ह मेला मड़ई कस उमड़े। सिनेमा हॉल म तको माछी झूमे के नौबत आ जावय। अइसन बेरा म नामी नाट्य निर्देशक हबीब तनवीर हमर कला ल देख के अपन संग म दिल्ली ले गीस। ओखर निर्देशन म हमन चोर चरनदास, मोर नाव दमाद गांव के नाव ससुरार, आगरा बाज़ार, नाटक ल खेलेन।

गायन कला के रद्दा म बड़े राहगीर कोन-कोन मिलीन पूछेंवं त बताइन कि- मोहम्मद रफी, सुमन कल्याणपुर, लता मंगेश्कर, राजब्बर, स्मिता पाटिल, मनु नायक, मलय चक्रवर्ती कस कलागुरू के मया दुलार मिलिस अउ छत्तीसगढ़ म सांस्कृतिक क्रांति जगोईया दाऊ रामचंद्र देशमुख के चंदैनी गोंदा, दाऊ महासिंह चंद्राकर के सोनहा बिहान, केदार यादव के नवा बिहान,अउ खुद के संस्था आमा मंउर के मंच म गाए मोर कतको गीत के रिकार्ड बनीस। जेमा कि -तें अरझे कहां परबुधिया रे, देखे देवर बाबू तोर भइया के चाल, अंचरा ल रो-रो भिजोंवत हंव, जिनगी पहाड़ होगे रे, आते जाते रहिबे रे छैला बाबू मोर गांव कस गीत मन ह आजो धूम मचावत हे।

जिनगी म आए बदलाव के का कथा हे जयंती जी कहेवं त बताइन- कला यात्रा म बाढ़त मोला गणेश यादव उर्फ गन्नू जी ह जीवन साथी के रूप म मिलीस। तबला-ढोलक वादन अउ छत्तीसगढ़ी गीत ल संगीतबद्ध करे म ओखर मास्टरी रहिस। बिहाव के पहली एक घवं हमन सब कलाकार डोंगा म चढ़के नदिया नाहकत रहेन। तभे डोंगा ह टूटगे। अइसन बिपत के बेरा म गन्नु जी ह मोला बूड़े ले बंचाईस। ओ बेरा हमर दूनों के दिल ले अवाज निकलीस 'तें मोला बांध ले में तोला बांध लेहूं...'। एखर पाछू जयंती मरकाम ले मेहर जयंती यादव बन गेवं।

आज दुनिया म मोर गुरुपति ह नई हे कहत जयंती जी के आंखी डबडबागे। तब भरभराए अवाज म गन्नू जी के संगीतबद्ध, बद्रीविशाल परमानंद जी के लिखे गीत ल गुनगुनाए लागीन- 'चोला चूरत रहिगे, जिनगी घूरत रहिगे, सुरता के सपना म, माड़े मूरत रहिगे'...। जयंती जी के बेजोड़ गायिकी ल सुनके अचंभित होगे रहेवं। पछत्तर बछर ले ऊपर पार उमर म तको ऊंखर गायकी के मुकाबला करोईया छत्तीसगढ़ म दिखे नहीं। मोर आघू म कई ठिन गीत गावत, हाव भाव के संग अंगरी ल नचावत जयंती जी के चेहरा म थोरको थकान नी झलकीस।

जेला देख के ताली बजावत में हर सवाल करेवं- आप ल थकासी नी लागय? तब खिलखिला के हांसत ओमन बोलिन - कलाकार के जिनगी म अराम कहां विजय बाबू। संगीत हर तो अइसे ओखद आए जेहर तन मन ल ताजा बनाके राखथे। गावत नाचत बजावत कहूं कोनो कलाकार थकते त तय मानो कि ओखर भीतर कलाकारी भोथरा गिस हे। रात-रात भर हमन बिना थके नाचन गावन। तब हमर ताजगी के दीवाना मन के ताली थमबे नी करय। विदेशी मन ह बधाई देवत मोर गाल चीमट लेवयं। अइसन मया पाना ईमानदार कलाकार के सबले बड़े कमाई आए।

बेहद सरल स्वभाव के जयंती अपन जिनगी के एक ठिन अउ मजेदार बात बताईन कि नानपन ले मोला सजना-संवरना रत्ती भर भावत नी रहिस। संगीत ले सजे मोर तन मन सदा सुंदर हे। कलाकार के हुनर हर ही ओला आम ले खास बनाथे। बिचार करे लायक बात हे कि दरपन के आघू म संवरना सब चाहथें, फेर दरपन कस साफ दिल कोनो-कोनो राखथें। अइसन साफ दिल के जयंती जी के 'बाडी लेंग्वेज' हर बतावत रहीस-

ठूंठ हो चुकी हूं,पर बेजान मत समझना।
लोकगीत संगीत के लहू मेरी रगों में आज भी बहते हैं।।

जिनगी के कोनो पीरा हे जेहर रोज पेरत होही पूछेवं त आंखी ले आगी उगलत बोलिन -मोला अपन जिनगी ले जादा जमाना ले शिकायत हे। छल कपट करके मोरे गाए गीत ल गाके, रिकॉर्ड करके लोगन नाम, दाम अउ ईनाम पा गिन। अइसन टांग खिचोंईया मन के नाम ल बताहूं त अपन बड़प्पन ल गवां देहूं। फेर अतका जान लेवव कि मोला गिरोईया मोर अतका अपन रहिन कि संभले बर तको मेहर उही मन के उपर भरोसा करेवं।

नवा पीढ़ी बर संदेसा देवत बोलिन- सीखे के ललक जिनगी भर बनाए राखें, लोकरीति -रिवाज द सतही करके कभू झन बिगाड़व। अइसन सुग्घर गोठ बात करके उठेवं तभे बहुरानी ह चाय लानिस। चाय पीयत गुनेवं-

'पुराने लोग नया हौसला देंगे, बुजुर्गों से मिलते रहें वे दुआ देंगे।'

विजय मिश्रा 'अमित' हिंदी -लोकनाट्य निर्देशक, सुंदर नगर,रायपुर

मील के पथरा बनही महाकाव्य श्री सीताराम चरित

प्रभु श्रीराम के जीवन गाथा ला सबले पहिली आदिकवि बाल्मीकि संस्कृत म लिखिन। 16 वीं सदी मा महाकवि तुलसीदास जी रामचरित मानस ला अवधी मा लिख के जन-जन म लोकप्रिय कर दिन। येकर अलावा सैंकड़ों के संख्या मा कई भाषा म रामायण लिखे गिस। छत्तीसगढ़ी भाषा म घलो ये उदिम होइस। छत्तीसगढ़ी भाखा म कपिलनाथ कश्यप सहित कुछ अऊ लेखक मन के रामायण आ चुके हावय फेर वोमा छन्द के अभाव रहिस। परंतु बादल जी के महाकाव्य पूर्णत: छन्दबद्ध अउ व्याकरण के दृष्टिकोण ले पूर्णत: परिमार्जित हवय।

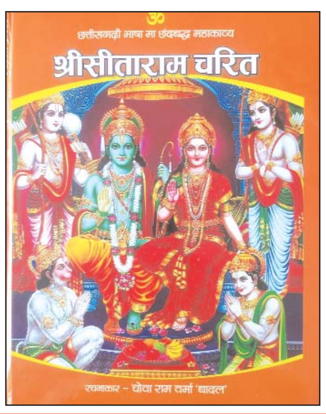

ये महाकाव्य म कुल 9 सर्ग (पूजा के फूल) हवय जेमा श्रीराम जन्म से लेके रावण के वध अउ श्रीराम के राज्याभिषेक तक के संपूर्ण घटना के चित्रण हवय। महाकाव्य के आधार छंद दोहा अउ चौपाई हवय। कुल 98 प्रकार के छन्द के प्रयोग ये महाकाव्य मा होय हवय। मानस मर्मज्ञ बादल जी के अथक मेहनत अउ भागीरथ प्रयास ये महाकाव्य मा साफ दिखाई देथे। महाकाव्य के शुरुवात गणपति वंदना से होथे। तदुपरांत श्रीराम, हनुमान, माता सरस्वती, भोलेनाथ आदि शक्ति मां दुर्गा,अउ गोस्वामी तुलसीदास जी के वंदना हवय। महाकाव्य मा रामायण के संपूर्ण घटनाक्रम के चित्रण करत श्रीराम के राज्याभिषेक के संग महाकाव्य के समापन करे हवय। मर्मस्पर्शी चित्रण होय के कारण पाठक शुरू ले अंत तक भावुक होके येला पढ़ही।

महाकाव्य 309 पेज के हवय जेमा कुल 98 प्रकार के छंद- दोहा, सोरठा, चौपाई, अनुष्टुप छंद, अमृतध्वनि, कुण्डलिया, त्रिभंगी, आल्हा, ताटक,रूपमाला,हरिगीतिका,सरसी, कामरूप, जनक, सार छंद, उल्लाला, पद पादालुक, जयकारी, प्रमाणिका, आनंदवर्धक, वीर छंद, कज्जल, शक्ति, विधाता, कुकुभ, लावणी, मंगलवत्थु,मधु वल्लरी, बरवै, त्रिभंगी, शार्दुल विक्रडीत, विष्णुपद, मधु मालती, रोला, शंकर छंद, जयकारी छंद, वसंत तिलिका, डिल्ला, मालिनी, शोभन, भुजंग प्रयात, पुनीत, कुण्डल, हाकलि, रास, राधिका, मनोरम, मुक्तामणि छंद, शुद्ध गीता, शिव छंद, तोटक, सिंधु छंद, सुखदा छंद, गोपी, गगनांगना छंद, दिगपाल, मानव, चण्डिका, त्रिलोकी छंद, अखण्ड छंद, अनुगीत, विंध्वकमाला, वंशस्थ, कामना, वर्णिक, राधिका, तोमर, निश्छल,दीप, आनंदवर्धक, सुगति, श्रृंगार, पद्धरी छंद, डिल्ला, छप्पय, विजात छंद, त्रोटक, अरिल्ल, तामरस छंद, शशि वंदना, तोमर, गीतिका, उपजाति, भुजंगप्रयात वर्णिक छंद के अलावा मनहरण घनाक्षरी, रूप घनाक्षरी बउरे गे हवय। सवैया में -दुर्मिल,मदिरा, बागीश्वरी, अरविंद सवैया, सुन्दरी, मुक्तिहरा, मत्तागयन्द,सर्वगामी,सुमुखी,चकोर, महाभुजंगप्रयात, मोद, वाम, मत्तत, अरसात अऊ सुखी सवैया कुल 12 प्रकार के सवैया के सुग्घर प्रयोग हवय।

महाकाव्य के भाषा सरल अऊ बोधगम्य हवय। रस छन्द अउ अलंकार के प्रयोग ले महाकाव्य के खूबसूरती म चार चांद लगगे हवय। घटना के कलात्मक चित्रण मा बादल जी माहिर हवय। बादल जी के ये अनुपम कृति छत्तीसगढ़ी साहित्य मा अपन अलग स्थान बनाही। ये महाकाव्य मा अतेक अकन छंद के प्रयोग करके छत्तीसगढ़ी साहित्य ला पोठ करे के सुग्घर उदिम बादल जी करे हवय। छत्तीसगढ़ी म प्रकाशित उत्कृष्ट महाकाव्य खातिर बादल जी ला अंतस ले बधाई अऊ शुभकामना।

समीक्छा

कृति - श्री सीताराम चरित
लेखक- चोवाराम वर्मा 'बादल'
प्रकाशक -शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, नई दिल्ली
समीक्षक - अजय अमृतांशु

बदरहा जाड़

बादर बदली ढंके हवे
सुर-सुर-सुर पुरवाई चलत हे
ठंड के मारे घुरघुरासी लागे
जाड़ नंगत करत हे

मउंसम घलो बेईमान होगे
जाड़ दिन म पानी टपकत हे
आषाढ़ के अकरसु कस
ओईरसा चुहुंल दरपत हे

लकड़ी छेना भुर्री तापे
अंगेठा आगी भभकत हे
ए बईरी जुड़ जाड़ तोला
अतिक काबर हटकत हे

नांन्हे नांन्हे लईका मन
बबा के कोरा म लपकत हे
सुवेटर कनचप्पी साल पहिरे
हुं हुं हुं करत कंपकंपात हे!!

सोनु नेताम माया
रुद्री नवागांव धमतरी

गोरसी तापत अंगाकर खाए के दिन

तब जाड़ ह हमर मन बर तिहार बरोबर जनावय। अघ्घन-पूस दू महीना तो गजबे निक जनावय। हमर गांव-गंवई म ए बेरा ह धान मिंजई के बेरा होथे। धान मिंजई माने बेलन खेदना अउ बीच-बीच म बेलन ले उतर के चारों मुड़ा बगरे पैरा म उलानबाटी खेलना।

गांव म किसान-किसानीन, बनिहार-कमईया सबोच के दिनचर्या बियारा म पैरा बगराना, बेलन फांदना, कलारी म खोभा मारना, धान के दाना मन झरझें, त पैरा ल झर्रावत हेरना अउ पैरावट म गांजत जाना, पैरा के झरे जम्मो धान मनला सकेल के एक तीर म रास मढ़ाना, फूल-पान नरियर चघा के हूम-धूप देना। तेकर पाछू फेर वोला काठा म राम ले लेके सरा (1 ले 20) तक के गिनती गिनत नापना। एक सरा माने एक खांड़ी पूर जाय त फेर एक बाजू म वोकर खातिर एक मुठा धान के कुढ़ेना मढ़ा देना। अइसने एकक मुठा करत बीस मुठा हो जावय, त फेर एक गाड़ा (बीस खांड़ी) के वो सबो कुढ़ेना ल एक तीर सकेल दिए जाय।

घर के सियान-सियानीन मन तो अतकेच म चिथियाय राहंय, फेर हमन कूद-फांद अउ एती-वोती धूम-धड़ाका म राहन। सुत के उठन तहां ले बियारा के आगू म गड्ढा खान के बनाए कौड़ा म आगी तापना। थोकिन चरचराए असन लागिस तहां ले मुखारी चगलत तरिया जाना, फेर उहां नहाए के पहिली घठौंदा म बगरे चिरी मनला सकेल के भुर्री बारना। भुर्री के दगत ले धरा रपटा तरिया म कूद के निकलना अउ झटपट कपड़ा पहिर के फेर भुर्री तापना।

घर म आवन त घींव चुपरे अंगाकर रोटी बर झपेट्टा मारन अउ देखन त अंगाकर के फोकला अतका मन हमर बांटा म राहय अउ वोकर जम्मो गुदा मनला हमर बिन दांत के भोभला बबा खातिर अलगिया दे राहय। हमन बस गोरसी तापत फोकला अतका ल झड़कन

तहां फेर स्कूल के बेरा हो जावय।

संझा स्कूल ले लहुटे के पाछू फेर बियारा म धान मिंजाय बर बगरे पैरा म चलत बेलन म चढ़ना, बीच-बीच म उलानबाटी खेलना चालू हो जावय। कभू-कभू बियारा म गाड़ा ल पैरा म तोप के रतिहा के रखवारी करइया मन बर बनाए कुंदरा म खुसरना, उहां माढ़े जिनिस मनला देखना-हुदरना बस अतकेच म बेरा पहा जावय।

मुंधियार असन जनावय त फेर घर कोती जाना, चिमनी अंजोर म गुरुजी मन घर म लिखे-पढ़े बर कुछू अढ़ोय राहय तेला सिध पारन। फेर रतिहा बियारी के पाछू डोकरी दाई जगा कहानी सुनना। सबो भाई-बहिनी गोरसी के आंवर-भांवर बइठ के कहानी सुनन। एक झन कोनो ह हुंकारू देवय। हमर तो कहानी सुनत ही नींद पर जावय, कतका जुवर कोन ह हमला खटिया म ढनगा देतिस तेकरो गम नइ मिलय।

इतवार के छुट्टी के दिन के दिनचर्या ह थोरिक अलगे राहय। ए दिन बिहनिया गोरसी तापत अंगाकर रोटी दमोरे के पाछू खेत डहार जावन। कोनो मिठहूं असन बोइर के पेड़ म चढ़ना, कोनो पाके असन दिखत बोइर वाले डारा ल हलाना, फेर खाल्हे म उतर के पेंठ के दूनों खीसा म खसखस के बोइर ल भरना तहां ले खेत म उल्होए तिंवरा भाजी ल सुरर-सुरर के हकन के कोल्हान नरवा कोती बढ़ जावन। कभू-कभू तो सबो संगी तिंवरा भाजी ल रांध के खाए खातिर तेल-फूल जइसे जम्मो जिनिस मनला अपन-अपन घर ले धर ले राहन अउ नरवा खंड़ म आगी सिपचा के वोला रांध के खावन। ए किसम वो छुट्टी के दिन हमर मन के तिंवरा भाजी के पिकनिक पार्टी हो जावय।

-सुशील भोले, संजय नगर, रायपुर

सबले बड़े गंगा हे समाज गंगा

कहिनी

संझाती बेरा मटासी खार में भारा बांधत बांधत धनसिंग ल देखेंव, अपन खेत के बंबरी रुख म डोरी ल बांधत रहय। भारा बीड़ा ल छोड़के पल्ला दौडेंव। तोर मति बौरा गेहे धनसिंग? उतर ये रुख ले, बइहा होगेस तेहा, फांसी डोरी लेवथस। धनसिंग रोवत कथे- मोला मर जावन दे रैन भईया मैं समाज में मुंहु देखाये के काबिल नई हंव। मोर ले गलती होगे हे गांव भर के नजर में मैं गिर गेहो। गांव के जम्मो घर ऊंच-नीच लड़ाई -झगड़ा, चोरी-हारी के फैसला गांव के सचिव होये के सेती सियानी करत रेहेंव। दुनिया में शिक्षा देवत रेहेंव जेकर चाल-चलन बिगड़ गे तेकर दुनिया में कुछु नई हे अउ आज मोरे चाल म कीरा परगे अऊ गियानी मन कथे धन सिरागे त कुछु सिरागे, तबियत बिगड़े ले थोड़ा बहुत कुछ सिरागे लेकिन जेकर इज्जत सिरागे तेकर दुनिया में सब सिरागे। अब मोर इज्जत नई हे त मैं जी के का करहु? मैं केहेंव- ये मरइ हरई ले कोनो समस्या के समाधान नई होवय धनसिंग, जीना-मरना भगवान के हाथ मे हे। का बात हरे कुछु बताबे घलो, धनसिंग कथे- भईया तैं तो जानत हस गांव के सचिव के पद कतका दिन के सम्हालत आवत हंव फेर लोभ में आके मैं पाप कर डरेंव। जगह-जगह पारा-मोहल्ला, खोर-चंवरा में मोर चर्चा चलत हे। मैं ये सब सुन के नई जी सकवं। का गोठ होवत हे बने फरिहा के बता? कहिके पुछेंव। धनसिंग कथे- रैन भइया तैं तो जानत हस गांव में जग जंवारा, रमायन-भागवत, मन्दिर देवाला सबके देखरेख, हिसाब-किताब खर्चा अउ लेवइ-देवई के जिम्मेदारी मोर रथे। जतका चढ़ोतरी में धान-चाउर सकलाथे सबके हिसाब ल मिहि देवत आथो। दस बछर ले गांव वाला मन मोर ऊपर आंखी मुंद के बिस्वास करत आवत हे। फेर ये साल में लोभ में आके रामकोठी के धान के हिसाब में हेरफेर कर डरेंव। चार खाड़ी धान ल राम कोठी के हिसाब में गबन कर देव अउ गांव के सामाजिक बइठका में का जवाब दुहु? कहिके संसो में मोर जीव छटपटात रिहिस। जिनगी भर इज्जत कमाये रेहेंव आज लालच में बईमानी कर परेव, काली मोर खानगी निकल जहि त मोर का इज्जत रइही गांव समाज के नजर में मैं चोर बन जाहुं। इज्जत गंवाये के डर में फांसी लेवत रेहेंव कहिस। में ओकर बात ल समझेव अउ केहेंव- गलती तो तोर से होय हे धनसिंग फेर गलती करैया से छमा करने वाला बड़े होथे अउ गलती करके गलती ल छुपाये के बदला अपन गलती स्वीकार करे के जे चार समाज में छमा मांग ले ओमे बुधिमानी हे। तैं तो मर जबे फेर जीवन भर तोर चोला में बईमानी के दाग पड़ जाहि। में केहेंव ते फिकर झन कर काली बस्ती समाज में ते अपन बात रखबे में तोर पक्ष लुहु देखथों कोन तोर हांसी-फजीत्ता अउ चारि निंदा करहि तेला। बिहनिया बेर कोतवाल हांका पारिस। घर पाछू एक-एक आदमी हिसाब के बइठका में बाड़ा कर जावत जाहु कहिके। में धनसिंग ल धर के गेंहो ले धनसिंग हिसाब-किताब ल बता रामकोठी में कतका धान हे कहिके। धनसिंग रजिस्टर धरके आये रिहिस चार समाज में हाथ जोड़ के अपन बात ल रखिस- मोर से गलती होगे ददा भइया हो, लालच में मोर आंखी चौंधियागे। रामकोठी के चार खाड़ी धान ल बेंच परेंव। गलती तो कर डरेंव फेर अपन आप के नजर में गिरगे रेहेंव। काली रैन भइया नई रहितीस त मोर परान नई बांचे रहितीस। में समाज में केहेंव- दुनिया के एक ठन सच्चाई हे कोनो आदमी लाख अच्छा काम कर ले भलाई परोपकार करले लेकिन गलती से एक ठन पाप कर डारथे त दुनिया ओला जियन नई दे। परेशान हलाकान कर देथे। इंसान कतको अच्छा रहय फेर सब मनखे में एक न एक अवगुण जरूर रथे काबर के उहू मानखे हरे। लेकिन दुनिया वाला मन ओला जियन नई दे अउ हमर संत महात्मा मन घलो केहे हें - लाभ-हानि जीवन-मरण जस अपजस बिधि हाथ। हमर जीवन में जो भी घाटा -फायदा होथे, जीना-मरना अउ नाम बदनाम होना ब्रम्हा के हाथ में हे। येमा कोनो ल दोष लगाना बुधिमानी नई हे। धनसिंग ह अपन गलती ल चार समाज मे स्वीकार करत हे अउ समाज ल गंगा कहे जाथे ये गंगा में जतका पाप बुराई गलती हे सबला धोये के मौका मिलथे अउ समाज के घलो कर्तव्य होथे के जेन आदमी अपन गलती स्वीकार करके चार समाज के पांव में गिरत हे ओला सुधरे के मौका दिया जाए न कि ओकर फजीत्ता करे। उहू मानव हरे मानव से गलती होना स्वाभाविक हे फेर छमादान ल घलो बड़का दान केहे गेहे कोनो ल छमा करके ओकर जीवन सुधार करे जा सकत हे ओला सही रद्दा में लाने के परयास करे जा सकत हे। धनसिंग गलती करे हे अउ अपराध के सजा तो जरूर मिलना चाहिए। पांच झन सियान उठके जाओ अउ जो भी फैसला हे बना के लानो कहिके। पांचो सियान गिस अउ समाज मे अपन फैसला सुनाइस एक ठन श्रीफल अउ एक सौ इंकावन रुपया समाज तोला डाढ़ लेवत हे ,समाज मे रखबे अउ चार खाड़ी धान ल फसल काटके चार समाज के बीच रामकोठी में भरबे कहिके। धनसिंग अपन गलती के प्रायश्चित करिस। समाज गंगा के पांव परिस अउ समाज में एक श्रीफल एक सौ इंकावन रुपया रखके समाज के पांव परिस। महु समाज मे अपन बात रखेव - गलती सब मनखे से हो जथे फेर जब तक समाज ह कोनो अपराधी ल सुधरे के मौका नई दिही त तब तक समाज ले अपराध अउ अपराधी के कमी नई होये। कोनो आदमी पेट भीतर ले चोरहा लबरा बनके नई आये न कोनो हुशियार अउ ईमानदार बनके आथे। कब काकर नियत बिगड़ जाये ककरो ठिकाना नई हे कोनो ल दूध के धोये नई केहे जा सके ।आदमी के बनाये अउ बिगड़े में समाज के बहुत बड़का योगदान रथे ।कोनो अपन गलती स्वीकार करत हे तब हम हांसी निंदा ल छोड़के ओला जीवन जिये के अउ अच्छा मनखे बने के मौका दे सकत हन आज हम धनसिंग ल नई समझतेन ते आज धनसिंग फांसी में झुलके अपन परान तियाग दे रतीस अउ अइसन कई मनखे अपन गलती के डर से लोकलाज के भय में गलत रद्दा म चल देथे या अपन परान त्याग देथे जेमे सुधार लाना आम जनता के अउ समाज के कर्तव्य हरे काबर के सबले बड़े गंगा समाज गंगा हरे जिहा सबके पाप अवगुण धोवाथे अउ एक सुग्घर बिचार के साथ गलत रद्दा में भटके मनखे ल सही रद्दा में लाने जा सकथे।

हमर जीवन में जो भी घाटा -फायदा होथे, जीना-मरना अउ नाम बदनाम होना ब्रम्हा के हाथ में हे। येमा कोनो ल दोष लगाना बुधिमानी नई हे। धनसिंग ह अपन गलती ल चार समाज मे स्वीकार करत हे अउ समाज ल गंगा कहे जाथे ये गंगा में जतका पाप बुराई गलती हे सबला धोये के मौका मिलथे अउ समाज के घलो कर्तव्य होथे के जेन आदमी अपन गलती स्वीकार करके चार समाज के पांव में गिरत हे ओला सुधरे के मौका दिया जाए न कि ओकर फजीत्ता करे।

वेदप्रकाश नगारची (शिक्षक)
ग्राम खुटेरी (फिंगेश्वर)

उल्टा पुल्टा

रेलवे टीटी- टिकट दिखाओ, कहां जाना है?
पिंटू - जहां राम का जन्म हुआ था,
टीटी- टिकट दिखा दो, जहां जाना है जाओ।
पिंटू - टिकट नहीं है सर।
टीटी- तो चलो...
पिंटू - कहां सर ?
टीटी- जहां भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था।

दयालबंद में युवक की लाश मिलने से फैली सनसनी, हत्या की आशंका

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। दयालबंद स्थित मधुबन जाने वाली रोड किनारे बनी नाली में लाश मिलने से सनसनी फैल गई, जानकारी के अनुसार आज सुबह दयालबंद क्षेत्र स्थित यादव होटल के पास लोगों ने नाली में लाश देखी जिसके बाद हड़कंप मच गया वही लाश मिलने की जानकारी पुलिस को दी है, और सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंच जांच में जुट गई है, सूत्र बता रहे है की मृतक के शरीर में चोट के निशान है। जिससे हत्या की आशंका जताई जा रही है। बहरहाल पुलिस जांच के बाद स्पष्ट हो पाएगा की ये हत्या है या हादसा है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से रुबरु हुए प्रधानमंत्री

■ केवीके में 150 से ज्यादा किसानों और अन्य लोगों ने ऑनलाइन जुड़कर लिया हिस्सा

बिलासपुर, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए रूबरू हुए। कृषि विज्ञान केंद्र बिलासपुर से 150 से ज्यादा किसानों और अन्य लोगों ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़कर समारोह में हिस्सा लिया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि मजबूत इच्छाशक्ति के बलबूते कुछ भी किया जा सकता है। हमने जो योजनाएं बनाई हैं उसके मुताबिक हम लाभार्थियों को ढूंढते हैं और सामने से जाकर उन तक योजना का लाभ पहुंचाने का काम कर रहे हैं। लोगों को बहुत सारी योजनाओं का लाभ मिला है, जिससे लोगों का विश्वास बढ़ता है और जिन्दगी जीने की ताकत आती है। आज युवा शहर जाना छोड़कर गांव लौट रहे हैं और यहां खेती कर लाखों में फायदा कमा रहे हैं। कृषि महाविद्यालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत सीईओ अजय अग्रवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अरूण कुमार त्रिपाठी मौजूद थे। सीईओ श्री अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में कहा शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी विकसित भारत संकल्प रथ के माध्यम से जिले के सभी ग्राम पंचायतों के किसानों को दी जायेगी। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के कृषि क्षेत्र के उन्नत ज्ञान का लाभ जिले के किसानों को अनिवार्य रुप से लेना चाहिये । इस अवसर पर अधिष्ठाता डॉ. आर. के. एस तिवारी एवं महाविद्यालय के प्राध्यापकगण, उप संचालक कृषि, उप संचालक उद्यान व कृषि विभाग के अधिकारी कर्मचारी, जिले के उन्नत कृषक उपस्थित थे। इस अवसर पर मृदा स्वास्थ्य कार्ड व प्राकृतिक खेती की जानकारी किसानों को दी गयी।

बहन के घर देखते ही साढ़ू पर कर दिया हमला, युवक की मौत

अवैध संबंध के चलते गई जान

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। बहन के साथ अवैध संबंध की आशंका पर युवक ने अपने साढ़ू पर हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। हमले में घायल की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना पर पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने पूछताछ के बाद आरोपित युवक को गिरफ्तार कर लिया है। उसे न्यायालय में पेश करने कार्रवाई की जा रही है।

सकरी थाना प्रभारी राजेश मिश्रा ने बताया कि बजरंग पारा में रहने वाला कुंदन डोम रोजी मजदूरी करता था। पड़ोस में ही उसका साढ़ू राजा डोम भी रहता था। राजा को आशंका थी कि कुंदन का उसकी बहन के साथ अवैध संबंध है। इसी बात को लेकर राजा और कुंदन के बीच पहले भी विवाद हुआ था। राजा ने कुंदन को अपनी बहन से दूर रहने के लिए कहा था। इसके बाद भी कुंदन का राजा की बहन के घर आना जाना था। शुक्रवार की रात भी कुंदन राजा की बहन से मिलने के लिए उसके घर गया था। राजा ने कुंदन को अपनी बहन के घर देख लिया। इसी बात से नाराज होकर राजा ने कुंदन से विवाद करते हुए अपनी बहन के घर से जाने के लिए कहा। विवाद के बीच राजा ने कुंदन पर लाठी से हमला कर दिया। हमले में कुंदन के सिर और शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोटे आई। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हमले के बाद आरोपित वहां से भाग निकला।

इधर हत्या की जानकारी मिलते ही सकरी पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। प्राथमिक पूछताछ के बाद पुलिस ने शव कब्जे में लेकर चीरघर भेज दिया। पुलिस ने मोहल्ले में घेराबंदी कर आरोपित राजा को गिरफ्तार कर लिया है। उससे घटना के संबंध में पूछताछ कर न्यायालय में पेश करने कार्रवाई की जा रही है।

सार-संक्षेप

महंती शाला तिलकनगर में पुस्तक लेखन कला विषय पर एक दिवसीय सेमीनार संपन्न

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। बिलासपुर के स्थानीय महंती हिन्दी माध्यम उच्चतर माध्यमिक शाला तिलकनगर बिलासपुर में आज 9 दिसंबर दिन शनिवार को पुस्तक लेखन कला विषय पर एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन पुस्तक लेखन कोच डा. चंचला दयाकर (चेबई) एवं डा. विनय कौशल के विशिष्ठ आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें उन्होंने बताया प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के अंदर ज्ञान एवं अनुभव का भंडार अवश्य होता है जिसे वे लेखन कला के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं या अर्जित कर सकते हैं, उन्होंने बताया सिर्फ 15 दिनों में भी किताब लिखकर अमेजन बेस्ट सेलर में भेजकर स्वयं के लिये आय, पहचान एवं प्रतिष्ठा पाई जा सकती है। रोचक विषयों पर लिखकर बहुत सारी सामानिक समस्यायों का समाधान किया जा सकता है एवं समाज को सार्थक संदेश भी दिया जा सकता है।आज के कार्यकम में शाला की छात्रायें, बी.एड. प्रशिशु एवं शिक्षकों की भी सहभागिता रही ।

कार्यक्रम के समापन में शाला की प्राचार्या श्रीमती ए.लाल ने अतिथियों का उनकी रोचक एवं सारगर्भित जानकारी के लिये आभार व्यक्त किया ।

आज़ाद युवा संगठन ने विधायक अटल को दी बधाई

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। कोटा विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत जोगीपुर,उमरमरा,नवापारा,बरर ,कुपाबंधा,के आज़ाद युवा संगठन के पदाधिकारीगण द्वारा नवनिर्वाचित कोटा विधायक अटल श्रीवास्तव को उनके निवास स्थान पहुंच कर जीत की बधाई एवं शुभकामनाएं दी गई। बधाई देने वालो में मुख्य रूप संगठन प्रमुख इशहाक कुरैशी के अलावा श्रीमती उर्वशी पालेकर संगठन जिला उपाध्यक्ष, सगन सिंह राज ब्लाक उपाध्यक्ष कोटा,मानकुमारी एक्का ग्राम संगठन अध्यक्ष,सिवनी बाई यादव,ललिता एक्का,चन्द्रिका बाई राज,मंगल सिंह राज,हिरोदिन बाई,उर्मिला बाई यादव,जानकी बाई,दीपा बिंझवार,आदि उपस्थित रहे।

दिखावा करके भक्ति करने से भगवान प्रसन्न नहीं होंगे- सुदामा

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)।धन धन गुरु नानक देव जी के 554 वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर आदर्श कॉलोनी दादी खुशी लंगर हाल में 11 से 1 बजे तक बाबा आनंद राम दरबार के संत सांई कृष्ण दास जी एवं बाबा आनंद राम दरबार रायपुर के सांई सुदामा के द्वारा सत्संग कीर्तन करके साध संगत को निहाल किया अपनी अमृतवाणी में सुदामा भैया ने गुरु के कई अमृत वचनों का भक्तों को रसपान कराया ज्ञानवर्धक दो प्रसंग सुनाए जिसमें एक प्रसंग है कि आजकल लोग भक्ति भी दिखाकर करते हैं दिखाकर भक्ति करने से व नाम कि माला जपने से भगवान प्रसन्न नहीं होते हैं आप भली मंदिर मत जाओ कहीं भी मत जाओ अपने घर में रहो पर भाव से सच्चे मन से भगवान को अगर सिमरन करेंगे उन्हें याद करेंगे नाम जपेंगे तो भगवान प्रसन्न होंगे और आपको दर्शन देंगे। आपके कष्ट सब दूर करेंगे और दिखाकर आप सालों साल भक्ति करते रहो भगवान दर्शन देने वाले नहीं हैं आप लोगों को मूर्ख बना सकते हो भगवान को नहीं उन्होंने एक कथा सुनाई एक जंगल में भील रहता था अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ एक रात्रि के समय एक राजा आया और भील के कुटिया के बाहर दरवाजा खटखटाया भील ने दरवाजा खोल राजा ने अपना परिचय दिया उन्होंने बताया कि वह शिकार पर निकले थे पर अपने सैनिकों से दूर हो गए रास्ता भटक गए और रात्रि का समय है मुझे एक रात्रि गुजरने के लिए जगह दे दो वह भील राजा को नमन किया वह कहा बड़ी खुशी की बात है और अच्छी किस्मत है हमारी आज की आप हमारे यहां ईस झोपड़ी में पधारे हैं।

21 को सजेगा राणी सती दादी का दरबार

बिलासपुर, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। राणी सती दादी के भक्तों ने पुन: 21 दिसंबर एक बार गोविंदम पैलेस में राणी सती दादी भव्य दर बार लगाने का निर्णय लिया है। सी ए आन द अग्रवाल ने बताया कि एक बार फिर से बिलासपुर की धर्मनिष्ठ जनता को बनारस की गंगा आरती की तर्ज पर शाम को राणी सती दादी की भव्य आरती देखने का सुअवसर प्राप्त होगा। दोपहर 3 बजे से सूरत से पधारी सुश्री सुरभी बिजुरका मंडली द्वारा संगीतमय मंगलपाठ का आयोजन किया जाएगा। सर्वश्री नवलकिशोर तुलस्यान, सुरेश कुमार तायल, पवन अग्रवाल, श्रीकांत केडिया, अजय अग्रवाल, प्रवीण तुलस्यान, संदीप अग्रवाल, आयुष अग्रवाल व सी ए आनंद कुमार अग्रवाल ने सभी दादी भक्तों से इस अवसर का लाभ लेने का आग्रह किया हैं।

जहा कांग्रेस की सरकार बनी वहा भ्रष्टाचार हुए - कौशिक

कांग्रेस सांसद पर आयकर विभाग की कार्रवाई को लेकर धरमलाल ने किया हमला

बिलासपुर, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। आज भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ के पूर्व नेता प्रतिपक्ष बिल्हा विधायक धरम लाल कौशिक ने झारखंड में कांग्रेस सांसद पर हुई आयकर विभाग की कार्यवाही को लेकर जिला भाजपा कार्यालय में एक प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए कांग्रेस पर आरोप लगाया कि जहां जहां कांग्रेस की सरकार बनी वहा वहा भ्रष्टाचार हुए देश की सबसे बड़ी पार्टी जिसने आजादी के बाद सर्वाधिक काल तक देश में शासन किया परन्तु वह पार्टी इतने लम्बे अरसे से सरकार में रहते हुए सिर्फ़ और सिर्फ़ भ्रष्टाचार में लिप्त रही कांग्रेस के नेता मंत्री देश को लूटते रहे और इसी लूट के चक्कर में आम जनमानस को मूलभूत सुविधाओं से वंचित रखा उनकी बुनियादी जरूरतों की उपेक्षा की गई झारखंड में कांग्रेस सांसद पर हुई आयकर विभाग की कार्यवाही ने पूरे कांग्रेस पार्टी को बेनकाब कर दिया। कांग्रेस पार्टी में अच्छा खासा रसूख रखने वाले राज्यसभा सांसद धीरज साहू के औद्योगिक कंपनी के 10 ठिकानों पर छापामार कार्यवाही करते हुए आयकर विभाग ने 200 करोड़ रूपए नगद की बरामदगी की है 500,200 ओर 100-100 के बंडलों में जप्त किए गए बंडलों की संख्या इतनी अत्यधिक थी कि नोट गिनने वाली मशीन भी टूट गई नोटो की भारी तादात को देखते हुए इन रुपयों को 157 बैगों में भर कर बैक में जमा किया गया धीरज साहू जो कि कांग्रेस से तीसरी बार राज्यसभा के सांसद है उनके द्वारा राज्यसभा चुनाव 2018 में चुनाव आयोग को दिए गए शपथ पत्र में अपनी कुल संपत्ति 34 करोड़ रुपए होना स्वीकार किया है एक बड़ी शराब कम्पनी का संचालन करने वाले श्री धीरज साहू की कांग्रेस में प्रदेश स्तर पर बड़े बड़े पदों में रह चुके हैं इन्हें प्रदेश में कांग्रेस के सबसे बड़े फैनेंसारके रूप में जाना जाता है राज्यभर में इस बात की चर्चा रहती है कि ये गांधी परिवार के भरोसेमंद हैं परिवार से इनके संबंध काफी करीबी है मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन तथा लोहरदगा विधायक एवम झामुमो - कांग्रेस गठबंधन सरकार में वित्तमंत्री रामेश्वर उराव के साथ भी इनके घनिष्ठ सम्बन्ध है जमीनी हकीकत यह है कि रामेश्वर उराव ओर धीरज साहू से पैसे की लेनदेन में मध्यस्थता करते हैं रामेश्वर उरांव (वित्तमंत्री झारखंड सरकार) इनके एक तरह से एकाउंट मैनेजर कहे जा सकते हैं । श्री कौशिक ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस ने इस देश को दीमक की तरह चाटने का काम किया है यदि स्थिति यही रही तो देश का क्या होगा लूट और भ्रष्टाचार का यह इकलौता उदाहरण नहीं जब से श्री नरेन्द्र मोदी जी जीरो टोरलेंस की नीति लेकर आए हैं बड़े बड़े चौकाने वाले खुलासे हुए हैं देश की एजेंसियों ने यू पी में 42 करोड़ ,चेन्नई में 120 करोड़,ममता के मंत्री पार्थ चटर्जी से 50 करोड़ रुपए सहित अन्यान्य जगहों से रुपयों के बड़े बड़े खेप और बेनामी संपत्ति जब्त की है और यही वजह है कि कांग्रेस सहित विपक्षी पार्टियों में ई डी, सी बी आई और ई डी को लेकर खौफ है वो अपनी गिरेबान बचाने आए दिन इन एजेंसियों को बदनाम करने में तुले हैं परंतु भ्रष्टाचारियों पर कार्यवाही जारी रहेगी यह मोदी की गारंटी है भारत की जनता ने जिस आशा अपेक्षा के साथ मोदी सरकार को चुना है दो दो बार भारी बहुमत देकर जिताया है वह सिर्फ इसलिए कि गरीब जनता के संसाधनों को छीनने की आजादी किसी को भी नहीं है चाहे वह कोई रसूखदार परिवार हो या कोई भी राजनीतिक दल हो या इसके नेता हो इस तरह की कार्यवाहियां बार बार यह सिद्ध करती हैं कि देश पर सर्वाधिक काल तक शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी हुई है।

सोनिया गांधी त्याग की प्रतिमूर्ति- कांग्रेस

कांग्रेसियों ने सोनिया का जन्मदिन मनाया

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। ज़िला कांग्रेस कमेटी (शहर/ग्रामीण) ने आज कांग्रेस भवन में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और यूपीए के चेयर पर्सन श्रीमती सोनिया गांधी जी का जन्मदिन के अवसर पर केक काटा गया और उनके स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना के साथ ही बधाई -शुभकामनाएं ज्ञापित की गई।

शहर अध्यक्ष विजय पांडेय ने कहा कि श्रीमती सोनिया गांधी जी त्याग की प्रतिमूर्ति है ,जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया , अपने पति राजीव गांधी और सास श्रीमती इंदिरा गांधी को खोया ,पर धैर्यता नही खोई ,शहर अध्यक्ष विजय पांडेय ने कहा कि श्रीमती गांधी को देश की प्रधानमंत्री बनने का दो अवसर प्राप्त हुआ फिर भी उन्होंने पद की लोलुपता से बाहर जाकर मनमोहन सिंह जी को प्रधान मंत्री बनाया , पांडेय ने कहा कि तब की विपक्षी पार्टी ने भारतीय संस्कृति को तार तार करते हुए सोनिया जी के संदर्भ में बहुत

ओछी और स्तरहीन टिप्पणी की जो एक स्वस्थ और सुसंस्कारी समाज मे स्वीकार्य नही है ऐसे अप्रिय शब्दो को भी सोनिया जी सुनी और बर्दाश्त की ,किंतु सोनिया जी ने देश के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से डिगी नही और लगातार देश के लिए संघर्ष कर रही है ,सोनिया जी ने देश के आम जनता ,सर्वहारा के लिए राइट टू इनफार्मेशन, राइट टू फ़ूड, भूमि का चार गुना मुआवजा, मनरेगा ,जैसे कई अधिकार दिए , कार्यक्रम में शहर अध्यक्ष विजय पांडेय, ज़फ़र अली,हरीश तिवारी, माधव ओत्तालवार, त्रिभुवन कश्यप,ॠषि पांडेय, विनोद साहू, ब्रजेश साहू, शिल्पी तिवारी, अफरोज बेगम,सुदेश नन्दिनी ठाकुर,प्रिया शर्मा ,जगदीश कौशिक,वीरेंद्र सारथी,करम गोरख,गौरव ऐरी, दिनेश सूर्यवंशी, मनोज सिंह,राजेश ताम्रकार,चंदन सिंह,संतोष अग्रवाल,राम दुलारे रजक,मनोज शर्मा,राज कुमार बंजारे,सुभाष श्रॉफ, शाहिद कुरैशी आदि उपस्थित थे ।

विभिन्न एक्सप्रेस गाड़ियों में अतिरिक्त कोच की सुविधा

बिलासपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की बेहतर यात्रा सुविधा व अधिकाधिक यात्रियों को कंफर्म बर्थ उपलब्ध कराने हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से होकर चलने वाली विभिन्न एक्सप्रेस गाड़ियों में एक-एक अतिरिक्त कोच की सुविधा अस्थायी रूप से उपलब्ध कराई जा रही है । इस सुविधा की उपलब्धता से इन गाड़ियों में यात्रा करने वाले अधिकाधिक यात्री लाभान्वित होंगे । विवरण इस प्रकार है।1, गाड़ी संख्या 22894/22893 हावड़ा-साईनगर शिर्डी-हावड़ा एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त स्लीपर कोच की सुविधा हावड़ा से 14 दिसम्बर 2023 को तथा साईनगर शिर्डी से 16 दिसम्बर 2023 को उपलब्ध रहेगी ।2, गाड़ी संख्या 12222/12221 हावड़ा-पुणे-हावड़ा दुरंतो एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी-03 कोच की सुविधा हावड़ा से 14 दिसम्बर 2023 को तथा पुणे से 16 दिसम्बर 2023 को उपलब्ध रहेगी ।3, गाड़ी संख्या 12262/12261 हावड़ा-सीएसएमटी-हावड़ा दुरंतो एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी-03 कोच की सुविधा हावड़ा से 12 व 15 दिसम्बर 2023 को तथा सीएसएमटी से 14 व 17 दिसम्बर 2023 को उपलब्ध रहेगी।

बिजली की आंखमिचौली से शहरवासी परेशान

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। शहर में बिजली की आंखमिचौली से शहरवासी परेशान हो रहे हैं सुबह से लेकर रात तक लगातार 5 से 6 बार बिजली गुल की जा रही है शहर के चौक चौराहों पर ट्रांसफार्मर में मेंटेनेंस का कार्य चल रहा है। जिसके चलते बिजली बंद की जा रही है वहीं मौसम में हुए परिवर्तन से रुक रुक कर बारिश हो रही है जिसके चलते भी बिजली की तारों में शॉर्ट सर्किट होने से खराबी आ रही है ।बिजली विभाग द्वारा मरम्मत व सुधार का कार्य किया जा रहा है और बिजली आपूर्ति बाधित की जा रही है जिससे शहर वासी हलाकान है ।बिजली विभाग का दावा है कि आने वाले दिनों में बिजली गुल की समस्या से शहर वासियों को निजात मिलेगी।

बिलासपुर पुलिस की शराबियों पर ताबड़तोड़ कार्रवाई

सार्वजनिक स्थानों, तालाब के किनारे, मैदान आदि में शराब पीने लोगों पर की गई 127 कार्यवाहियां

असामाजिक तत्वों पर अंकुश लगाना, अपराधों में कमी लाना, गुंडागर्दी कम करना तथा शांतिपूर्ण वातावरण बनाना है उद्देश्य

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)। आज पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह (भापुसे) के निर्देश पर तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) राजेंद्र जायसवाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) श्रीमती अर्चना झा, नगर पुलिस अधीक्षक (सिविल लाइन) संदीप पटेल (भापुसे) के मार्गदर्शन में सभी थाना प्रभारी द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सार्वजनिक स्थानों, तालाब के किनारे, खुले मैदान में, चौक-चौराहों पर शराब पीने वाले लोगों पर ताबड़तोड़ कार्यवाही की गई। इसके साथ ही सभी होटल तथा ढाबा संचालकों को चेक किया गया है तथा ऐसे होटल/ढाबा संचालक जो अपने परिसर में शराब पिलाने का काम करते हैं उन पर भी कार्रवाई की गई। इस क्रम में शहरी क्षेत्र में खुले में शराब पीने वालों के ऊपर आबकारी अधिनियम की धारा 36(च) के अंतर्गत कुल 104 कार्यवाहियां की गई हैं, वहीं 5 ऐसे होटल/ढाबा संचालकों पर कार्यवाही की गयी है जो शराब पीने का सामान उपलब्ध कराते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण थाना क्षेत्रों में भी खुले में शराब पीने वालों पर आबकारी अधिनियम की धारा 36(च) के तहत कुल 23 कार्यवाहियां की गई हैं। जिले को शांतिपूर्ण बनाए रखने के लिए आगे भी ऐसी ही कार्यवाहियां जारी रहेंगी। उक्त कार्यवाही में सभी थाना प्रभारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सार-संक्षेप

दिव्यांग बच्चों के लिए आंकलन व मूल्यांकन शिविर 11 से 16 तक

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। राज्य परियोजना कार्यालय रायपुर समग्र शिक्षा द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार विशेष आवश्यकता वाले दिव्यांग बच्चों के लिए विकासखंड स्तरीय आंकलन एवं मूल्यांकन शिविर का आयोजन किया जाएगा। कक्षा पहली से 12वीं तक अध्ययनरत् दिव्यांग बच्चों हेतु आंकलन एवं मूल्यांकन शिविर 11 से 16 दिसंबर तक आयोजित शिविर में दिव्यांग बच्चों को उपकरण, सहायक सामग्री तथा दिव्यांगता प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा।

जिले के प्रत्येक विकासखण्ड में शिविर आयोजन हेतु स्व.बिसाहू दास महंत स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय संबद्ध चिकित्सालय कोरबा (जिला चिकित्सालय) में चिकित्सक, विशेषज्ञ एवं सहायकों की ड्यूटी निर्धारित की गई है। विकासखण्ड करतला में 11 दिसंबर को बीआरसी भवन करतला, विकासखण्ड कटघोरा में 12 दिसंबर को बीआरसी भवन कटघोरा, विकासखण्ड पाली में 13 दिसंबर को बीआरसी भवन पाली, विकासखण्ड पोड़ी-उपरोड़ा में 14 दिसंबर को बीआरसी भवन पोड़ी-उपरोड़ा, विकासखण्ड कोरबा के शहरी क्षेत्र में 15 दिसंबर को बीआरसी भवन खरमोरा एवं कोरबा ग्रामीण क्षेत्र में 16 दिसंबर को बीआरसी भवन अंधरीकछार में सुबह 10-30 बजे से दोपहर 3-30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। शिविर के सफल संचालन हेतु निगम आयुक्त कोरबा, कार्यालय संयुक्त संचालक सह-अस्पताल अधीक्षक, उप-संचालक समाज कल्याण, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एनटीपीसी, सर्व विकासखंड शिक्षा अधिकारी, सर्व विकासखंड स्त्रोत समन्वयक, जिला मुख्य आयुक्त भारत स्काउट एंड गाईड एवं समस्त शैक्षणिक समन्वयकों को दायित्व सौंपे गए हैं।

प्राकृतिक खेती और मृदा स्वास्थ्य कार्ड के संबंध में किसानों को मिली जानकारी

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 15 नवम्बर से 26 जनवरी 2024 तक विभिन्न केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं के आवरण में किसानों को शामिल करने के लिए %%विकसित भारत संकल्प यात्रा'' कार्यक्रम फेस - 3 का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र कटघोरा में किया गया।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उद्बोधन कृषकों के लिये ऑनलाईन माध्यम से एलईडी पर प्रसारित किया गया। मृदा स्वास्थ्य कार्ड एवं प्राकृतिक खेती संबंधित विषयों पर वीडियो प्रसारण के द्वारा कृषकों को जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान कृषि पर आधारित प्रश्नोत्तरी आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। केन्द्र की योजनाओं से लाभ प्राप्त किये कृषकों के व्यक्तिगत अनुभव को प्रधानमंत्री से साक्षात/प्रत्यक्ष रूप से साक्षा किया गया। केन्द्र के योजनाओं के लाभार्थी सफल कृषकों के अनुभव से अन्य कृषकों को भी प्रेरणा मिली। कार्यक्रम में डाकेश्वर शुक्ला, राजेन्द्र टंडन एवं अजय द्विवेदी,सहायक संचालक देवेंद्र कंवर सहित अन्य विभागों के अधिकारियो/कर्मचारियों, कृषि विज्ञान केन्द्र कोरबा के अधिकारियों,कर्मचारियों की उपस्थिति रही।

कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने जानी सीपेट की गतिविधियां

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के द्वारा शासकीय हाई स्कूल स्याहीमुड़ी में आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन सिपेट में विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शिविरार्थीयों को प्लास्टिक टेक्नोलॉजी के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। प्लास्टिक उद्योग के क्षेत्र में कौशल विकास के कार्यक्रमों की भी जानकारी दी गई।

शासकीय हाईस्कूल स्याहीमुड़ी से पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट) तक शिविरार्थियों ने रैली निकाली। कार्यशाला के प्रारंभ में राजीव कुमार लिल्हरे, प्रबंधक तकनीकी ने भारत सरकार के रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय द्वारा संचालित केंद्रीय पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के संबंध में जानकारी दी। रजनीश पांडेय, विभागाध्यक्ष इलेक्ट्रिकल्स ने सिपेट में संचालित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं डिप्लोमा कार्यक्रम के बारे में शिविरार्थियों को बताया। भावेश प्रजापति टेक्निकल असिस्टेंट ने इंडस्ट्री में संचालित प्लास्टिक प्रोसेसिंग मशीन, इंजेक्शन मोल्डिंग मशीन, ब्लो मोल्डिंग मशीन आदि को कार्य करते हुए दिखाया। कार्यशाला का संचालन राजीव कुमार लिल्हरे, प्रबंधक तकनीकी, डॉ. दिनेश मेश्राम ट्रेनिंग ऑफिसर एवं रजनीश पांडेय के द्वारा किया गया। महाविद्यालय की एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ.डेजी कुजूर ने सिपेट प्रबंधन का आभार जताया। शिविर नायिका अमरावती, आरती साहू, शिविर सहायिका श्रद्धा जांगड़े, दल नायिका दीपिका चंद्रा, रानी वर्मा, किरण बंजारे और प्रभा यादव का योगदान रहा।

पालिका अध्यक्ष रतन की कुर्सी रहेगी या जाएगी, फैसला 22 को होगा

खेमाबंदी तेज

भाजपा के द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर होगा मतदान

कोरबा-कटघोरा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। नगर पालिका कटघोरा में कांग्रेस के अध्यक्ष रतन मित्तल की कुर्सी रहेगी या जाएगी, इस पर 22 दिसंबर को फैसला होगा। विपक्ष के द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर कलेक्टर सौरभ कुमार के द्वारा 22 दिसंबर को दोपहर 12 बजे मुख्य नगर पालिका परिषद कटघोरा कार्यालय के सभाकक्ष में कार्यवाही विधिवत संपन्न कराई जाएगी। इसके साथ ही कटघोरा पालिका के सियासी गलियारे सहित नगर में चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है कि रतन मित्तल अपनी कुर्सी बचा पाएंगे या कुर्सी से हाथ धोना पड़ेगा। भाजपा ने उन्हें पद से हटाने के लिए खेमाबंदी तेज कर दी है।

नगर पालिका परिषद कटघोरा में कुल 15 पार्षदों में अध्यक्ष रतन मित्तल को मिलाकर कांग्रेस के 7, भाजपा के 7 और 1 निर्दलीय पार्षद हैं। अभी अगस्त माह में रतन मित्तल के कामकाज के तौर तरीकों पर आपत्ति दर्ज कराते हुए भाजपा के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाने हेतु आवेदन कलेक्टर को सौंपा गया था। यह आवेदन लंबित था जिस पर अब विधानसभा चुनाव संपन्न होने के बाद बदली सत्ता की बयार में 22 दिसंबर को फैसला होगा। कलेक्टर सौरभ कुमार ने इस संबंध में छत्तीसगढ़ नगर पालिका अधिनियम 1961 के तहत रतन मित्तल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव के अनुसरण में अधिनियम की धारा 43 क के अधीन अविश्वास प्रस्ताव के लिए 22 दिसंबर को दोपहर 12 बजे मुख्य नगर पालिका परिषद कार्यालय के सभाकक्ष में कारवाई तय करने की सूचना जारी की है।

भाजपा के पास 11 पार्षदों का आंकड़ा

कांग्रेस और भाजपा के 7-7 पार्षद और एक निर्दलीय को मिलाकर 15 में से 11 पार्षदों को अपने पक्ष में होने का दावा भाजपा का है। नाम न छापने की शर्त पर एक भाजपा नेता ने बताया कि रतन मित्तल को 3 से 4 वोट ही प्राप्त होंगे और इस बार वे अपनी कुर्सी नहीं बचा पाएंगे। इस नेता की मानें तो भाजपा के 7 पार्षद के अलावा कांग्रेस का एक पार्षद उनके खेमे में है जिसने विधानसभा चुनाव में भी पुरुषोत्तम कंवर के विरुद्ध खुलकर काम किया। कांग्रेस के 2 और पार्षद रतन मित्तल के विरोधी हैं और उनका भी समर्थन प्राप्त होने का दावा किया गया है। इस तरह 11 पार्षदों का आंकड़ा भाजपा के पास बना बनाया है।

रतन को झटका, पार्षद शैल ने की भाजपा में वापसी

अगस्त में जब रतन मित्तल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव का आवेदन दिया गया तब आनन-फानन में अपने पक्ष में माहौल बनाने के लिए जोड़-तोड़ शुरू हुआ। कवायदों के बीच भाजपा की वार्ड-12 सरदार पटेल नगर की पार्षद शैलबाई आर्मो और उनके पति कमलेश्वर आर्मो ने कांग्रेस के प्रति निष्ठा जाहिर की और तत्कालीन विधायक पुरुषोत्तम कंवर, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष राजीव लखन पाल ने इन्हें पार्टी में प्रवेश करा कर कमलेश्वर को पद भी सौंप दिया। इसके 4 महीने बाद आज शैल आर्मो व कमलेश्वर ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा में प्रवेश कर लिया। इस संबंध में अपना त्याग पत्र कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष को दे दिया है। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष राजकुमार अग्रवाल, नेता प्रतिपक्ष अर्चना अग्रवाल, भाजपा मंडल अध्यक्ष धन्नू प्रसाद, मंडल महामंत्री अभिषेक गर्ग, राजेन्द्र टंडन, सुनील खाण्डे, जय गर्ग, अक्षय गर्ग, समजीत सिंह व अन्य के समक्ष पति-पत्नी ने पुन- प्रवेश किया।

स्कूल प्रबंधन ने अब महापौर को बनाया मुख्य अतिथि

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। निर्मला हायर सेकेंडरी स्कूल कोसाबाड़ी कोरबा का 48वां वार्षिक उत्सव शनिवार को धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महापौर राजकिशोर प्रसाद थे। गेस्ट ऑफ ऑनर बालको के प्रमुख सुरक्षा अधिकारी अवतार सिंह थे। इन्होंने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम को लेकर स्कूल प्रबंधन के द्वारा बड़ी चूक हो गई थी जिसमें राजकिशोर प्रसाद को विशिष्ट अतिथि बना दिया गया था। इस मामले में समाचार प्रकाशन के बाद स्कूल प्रबंधन हरकत में आया और त्रुटि को सुधारते हुए महापौर राजकिशोर प्रसाद को मुख्य अतिथि बनाते हुए आमंत्रण पत्र वितरित किया। विद्यालय की प्राचार्या सोना मेरी एवं प्रबंधक रेन्सी मेरी के नेतृत्व में 48वां वार्षिक उत्सव आयोजित हुआ जिसमें विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दी। वार्षिक उत्सव आयोजन में मुख्य तौर पर केरला से आई सुपीरियर जनरल रेव्ह. मदर रेक्सिया मेरी की उपस्थिति रही और उनका मार्गदर्शन विद्यालय परिवार को प्राप्त हुआ।

ब्रम्हमर्षि सूत की जयंती मनाई गई

कोरबा-कटघोरा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। कटघोरा विकासखंड के ग्राम पंडरीपानी में मंगलवार को ब्रम्हमर्षी सूत की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में ब्रम्हमर्षि सूत के तैल्यचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन किया गया।

सूत सारथी समाज के पदाधिकारी एवं समाज के लोगों द्वारा ब्रम्हर्षी सूत आरती एवं गायन-वादन किया गया। इसके पश्चात समाज के पदाधिकारीगण, सूत सारथी समाज विकास समिति कोरबा के जिला अध्यक्ष चंद्र सेन सारथी, कोरबा ब्लॉक से राजेश सारथी, कटघोरा ब्लॉक सचिव इंद्रसेन सिंह सारथी, दिलहरण सारथी के नेतृत्व में सामाजिक विकास हेतु बैठक में चर्चा की गई। समाज के संरक्षक जोहनराम सारथी, सलाहकार मुरारी लाल सारथी, लक्ष्मी प्रसाद, मिलु सारथी, राजाराम सारथी द्वारा ब्रम्हमर्षी सूत की जीवनी के बारे में उद्बोधन दिया गया। डी. लाल द्वारा शिक्षा को बढ़ावा देने, साथ ही समाज में एकजुट होकर समाज का विकास करने पर जोर दिया गया। इस दौरान सूत सारथी समाज की महिला मण्डल के अध्यक्ष वर्षा सारथी, महिला मंडल के सदस्यगण समाज के पदाधिकारी एवं गणमान्य जन, समाज के सचिव/महासचिव राजू प्रसाद सारथी आदि उपस्थित रहे।

बाईक दुर्घटनाग्रस्त, युवक की मौत

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। पिछली रात एक सड़क हादसे में बाईक दुर्घटनाग्रस्त होने से बाइक चालक युवक की दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी के अनुसार घटना बांकीमोंगरा थाना अंतर्गत की है। सिटी कोतवाली क्षेत्र के वार्ड-4 देवांगनपारा के आदिले मोहल्ला में रहने वाले व एसईसीएल मानिकपुर परियोजना में कार्यरत आनंद खाण्डे का युवा पुत्र जशवंत खांडे उम्र लगभग 22 वर्ष अपनी मोटरसायकल से किसी कार्यवश बांकीमोंगरा गया हुआ था। रास्ते में वह खुद बाईक से गिरकर हादसे का शिकार हो गया। उसे एसईसीएल की विभागीय अस्पताल बांकीमोंगरा में भर्ती कराया गया था जहां मौत हो गई। युवक की पहचान उपरांत सूचना परिजनों को दी गई। परिजन अस्पताल पहुंचे। अस्पताली मेमो के आधार पर बांकीमोंगरा पुलिस के द्वारा मर्ग कायम कर वैधानिक कार्रवाई व पोस्टमार्टम उपरांत शव आज परिजनों के सुपुर्द किया गया। यशवंत अपने पीछे माता-पिता, भाई-बहन सहित भरा-पूरा परिवार रोता-बिलखता छोड़ गया। इस दुःखद घटना से परिजनों व शुभचिन्तकों सहित आदिले मोहल्ला में शोक व्याप्त है। गमगीन माहौल में यशवंत खांडे का अंतिम संस्कार स्थानीय मुक्तिधाम में किया गया।

कन्या महाविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता आयोजित

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय में आंतरिक परिवाद समिति के तत्वाधान में विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता (महिला उत्पीड़न समस्या एवं समाधान) विषय पर एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित थी। यह प्रतियोगिताएँ विशेषत- महाविद्यायलयीन छात्राओं को महिला उत्पीड़न विषय पर जागरूक करने एवं जानकारी प्रदान करने तथा शासकीय विधिक सहायता से अवगत कराने के लिए आयोजित की गई। प्रतियोगिता में कला, विज्ञान, वाणिज्य सभी संकायों की छात्राओं की भागीदारी रही।

गौ सेवकों की शिकायत पर पशु तस्कर पकड़ाए, एफआईआर दर्ज

कोरबा-रजगामार, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। ग्रामीण रास्ते से मवेशियों को हकाल कर बूचड़खाने ले जा रहे पशु तस्करों के विरुद्ध अपराध दर्ज कर लिया गया है। इस मामले में चार लोगों को आरोपी बनाया गया है।

इस मामले में गौ सेवक अनिल चौरसिया ने बताया कि रजगामार चौकी क्षेत्र के ग्राम केसला के रास्ते पशु तस्करों के द्वारा बूढ़े व जवान किस्म के 35 नग मवेशियों को मारते-पीटते, हकालते हुए भूखे-प्यासे लेकर पत्थलगांव के रास्ते बूचड़खाना ले जाने की सूचना पुलिस को दी गई थी। रजगामार पुलिस ने गौसेवक दिलीप यादव की सूचना पर ग्राम केसला मार्ग में पहुंचकर मवेशियों को ले जा रहे लोगों से पूछताछ की। पत्थलगांव के रास्ते इन्हें बूचड़खाना ले जाने की जानकारी मिलने और अनिल चौरसिया के द्वारा पशु तस्करों के विरुद्ध कार्यवाही करने की मांग से उच्च अधिकारियों को अवगत कराया गया। मौके पर गौ सेवक मनोज साव, अरुण शर्मा उर्फ गुल्लू, होमेश, लक्ष्मी श्रीवास, सुनील चौरसिया, बाल्मीकि यादव,सत्यम, स्वयं सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण भी एकत्र हो गए थे। पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र शुक्ला के निर्देश पर रजगामार चौकी प्रभारी राकेश सिंह के द्वारा दिलीप यादव की रिपोर्ट पर छत्तीसगढ़ कृषक पशु परीक्षण अधिनियम की धारा 4,6 व 10 के तहत मवेशियों को ले जा रहे जीतू राम ,मुन्ना जगत, धनुषधारी, बसंत पुरी के विरुद्ध अपराध दर्ज किया गया। मवेशियों को देखरेख के लिए स्थानीय गौशाला के सुपुर्द किया गया है। गौ सेवक अनिल चौरसिया ने त्वरित संज्ञान में लेकर की गई कार्यवाही के लिए जिला पुलिस प्रशासन और रजगामार चौकी प्रभारी के प्रति आभार व्यक्त किया है।

स्टारेक्स मिनरल्स कर रहा मजदूरों का शोषण, 5 दिन से हड़ताल

निराकरण न होने पर 20 दिसंबर से अनिश्चितकालीन धरना व गेट जाम

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। एसईसीएल की सरायपाली खदान में कार्यरत ठेका कंपनी स्टारेक्स मिनरल्स द्वारा वहां कार्यरत मजदूरों का लगातार शोषण किया जा रहा है। इसके विरोध में प्रदर्शन करते हुए काम बंद किया गया है। शोषण के सबंध में कोरबा क्षेत्र के महाप्रबंधक को ज्ञापन सौंप कर निराकरण की मांग की गई है।

कोयला मजदूर पंचायत (एचएमएस) के केन्द्रीय उपाध्यक्ष गजेन्द्र पाल सिंह तंवर ने एसईसीएल कोरबा क्षेत्र के महाप्रबंधक को सौंपे ज्ञापन में कहा है कि कोरबा एरिया के सरायपाली खदान में कार्यरत स्टारेक्स मिनरल्स कंपनी द्वारा वहां कार्यरत मजदूरों का लगातार शोषण किया जा रहा है। कई बार संगठन के द्वारा इस संबंध में पत्र व्यवहार किया गया और धरना प्रदर्शन किए गए। प्रबंधन के साथ कई बैठकें भी हुई। उसके बावजूद भी वर्तमान में कंपनी के द्वारा लगातार शोषण जारी है। पिछले पांच दिनों से वहां का कार्य पूर्ण रूप से बंद है और यह लगातार जारी रहेगा। मजदूरों की मांगों को कंपनी और एसईसीएल प्रबंधन के द्वारा समय रहते संज्ञान में लेकर पूरा नहीं किया गया तो संगठन द्वारा मजबूर होकर 20 दिसंबर से कोरबा मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय के सामने अनिश्चितकालीन धरना, प्रदर्शन व गेट जाम के लिये बाध्य होगा, जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी एसईसीएल प्रबंधन की होगी।

मजदूरों की मुख्य मांगें

सभी कर्मचारियों को एचपीसी वेतनमान भुगतान और पे-स्लीप प्रदाय किया जाए। 42 कोयला ड्राईवरों को जिन्हें पीएफ का भुगतान नहीं किया जाता उन्हें एचपीसी वेतनमान से जोड़ा जाये। कोल इंडिया द्वारा बढ़े हुए वेतनमान दर पर इनका भुगतान किया जाए। सभी कर्मचारियों को 26 दिन की ड्यूटी सुनिश्चित की जाए और काम से निकाले गए मजदूरों की बहाली करें।

कोयला कामगारों का संशोधित एचआरए 1 जून से लागू

कोरबा, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। कोयला कामगारों का रिवाइज हाउस रेंट अलाउंस (एचआरए) 1 जून 2023 से लागू होगा।

इस आशय की अधिसूचना जारी कर दी गई है। कामगारों के एचआरए में संशोधन को लेकर 14 जनवरी को दिल्ली में आयोजित हुई जेबीसीसीआई-11 की मानकीकरण समिति की पहली बैठक में चर्चा की गई थी। इस दौरान निर्णय लिया गया कि शहरी क्षेत्रों में कर्मचारियों को एचआरए का भुगतान एनसीडब्ल्यूए- 11 के संशोधित आधार पर जून 2023 से लागू किया जाएगा। यदि कोई कंपनी क्वार्टर कर्मचारी या पति या पत्नी को आबंटित किया गया है, जहां वे दोनों हैं, एक ही स्थान पर तैनात होने पर वे एचआरए के हकदार नहीं होंगे। कंपनी द्वारा उपलब्ध कराये गए आवास के अलावा किसी अन्य स्थान पर पति-पत्नी के एक साथ रहने की स्थिति में पति/पत्नी में से केवल एक ही एचआरए के भुगतान का हकदार होगा। इसी तरह कोयला कामगारों कापरिवर्तनशील महंगाई भत्ता (वीडीए) में बदलाव हुआ है। इसका लाभ कामगारों को 1 दिसंबर, 2023 से मिलेगा। इससे दो लाख से अधिक कामगारों को फायदा होगा। नया वीडीए कोल इंडिया और देश भर में फैली उसकी सहायक कंपनियों में लागू किया जाएगा। इसका प्रभाव यहां कार्यरत करीब ढाई लाख से अधिक कामगारों पर पड़ेगा। वीडीए में 3.10 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। जानकारी के मुताबिक हर तीन महीने में कामगारों के वीडीए में बदलाव किया जाता है।

72 साल निभाया दांपत्य जीवन, मौत भी एक साथ ले गई

एक साथ निकली अंतिम यात्रा, एक ही चिता पर अंतिम संस्कार

कोरबा-दीपका, 09 दिसंबर (देशबन्धु)। कोरबा-पश्चिम क्षेत्र स्थित प्रगति नगर दीपका में पति की मौत के 24 घंटे के अंदर ही पत्नी की भी जान चली गई। इसके बाद दोनों की शव यात्रा साथ निकली और अंतिम संस्कार एक ही चिता पर किया गया।

प्रगति नगर निवासी 95 वर्षीय वशिष्ठ नारायण सिन्हा मूलत- बिहार के निवासी थे। पिछले कई वर्षों से वो दीपका में रह रहे थे। लंबे समय से बीमार चल रहे वशिष्ठ नारायण का इलाज के दौरान 6 दिसंबर बुधवार को दोपहर करीब 3 बजे निधन हो गया। उनकी पार्थिव देह को गेवरा स्थित विभागीय अस्पताल की मर्च्युरी में रखा गया था। वशिष्ठ नारायण के निधन के बाद बिहार से आने वाले परिजन का इंतजार किया जा रहा था। सभी परिजन गुरुवार को दीपका पहुंचे। अंतिम संस्कार की तैयारी चल रही थी कि इसी बीच वशिष्ठ नारायण की धर्मपत्नी 84 वर्षीय रमावती देवी ने भी दम तोड़ दिया। उन्हें पति की मौत का गहरा सदमा लगा और प्राण छूट गए।

दोनों 72 वर्षों के दांपत्य जीवन के सफर में साथ-साथ चले और जब प्राण छूटे तो इस वक्त भी साथ निभाया। इस घटना से सिन्हा परिवार पर दुःखों का दोहरा पहाड़ टूट पड़ा। इस जोड़े को दीपका कोयलांचल क्षेत्र में गमगीन माहौल में अंतिम विदाई दी गई। एसईसीएल की दीपका परियोजना में सीनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत पुत्र संतोष कुमार सिन्हा ने बताया कि उनके माता-पिता का विवाह सन् 1951 में हुआ था। 72 सालों में दोनों के बीच कभी लड़ाई, झगड़ा या मनमुटाव नहीं देखा। उनकी कमी कभी भी पूरी नहीं की जा सकती।

सार-संक्षेप

पेलमा में रेलवें लाइन का सर्वे करने गई टीम को पेलमा के ग्रामीणों ने खदेड़ा

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। एसईसीएल की ठेकेदार कंपनी द्वारा घरघोड़ा क्षेत्र के पेलमा गांव में रेलवे लाईन का सर्वे करने पहुंची दो सदस्यीय टीम को स्थानीय ग्रामीणों ने ग्राम सभा के अनुमति के बगैर सर्वे की बात को लेकर आपत्ति जताते हुए गांव से खदेड़ दिया है। आज एसईसीएल की ठेकेदार कंपनी द्वारा रायगढ़ जिले के तमनार तहसील के ग्राम पंचायत पेलमा में रेलवें लाइन का सर्वे करने दो लोगों की टीम पहुंची इसकी जानकारी गांव को लोगो को मिली ग्रामीणों को मिली गांव के लोगों ने चारों तरफ से घेर लिया और दोनों सर्वे करने बाले को पकड़कर ग्राम सभा में पेश किया गया और पूछताछ किया गया साथ ही जानकारी ली गई कि ग्राम सभा की अनुमति वन विभाग की अनुमति ली गई जो नहीं थी इसके बाद उनके अधिकारियों को बुलाया गया उनको भी किसी भी प्रकार की जानकारी नहीं थी इसके बाद गांव में बिना अनुमति की न घुसने की हिदायत दी गई और छोडने पर विचार किया गया।

ट्रेलर मालिक संघ मिलकर की 31 टन कोयला की अफरा-तफरी

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। छाल पुलिस द्वारा 31 टन कोयले की अफरा तफरी के मामले में फरार ट्रेलर ड्रायवर आरोपी प्रमेन्द्र साहू पिता स्व. बलराम साहू उम्र 22 वर्ष निवासी ग्राम मोहतराई, थाना रतनपुर जिला बिलासपुर को मुखबीर सूचना पर कल बिलासपुर रेल्वे स्टेशन के पास दबिश देकर पकड़ा गया। आरोपी प्रमेन्द्र साहू से पूछताछ करने पर उसने ट्रेलर मालिक पंकज कुमार साहू के साथ मिलकर 07 जुलाई 2022 को ट्रेलर क्र. सी जी-10- ए.जी.-7156 में खुली खदान छाल से बेनिफिकेशन घुटकु बिलासपुर भेजे गये 31 टन कोयला को अन्यत्र बिक्री कर देना बताया। कोयले की अफरा तफरी को लेकर ट्रांसपोटर सचिन गुप्ता द्वारा 10 जनवरी को थाना छाल में आवेदन देकर रिपोर्ट दर्ज कराया गया था। मामले की विवेचना दरम्यान आरोपी ट्रेलर मालिक को छाल पुलिस द्वारा थाना छाल में पंजीबद्ध अमानत में खयानत के अपराध में 17 मार्च को गिरफ्तार कर रिमांड पर भेजा गया है। आरोपी ट्रेलर ड्रायवर प्रमेन्द्र साहू फरार था, आरोपी प्रमेन्द्र साहू ने हिस्से में मिले रकम से खर्च के बाद बचे शेष रकम 1500 रूपये की जप्ती कर आरोपी को कल गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

दुकान से बाहर शेड निकालने वालों पर निगम ने की कार्रवाई

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। निगम कमिश्नर के निर्देशानुसार निगम के तोड़ू दस्ता ने अतिक्रमण करने वालों पर कार्रवाई की है। सुबह तोड़ू दस्ता पुराना शनि मंदिर से संजय कॉम्प्लेक्स श्याम मंदिर तक पहुंचा। यहां दुकानदारों द्वारा दुकान की सीमा से बाहर शेड निकालने वालों के अतिक्रमण को तोड़ा। पहले इन दुकानदारों को समझाइश दी जा चुकी थी। इसके बाद मुनादी कर सूचना भी दी गई थी। स्वयं से अतिक्रमण हटाने की समझाइश और फिर नगर निगम द्वारा कार्रवाई की चेतावनी भी दी थी। इसके बाद भी दुकानदारों ने स्वयं से शेड नहीं हटाया और दुकान के बाहर सामान बढ़ाकर अतिक्रमण कर लिया था। इसी तरह रामनिवास टॉकिज रोड पर भी दुकानदारों ने दुकान के बाहर सड़क पर सामान निकालकर कब्जा कर और यातायात को बाधित कर दुकानदारी चला रहे थे। इन दुकानदारों पर भी जब्ती की कार्रवाई की गई।

चुनाव में पार्टी विरोधी काम करने वाले कार्यकर्ताओं पर कार्रवाई की मांग

मनेन्द्रगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। एम सी बी कांग्रेस जिलाध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव, पूर्व विधायक गुलाब कमरो, मनेन्द्रगढ़ से कांग्रेस प्रत्याशी रहे अधिवक्ता रमेश सिंह ने पत्रकार वार्ता लेकर कांग्रेस से विधायक रहे डॉ विनय जायसवाल पर पार्टी विरोध में काम करने का आरोप लगाया। इस मौके पर कांग्रेस नेताओं ने बड़े नेताओं के विरुद्ध टीका टिप्पड़ी करने वाले कांग्रेसी नेताओं पर पार्टी हाइकमान से कार्यवाही की मांग भी की। साथ ही स्थानीय स्तर पर पार्टी के साथ गद्दारी करने वाले लोगों पर कार्यवाही करने की बात कही। इस दौरान अधिवक्ता रमेश सिंह ने पूर्व विधायक पर गम्भीर आरोप लगाते हुए कहा कि कबाड़ शराब व सटोरियों के मामले में बदनाम थे डॉ विनय जायसवाल इसलिए उनकी टिकट काटी गई।साथ ही यह भी कहा कि चन्दन यादव को सात लाख रु देने का आरोप निराधार है यदि रु दिए थे तो उस समय क्यों नहीं बोले। अधिवक्ता रमेश सिंह के निवास में आयोजित प्रेस वार्ता में का विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी रहे अधिवक्ता रमेश ने कांग्रेस के पूर्व विधायक डॉ विनय जायसवाल पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि डॉक्टर विनय जायसवाल ने खुलेआम भारतीय जनता पार्टी का काम किया है उन्हें तत्काल पार्टी से निकलना चाहिए नहीं तो पार्टी कभी इस क्षेत्र में मजबूत नहीं होगी। वहीं भरतपुर विधानसभा से कांग्रेस के विधायक रहे गुलाब कमरों ने भी डॉ विनय पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्होंने गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के उम्मीदवार के लिए राशि की व्यवस्था की साथ ही पार्टी के विरोध में खुलकर काम किया। कांग्रेस जिला अध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव ने इस मौके पर कहा कि जिस तरह से डॉक्टर विनय जायसवाल ने उन पर आरोप लगाए वह पूरी तरह से गलत है डॉ विनय जायसवाल ने जिस तरह का कार्य विधानसभा चुनाव के दौरान किया है वह पूरी तरह से पार्टी विरोधी गतिविधि में आता है और उन्हें तत्काल कांग्रेस से बाहर निकलना चाहिए और जिस तरह से वे पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ अनर्गल बयान बाजी कर रहे हैं वह पूरी तरह से निंदनीय है।

रायगढ़ के प्रतिभाओं का सम्मान गौरव का विषय - सुनील

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ के 26 प्रतिभाओं का 10 दिसम्बर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर का सम्मान मिलेगा, जिसमें रायगढ़ शहर से विभिन्न क्षेत्रों में विशेष दक्षता रखने वाले 12 प्रतिभाओं को भी नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। उक्त सम्मानित प्रतिभाओं को रायपुर मंदिर के उपाध्यक्ष व रामदास द्रौपदी फाउंडेशन के चेयरमैन सुनील रामदास ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमारा रायगढ़ कला संस्कृति की नगरी है और यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है। विदित हो की भारतीय दलित साहित्य अकादमी के द्वारा प्रतिवर्ष राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मान विशेष प्रतिभाओं को प्रदान किए जाते हैं। इस तारतम्य में इस वर्ष 2023 को भी छत्तीसगढ़ राज्य से 26 विशेष प्रतिभाओं को नेशनल अवार्ड दिया जा रहा है, जिसमें रायगढ़ शहर से 12 विशेष दक्षता अंतर्गत लोक गायक दीपक आचार्य को लोक गायन हेतु, राम नंदन यादव को पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन हेतु, भजन गायक लोक कलाकार विजय शर्मा को लोक कला के संवर्धन हेतु, बेस्ट टीचर के लिए विकास कुमार सिंह को, मशरूम उत्पादन में विशेष दक्षता हेतु संतोष कुमार शर्मा को, गायन हेतु कमलेश गोठेवाल को, तबला वादन के लिए विनोद चैहान, आर्ट एंड क्राफ्ट कला के लिए सुरेंद्र निषाद को, लोकेश गुप्ता को गायन, अभिनय व लेखन के लिए और गौ माता सुरक्षा संवर्धन हेतु शिवराज कुमार चैहान को तथा गायन हेतु गीतिका वैष्णव को व नृत्य एवं गायन में दक्षता हेतु अनु तिवारी को सम्मानित किया जाना है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से प्रधानमंत्री ने वर्चुअल माध्यम से की बात

अम्बिकापुर 09 दिसंबर (देशबन्धु)। अम्बिकापुर: कृषि विज्ञान केन्द्र में शनिवार 9 दिसंबर 2023 को विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल माध्यम से केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं के लाभार्थियों से बात की। इस दौरान युवाओं से बात करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि मजबूत इच्छाशक्ति के बलबूते कठिन से कठिन कार्य किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि शासन ने जो योजनाएं बनाई हैं, उनका उद्देश्य अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा अभियान के तहत योजनाओं के प्रति लोगों को जागरूक करने जागरूकता वाहन चलाया जा रहा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का जागरूकता वाहन इन दिनों गांव-गांव और गली-गली जा रहा है और लोगों को सरकार की योजना के बारे में बताया जा रहा है जिससे लोगों को इसका लाभ मिले। प्रधानमंत्री ने इस दौरान विभिन्न राज्यों के लाभार्थियों से संवाद भी किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पूरे देश में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकार की प्रमुख योजनाओं का पूर्ण लाभ सभी लक्षित लाभार्थियों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचे। उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा ऐसे लोगों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बनी है, जिससे लोगों को कम समय में ही विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, आयुष्मान कार्ड, मुद्रा योजना ने लोगों के जीवन में बदलाव लाया है, इससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया है। स्वसहायता समूह से जुड़कर महिलाएं नये रोजगार सृजित कर अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर रहीं हैं। युवा वर्ग कौशल उन्नयन कर स्वरोजगार के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने नमो ड्रोन दीदी के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि यह योजना आगामी समय में कृषि व महिलाओं के सशक्तिकरण के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका निभाएगा। ड्रोन के माध्यम से उन्नत कृषि व आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया जाएगा तथा ड्रोन के संचालन से महिलाएं स्वयं को आर्थिक रूप से सशक्त करेंगी। इस दौरान उन्होंने फिट इंडिया मुवमेंट के संबंध में भी चर्चा की और सभी वर्ग के लोगो को फिट रहने प्रोत्साहित किया। उक्त वर्चुअल कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से देशभर से लोग जुड़े रहे। जिले के कृषि विज्ञान केन्द्र अजिरमा में उक्त वर्चुअल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें नगर निगम आयुक्त श्री अभिषेक कुमार, उप संचालक पंचायत श्री यशपाल प्रेक्षा सहित अन्य जनप्रतिनिधि, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी, कर्मचारी सहित अन्य विभागों के संबंधित अधिकारी व बड़ी संख्या में किसान मौजूद थे। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र अजिरमा के वैज्ञानिकों द्वारा उपस्थित किसानों को उन्नत कृषि व जैविक खेती के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा उपस्थित लोगों का नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच कर दवाईयां प्रदान की गई।

विकसित भारत बनाने में सबकी सहभागिता जरूरी

कोरिया 09 दिसंबर (देशबन्धु)। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम के तहत देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ग्रामीणों के साथ वीडियो काफेन्स के माध्यम से जुड़े एवं हितग्राहियों से सीधे वार्तालाप किया। कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विकसित भारत बनाने के लिए सबकी सहभागिता जरूरी है। मजबूत इच्छाशक्ति के बलबूते कुछ भी किया जा सकता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी ने आज वर्चुअल माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से सवाद की। प्रधानमंत्री ने कहा कि पूरे देश में विकसित भारत सकल्प यात्रा निकाली जा रही है जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकार की प्रमुख योजनाओं का पूर्ण लाभ सभी लक्षित लाभार्थियों तक समयबद्ध तरीके से पहचे। उन्होंने कहा कि विकसित भारत सकल्प यात्रा ऐसे लोगों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बनी हैए जिससे लोगों को कम समय में हो विभिन्न योजनाओं का लाभ मिल रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र सलका में आयोजित कार्यक्रम में कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने विकसित भारत सकल्प यात्रा की जानकारी सभी से साझा की उन्होंने बताया की इस कार्यक्रम की शुरुआत 15 नवंबर 2023 से हो चुकी है और यह यात्रा उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी जो भारत सरकार की योजनाओं से अब तक वंचित हैं उन्हें इस अभियान से लाभान्वित किया जाएगा। जिले के हर ग्राम पंचायत में आईईसी वैन में लगे एलईडी और विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को भारत सरकार की योजनाओं से अवगत कराया जायेगा ज्ञात हो कि कोरिया जिले को 4 आईईसी वैन दी गई है। यह वैन प्रतिदिन 2 विभिन्न ग्राम पंचायतों का कवरेज करेगी जिसकी जानकारी ग्रामीणों को 3 दिन पहले दी जाएगी ताकि वे इस अभियान का ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा सकें और विकसित भारत के सकल्प में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

सीएम की रेस से दूर नालंदा परिसर के छात्रों के मध्य पहुंचे ओपी चैधरी

पांच सौ युवाओं का किया मार्गदर्शन

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। सोशल मीडिया मे ओपी द्वारा नालंदा परिसर में छात्रों से मुलाकात का विडियो पोस्ट किए जाने के बाद मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार माने जा रहे रायगढ़ विधायक ओपी चैधरी इन सियासी चर्चाओं से दूर रहते हुए युवाओं के बीच पहुंचे। विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं को मोटिवेट करना ओपी का सबसे पसंदीदा काम है।

चुनावी व्यस्तता के कारण लंबे समय से ओपी युवाओं के बीच नहीं जा पाए थे, ऐसे में कल जैसे ही उन्हें समय मिला वे युवाओं के बीच पहुंच गए। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे करीब 500 युवाओं का मार्गदर्शन करने का साथ ही उन्होंने अपना अनुभव भी साझा किया। ओपी ने सोशल मीडिया में यह जानकारी साझा करते हुए बताया कि आज कुछ वक्त निकालकर युवा भाई-बहनों के साथ उनके बेहतर भविष्य के लिये

मार्गदर्शन किया। यह बताना लाजमी होगा कि ओपी इस बार रायगढ़ विधानसभा सीट से रिकॉर्ड मतों से चुनाव जीते हैं।

युवाओं को मोटिवेट करने के बाद ओपी रात में नालंदा परिसर पहुंचे। वहां भी विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं से मुलाकात करते हुए चर्चा की। रायपुर का नालंदा परिसर ओपी के ही परिकल्पना की देन है। रायपुर कलेक्टर रहते उन्होंने सबसे बड़ी लाइब्रेरी नालंदा परिसर का निर्माण कराया था। नालंद परिसर प्रदेश भर में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे यूवाओ के लिए बड़ा स्टडी सेंटर है। प्रतियोगी सहित अन्य परीक्षा की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए वहां काफी स्टडी मैटेरियल उपलब्ध है। पीएससी में चयनित 60 प्रतिशत से ज्यादा युवा नालंदा परिसर से जुड़े रहे हैं।

बजरमुड़ा कोल माइंस में 300 करोड़ रुपए मुआवजा बांटने में गड़बड़ी

जांच के लिए पहुंचे कमिश्नर

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। बजरमुडा कोल माइंस के मुआवजे वितरण मामले में जांच तेज हो गई है, बुधवार की रात को राजस्व विभाग के संचालक रमेश शर्मा सहित राजस्व अफसरों की टीम के साथ आरआई स्तर के 8 अफसरों एवं कर्मचारियों की टीम जांच करने के लिए रायगढ़ पहुंच गई है। यह टीम दो दिनों से कोल माइंस प्रभावित गांव बजरमुड़ा, डोलनारा, करवाही में यह टीम जांच करने के लिए पहुंची है। गुरुवार को इसकी जांच शुरु की गई है। इस टीम आने के बाद गुरुवार को वहां पर स्थानीय स्तर के राजस्व अफसरों ने राजस्व निरिक्षको के 13 लोगों का दल बनाया गया है। कहा जा रहा हैं कि शुक्रवार को भी इसकी जांच की जाएगी। संचालक ने इसके लिए बकायदा बिलासपुर और रायपुर से भी राजस्व निरिक्षको जांच में लेकर आया है, रायगढ़ के पटवारियों को भी शामिल किया गया है।

दरअसल वहां पर छत्तीसगढ़ पॉवर जनरेशन को आबंटित कंपनी को तमनार ब्लॉक के बजरमुड़ा में कोलमाइंस का आबंटन हुआ है, तीन गांवों में करीब 300 करोड से ज्यादा का

मुआवजे का वितरण किया गया है। इसमें व्यापक तौर पर गड़बडियां करने की बात सामने आई है, तीनों गांवों में करीब 129 हैक्टयर जमीन को कोल माइंस के लिए लिया गया है, हालांकि अभी वहां पर बजरमुडां में माइंस से दो साल से प्रोडक् शन दिया गया है।

व्यापक गड़बडियों को देखते हुए किसानों का कहना हैं कि कुछ इलाकों में में मुआवजे का पैसा भुगतान नहीं हो पाया है और बजरमुडा में किसानों का मुआवजे का वितरण किया जा चुका है, इसे 2020-2021 में मुआवजे का वितरण हुआ है।

गडबडी आई सामने

यहां पर मुआवजा वितरण में व्यापक गड़बडियां सामने आई है, जिसमें एक फसली जमीन को दो फसली जमीन बताकर इसमें व्यापक गडबडियां करने के साथ जिस जमीन पर बोर खनन नहीं हुआ था, वहां पर बोर बता दिया गया। वही मुआवजे पाने के लिए पतली दीवार बनाने के साथ आरआई, पटवारियों द्वारा मुआवजे का आंकलन अधिक कर की बड़ी बड़ी बिल्डिंग निर्माण कराकर व्यापक गड़बडियां की गई है। कृषक जमीन पर कॉम्लेक्स में निर्माण करा दिया गया है, मुआवजे के लिए गड़बडिया सामने आने के बाद सामाजिक संगठ्नों के लोगों और कुछ लोग इसकी शिकायत मंत्रालय स्तर पर राजधानी में की गई थी। इसके बाद ठोस शिकायत किया गया था, जिसमें मंत्रालय से संज्ञान लिया हैं कि कमेटी बनाया गया है। राजस्व विभाग के आयुक्त को इसके जांच जिम्मेदारी सौपी है, कहा जा रहा हैं उस समय के तत्कालिन एसडीएम और तहसीलदार सहित राजस्व कर्मचारियों, अफसरों की संलिप्ता है। अब इसकी जांच व्यापक तौर शुरु कर दिया गया है।

भाजपा कार्यकर्ताओ के परिवार जनों की मृत्यु पर पर ओपी ने जताया शोक

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। पार्टी कार्यकर्ताओ के परिजनों की मृत्यु पर शोक जताने रायगढ़ विधायक ओपी चैधरी उनके निवास पहुंचे और श्रद्धांजलि अर्पित की। रायगढ़ विधायक ओपी ने कहा दुख की इस घड़ी में भाजपा परिवार जनों के साथ है।

पुसौर मंडल एवम कोडातराई मंडल में निवास रत कार्यकताओं के निवास पहुंच कर परिवार जनों से मुलाकात कर शोक जताया। नवापारा निवासी भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व महामंत्री शिव गुप्ता के पिता स्वर्गीय मित्र भानु गुप्ता, भाजपा मंडल पुसौर छपोरा निवासी महिला मोर्चा अध्यक्ष खीर कुमारी डनसेना पति गोविंद राम डनसेना के ससुर स्वर्गीय माखनलाल डनसेना, रंगालपाली भाजपा कार्यकर्ता दिनेश शर्मा व उमेश शर्मा के माता स्वर्गीय गिन्नी देवी शर्मा के निवास पहुंच

कर ओपी ने श्रद्धांजलि देते हुए निधन पर शोक जताया। मृत आत्माओं को ईश्वर के चरणों में स्थान मिलने की प्रार्थना करते हुए परिवार जनों को दुख सहने की शक्ति प्रदान करने की कामना भी की है।

इस दौरान पुसौर मंडल अध्यक्ष त्रिनाथ गुप्ता, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष गौरांग साव, किसान मोर्चा प्रदेश कार्य समिति सदस्य घनश्याम पटेल, पिछड़ा वर्ग मोर्चा जिला महामंत्री मनोरंजन साहू, कोषाध्यक्ष दिलेश्वर जायसवाल, वरिष्ठ नेता श्रवण प्रधान, मंडल उपाध्यक्ष अशोक गुप्ता, पूर्व नगर पंचायत उपाध्यक्ष अभिमन्यु साहू, विकास अग्रवाल, जगन्नाथ डनसेना, युवा मोर्चा के अध्यक्ष रजत गुप्ता, विवेक गुप्ता, युवा नेता शशांक पांडे, बूथ अध्यक्ष सरोज प्रधान, गुलाब पटेल, सूरज पटेल, पूर्व जनपद उपाध्यक्ष जयलाल पटेल, बाघाडोला ग्राम पंचायत सरपंच लेकरु डेहरी, सुरेश डनसेना, सहित भाजपा के कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

स्कूल में जाम छलकाने वाला प्रधान पाठक सस्पेंड

जिला शिक्षा अधिकारी की कार्रवाई घरघोड़ा के जुनाडीह स्कूल का मामला

रायगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। जिले के घरघोड़ा क्षेत्र के ग्राम जुनाडीह में शिक्षा के मंदिर में जाम छलकाने वाले प्रधानपाठक धर्मेंद्र सिंह भाटिया को अंतत: जिला शिक्षा अधिकारी रायगढ़ ने सस्पेंड कर दिया है। अपने आदेश में जिला शिक्षा अधिकारी ने डॉ मुलाहिजा में शराब पीने की पुष्टि सम्बन्धी रिपोर्ट थाना प्रभारी घरघोड़ा द्वारा दिये जाने के साथ संकुल प्रभारी एवं शालाविकास समिति जुनाडीह द्वारा दिए प्रतिवेदन के आधार पर विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी घरघोड़ा द्वारा दिये गए प्रस्ताव के आधार पर शराब सेवन कर स्कूल आने के आरोप को प्रमाणित मानते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए विकासखंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय तमनार अटैच कर दिया

है। नियमानुसार उन्हें जीवन निर्वाह भत्ते की पात्रता होगी।

शराबखोरी के मामले में पहले भी हो चुकी है कार्रवाई

सहायक शिक्षक से प्रमोशन पाकर प्रधान पाठक बने धर्मेंद्र सिंह भाटिया आदतन शराबखोरी में संलिप्त रहते है पूर्व में भी शराब पीकर स्कूल आने के मामले में इन्हें विभाग ने सस्पेंड किया था मगर दिखावे की कार्यवाही के चंद दिनों में भाटिया की बहाली हो गयी और तो और उन्हें प्रमोशन भी दे दिया गया। प्रमोशन के बाद भी मयकशी की आदत न छूटने और ग्रामीणों द्वारा लगातार शिकायतों के बाद अब कही जाकर फिर सस्पेंशन की कार्यवाही हो पाई है।

पुलिस की सूचना का संस्पेंशन ऑर्डर में जिक्र, तो मामला क्यों नही हुआ दर्ज

जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जारी सन्सपेशन आर्डर में थाना घरघोड़ा द्वारा कराए गए डॉ मुलाहिजे में शराब सेवन करने की पुष्टि की रिपोर्ट का जिक्र है। इसका मतलब घरघोड़ा पुलिस ने ग्रामीणों की शिकायत पर जब प्रधानपाठक को स्कूल से उठाया तो उसका शासकीय अस्पताल में मुलाहिजा भी करवाया जिसमे नशे की पुष्टि हुई ऐसे में घरघोड़ा पुलिस ने मामला दर्ज करने के बजाय केवल विभाग को सूचना देकर अपने कर्तव्यों की इति श्री क्यों मान लिया गया ये भी विचारणीय प्रश्न है।

नगर निगमायुक्त ने पौनी पसारी का किया निरीक्षण

सब्जी और फल विक्रेताओं को किया गया शिफ्ट

अम्बिकापुर 09 दिसंबर (देशबन्धु)। अम्बिकापुर: कलेक्टर श्री कुंदन कुमार के निर्देश पर और नगर निगमायुक्त श्री अभिषेक कुमार के नेतृत्व में शहरी व्यवस्था को दुरुस्त करने का अभियान चलाया जा रहा है। शनिवार को निगमायुक्त ने एसडीएम अम्बिकापुर के साथ आकाशवाणी चौक स्थित पौनी पसारी का निरीक्षण किया। चौक पर सड़क किनारे लगने वाले सब्जी और फल के दुकानों की वज़ह से

राहगीरों को आवागमन में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था जिसको दिखते हुए निगमायुक्त ने मौके निरीक्षण कर फल और सब्जी विक्रेताओं से बात की। इस दौरान उन्होंने बताया कि आकाशवाणी चौक के पास में पौनी पसारी में दुकानें बनी हैं। यहां पर प्रशासन के प्रयास से विक्रेताओं को समझाइश देकर फल और सब्जी विक्रेताओं को पौनी पसारी मार्केट के अंदर में शिफ्ट किया गया है। उन्होंने कहा कि विक्रेताओं की मांग पर पौनी पसारी में फ्लोरिंग और लाइट लगाई जायेगी। साथ ही आसपास के एरिया को सफाई रखने के लिए सफाई की टीम निर्देश दिए गए हैं। सब्जी विक्रेताओं ने बताया कि पौनी पसारी में एंट्री के लिए एक तरफ के सड़क की ओर से रास्ता दिया जाए जिस पर नगर निगम द्वारा प्लान तैयार कर रहा है। निगमायुक्त ने सभी सब्जी विक्रेताओं से पौनी पसारी के अंदर से दुकान संचालन को कहा है।

नगर निगम आयुक्त ने शहरवासियों से अपील की है कि जो भी लोग फल या सब्जी लेते हैं तो वह अंदर पौनी पसारी मार्केट के अंदर खरीदें, आप के सहयोग से ट्रैफिक जाम और अन्य दुर्घटना को रोका जा सकता है। उन्होंने बताया कि परिवहन विभाग से भी बात की गई है कि इस क्षेत्र में, जो गांधी चौक से आकाशवाणी चौक की एरिया में बस रूकती है, उन सभी को चौक में ना रोककर सभी बसों को पौनी पसारी के आगे रोका जाए। शहरी व्यवस्था को सुधारने फुटपाथ में लगे सभी ठेलो को भी हटाया जाएगा और उन सभी को व्यवस्थित किया जाएगा ताकि यातायात अच्छे से बना रहे। वहीं उन्होंने सभी सब्जी और फल विक्रेताओं से अपील करते हुए कहा कि पौनी पसारी में निर्धारित स्थल पर दुकान लगाएं, आदेश का पालन नहीं करने पर नगर निगम प्रशासन द्वारा सख्त कार्रवाई भी की जा सकती है।

सार-संक्षेप

अग्निवीर भर्ती शारीरिक दक्षता परीक्षा 16 को

सारंगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। भारतीय थलसेना (अग्निवीर) भर्ती रैली की अप्रैल में आयोजित ऑनलाइन सामान्य प्रवेश (सीईई) परीक्षा में उत्तीर्ण सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले के युवाओं के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा सहित अन्य भर्ती परीक्षाओं का आयोजन 16 दिसंबर 2023 को जांजगीर-चांपा जिले के पुलिस लाईन खोखराभांठा में आयोजित किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि रैली में सम्मिलित होने के लिए आवश्यक दस्तावेजों को लेकर जाना अनिवार्य है। जिसमें कक्षा 10वीं, 12वीं अंकसूची, टी.सी., निवास प्रमाण पत्र, फोटोयुक्त जाति प्रमाण पत्र, स्कूल या सरपंच द्वारा जारी फोटो युक्त चरित्र प्रमाण पत्र, सरपंच या पार्षद द्वारा जारी अविवाहित प्रमाण पत्र, अनुसूचित जाति, जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए सेंट्रल कास्ट सर्टिफिकेट, एनसीसी सर्टिफिकेट, नेशनल लेवल का खेल प्रमाण पत्र, सिंगल बैंक खाता, पैन कार्ड, आधार कार्ड, पुलिस स्टेशन का चरित्र प्रमाण पत्र, 10 रूपए के स्टाम्प पेपर में रैली भर्ती शामिल होने हेतु नोटरी द्वारा जारी शपथ पत्र, 03 माह के भीतर वाला सफेद या नीला बैकग्राउंड वाला 20 पासपोर्ट साईज फोटो, आधार लिंक्ड मोबाईल नम्बर, 10वीं, 12वीं ओपन स्कूल से पास हुए अभ्यर्थी बीईओ-डीईओ से सत्यापित मार्कशीट तथा ट्रैडमेन भर्ती के लिए केवल 08वीं की अंकसूची आदि शामिल है।

सहकारी समितियों से 4 लाख क्विंटल धान उठाव के लिए राइस मिलरों को डीओ जारी

सारंगढ़ 09 दिसंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर डॉ फरिहा आलम सिद्दीकी के निर्देश पर राज्य सहकारी जिला विपणन केंद्र (मार्कफेड) द्वारा राइस मिलरों के माध्यम से धान का उठाव प्रारंभ किया गया है। सहकारी समिति में धान खरीदी के बाद विगत एक सप्ताह से हल्की बारिश का मौसम था। समितियों को अब तक खरीदे गए धान का रखरखाव करना पड़ता है। इसके निराकरण के लिए अभी तक खरीदी किए गए 05 लाख क्विंटल धान में से 04 लाख क्विंटल का डीओ जारी किया जा चुका है। जिला विपणन अधिकारी मनोज यादव ने जानकारी दी है कि जिले के सहकारी समितियों में किसानों से किए गए धान खरीदी को राइस मिलरों द्वारा अब तक 12 हजार क्विंटल धान का उठाव किया गया है। जिले में अभी तक 99 राइस मिलर द्वारा रजिस्ट्रेशन कराया गया है।

बादल छटने के बाद शुरु हुआ ठंड का प्रकोप

जांजगीर, 09 दिसम्बर (देशबन्धु)। दो दिन पहले हुए बारिश के थमने के बाद जिला अब शीतलहर के आगोश में समाने लगा है। चक्रवाती तूफान के चलते आसमान में छाये बादल अब साफ होने लगे हैं। शनिवार को दिन भर धूप छांव का सिलसिला बना रहा दसके साथ ही शीतलहर शुरू होने का अनुमान हैं। इसको लेकर स्वास्थ्य विभाग भी अलर्ट मोड पर है। मौसम में बदलाव के चलते अस्पताल में सर्दी-खांसी, जुकाम, बुखार के मरीजों की संख्या सामान्य दिनों के मुकाबले बढने लगी है।

चक्रवाती तूफान का असर के कारण जिले में बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा। सर्द हवाओं के कारण पारा तेजी से लुढ़क गया, लोग ठंड से बचने के लिए अलाव का सहारा लेने मजबूर हुए। दिन में भी लोग गर्म कपड़ों के लबादे में नजर आए। साथ ही कई लोग बारिश से बचने के लिए रेनकोट में भी नजर आए। मौसम विभाग के अनुसार 4 दिसंबर को दिन का पारा 28.8 डिग्री था, जो 8 दिसंबर को 18.8 पर पहुंचा, तो न्यूनतम पारा भी तीन दिन में 20 से लुढ़ककर 17.9 डिग्री रहा। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार आगामी एक-दो दिन में शीतलहर चलने से कड़ाके की ठंड पड़ने का अनुमान है। वहीं मौसम परिवर्तन को लेकर स्वास्थ्य विभाग ने जनजीवन को स्वास्थ्य का ध्यान रखने और ठंड से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की हैं और विभिन्न दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। उधर मौसम में परिवर्तन के कारण किसानों की चिंता बढ़ गई है, खेत में नमी होने के कारण सप्ताह भर तक किसान कटाई नहीं कर पाएंगे।

कीटों का भी प्रकोप दिखने लगा

पिछले तीन दिनों से रुक-रुक कर हो रही वर्षा से सब्जी की फसल को नुकसान हो रहा है। इसमें टमाटर, गोभी समेत विभिन्न प्रकार की सब्जियों की फसल प्रभावित हुई है। वर्षा थमने के बाद अब सब्जियों में गलन की शिकायत शुरु हो गई है। कीटों का भी प्रकोप दिखने लगा है, बे मौसम वर्षासे किसानों को प्रति एकड़ 2 से 25 हजार रूपए का नुकसान हुआ है। हालांकि लोकल आवक होने से वर्तमान में सब्जियों की कीमत में कोई खास अंतर नहीं आया है।

78 वाहनों पर कार्रवाई, 35 हजार रु समन शुल्क की वसूली

जांजगीर, 09 दिसम्बर (देशबन्धु)। नो पार्किंग में खड़े किए वाहनों पर लॉकिंग किया जाकर तथा यातायात नियमों का उलल्धन करने वालो वाहन चालकों के विरूद्ध मोटरयान अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा रही है। आज मोटर अधिनियम के विभिन्न धाराओं के तहत कुल 78 वाहनों पर कार्यवाही करते हुए कुल 35,300 /रु समन शुल्क लिया गया।

पुलिस द्वारा लगातार मोटर अधिनियम के तहत कार्यवाही किया जा रहा है। इसी क्रम में 08 दिसम्बर को विभिन्न धाराओं के तहत कार्यवाही किया गया, जिसमें वाहनों में नम्बर प्लेट अस्पष्ट होना, नो पार्किंग में वाहन खड़ी करना, मोटर सायकल में तीन सवारी वाहन में रिफ्लेक्टर ग्लास नही होना, वाहन का हेड लाईट आधा काला नहीं होना, बिना सीट बेल्ट के वाहन चलाना, बिना हेलमेट वाहन चालाना, मौके पर वाहन का कागजात पेश नही करना, पार्किंग लाईट का नही होना अलग-अलग धाराओं के तहत कुल 78 वाहन चालकों के विरूद्ध मोटर व्हीकल एक्ट के तहत् कार्यवाही कर 35,300 रू का समन शुल्क लिया गया है। यातायात पुलिस द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान भविष्य में यातायात नियमों का पालन करने अपने वाहन के आगे पीछे रिफ्लेक्टर लगाने एवं नो पार्किंग में वाहन खड़ा नही करने एवं मो. सायकल में तीन सवारी नही चलाने एवं शराब पीकर वाहन नही चलाने हेतु समझाईस दी जा रही है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा

कृषि विज्ञान केन्द्र जांजगीर में वर्चुअल कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जांजगीर, 09 दिसम्बर (देशबन्धु)। भारत सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की पहुंच लक्षित व्यक्तियों एवं समूहों तक सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लाभार्थियों को योजनाओं का लाभ उठाने एवं जागरूक करने हेतु देशभर में जागरूकता अभियान, विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की गई है। आज वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कृषि विज्ञान केंद्र जांजगीर में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ आर के खूंटे, अपर कलेक्टर गुड्डू लाल जगत उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह यात्रा देश के हर नागरिक तक पहुंचने का एक विनम्र प्रयास है। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने विभिन्न राज्यों के प्रगतिशील कृषकों से सीधा संवाद किया। साथ ही कृषि का विकास कैसे हो, उस पर अपने विचार रखें। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना आदि से किसान लाभ लें। प्रधानमंत्री ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा उन लोगों तक पहुँचने का एक सशक्त माध्यम बन गई है, जिन्हें सरकारी स्कीमों का लाभ नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने लाभार्थियों की पहचान की है और इस अभियान के माध्यम से उन तक पहुंच रही है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस यात्रा के दौरान सवा करोड़ से अधिक लोग मोदी की गारंटी वाली गाड़ी तक पहुंच चुके है और लगभग एक लाख नए कनेक्शन दिये गए हैं। इन वाहनों के माध्यम से 35 लाख से अधिक आयुष्मान स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गए हैं। कार्यक्रम में उप संचालक पंचायत अभिमन्यू साहू ,उप संचालक कृषि एमडी मानकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम प्रमुख डॉ राजीव दीक्षित, शस्य वैज्ञानिक शशिकांत सुर्यवंशी, प्रक्षेत्र प्रबंधक चंद्रशेखर खरे, जिले के उत्कृष्ट कृषक दुष्यन्त सिंह, शिव कुमार तिवारी, डॉ प्रधान एवं नागरिकजन उपस्थित थे।

शादी का झांसा देकर दैहिक शोषण, आरोपी गिरफ्तार

जांजगीर, 09 दिसम्बर (देशबन्धु)। शादी का झांसा देकर दैहिक शोषण करने वाले आरोपी को पामगढ़ पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी के विरुद्ध धारा 376 (2) (एन) 506 भादवि के तहत कार्यवाही कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया।

मामले पर पुलिस ने बताया किै कि पीड़िता 08 दिसम्बर को थाना पामगढ़ में रिपोर्ट दर्ज करायी कि ग्राम देवरी थाना सारागांव निवासी पुस्कर करियारे के द्वारा शादी का झांसा देकर जबरदस्ती दैहिक शोषण करते आ रहा है, शादी करने की बात बोलने पर जान से मारने की धमकी दे रहा है। रिपोर्ट पर आरोपी के विरुद्ध थाना पामगढ़ में धारा 376 (2) (ह), 506 भादवि पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना दौरान आरोपी पुस्कर करियारे उम्र 25 वर्ष साकिन देवरी थाना सारागांव को उसके सकुनत से घेरा बंदी कर पकड़ा जिसको घटना के संबंध में पूछताछ करने पर अपराध घटित करना स्वीकार किए जाने से गिरफ्तार कर आज न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है। उपरोक्त कार्यवाही में उप निरीक्षक राकेश कुमार सूर्यवंशी थाना प्रभारी पामगढ़,सुनील टैगोर का योगदान रहा।

दिसंबर भी आधा बीतने को है, नही हुआ गणवेश वितरण

जांजगीर, 09 दिसम्बर (देशबन्धु)। आत्मानंद स्कूल में प्री-प्राइमरी से लेकर कक्षा आठवीं तक पढ़ने वाले बच्चों को गणवेश देने के लिए शासन से राशि दी जाती है लेकिन यह राशि अब तक शासन स्तर से स्कूलों को जारी नहीं की गई है। पिछले साल जिले में आत्मानंद स्कूलों में गणवेश वितरण के लिए राशि अगस्त-सितंबर तक जारी कर दी गई थी, लेकिन इस साल दिसंबर भी आधा बीतने को है।

शिक्षा सत्र आधा बीत जाने के बाद भी स्वामी आत्मानंद विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को अब तक गणवेश का वितरण नहीं हुआ है। वर्तमान सत्र में प्रवेश लेने वाले बहुत सारे बच्चे बिना यूनिफार्म भी लंबे समय तक स्कूल जाते रहे। लेकिन देरी होते जाने से स्कूलों के द्वारा भी बच्चों पर गणवेश पहनकर आने का दबाव बनाया गया, जिसके चलते आज की स्थिति में अधिकांश अभिभावकों के द्वारा अपने बच्चों के लिए यूनिफार्म खरीद लिया गया है। ऐसे में अब बताया जा रहा है कि बच्चों को गणवेश की जगह सीधे खाते में पैसे डाल दिए जाएंगे। गौरतलब है कि

स्कूलों में तिमाही-छैमाही की परीक्षा भी संपन्न हो गई लेकिन बच्चों को न यूनिफार्म मिला है और न ही पैसे। मजबूरी में अभिभावकों के द्वारा बच्चों के लिए यूनिफार्म खरीदना पड़ा। जिले में आठ स्वामी आत्मानंद स्कूल संचालित हैं जहां प्री-प्रायमरी से लेकर आठवीं तक छात्रों की संख्या 4 हजार से अधिक हैं। आत्मानंद स्कूलों में पढ़ने वाले अधिकतर छात्र आर्थिक रुप से कमजोर घरों के होते हैं। इसके बावजूद बच्चों के लिए एक जोड़ी यूनिफार्म खरीद लिए हैं कि बाद में तो स्कूल से बच्चों को यूनिफार्म या पैसे मिल ही जाएंगे। लेकिन ऐसा करते-करते आधा शिक्षा सत्र ही बीत गया लेकिन न तो पैसा मिला है और न ही यूनिफार्म। ऐसे में एक ही ड्रेस से बच्चों को काम चलाना पड़ रहा है। जो बच्चों और अभिभावकों के लिए परेशानी भरा हो रहा है। दिलचस्प बात यह है कि आने वाले 26 जनवरी में इसी फटे पुराने गणवेश में बच्चे गणतंत्र दिवस का पर्व भी मनाएंगे। जिसे लेकर प्रशासन संजीदा नहीं है। इस संबंध में शिक्षा अधिकारियों का कहना है कि यह शासन स्तर का काम है। शासन से जब अलाटमेंट आएगा तब छात्रों को गणवेश वितरण कर दिया जाएगा।

दो सेट यूनिफार्म के लिए दी जाती है राशि

स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय में प्रति छात्र को दो ड्रेस खरीदने के लिए शासन की ओर से सरकारी दर के तहत 54 रुपए दिए जाते हैं। जबकि बाजार में इतने में एक जोड़ी ड्रेस भी नहीं मिल पाती। यही दर स्कूल शिक्षा विभाग के बच्चों के लिए तय है लेकिन यहां खादी ग्रामोद्योग के द्वारा गणवेश तैयार कर स्कूलों में सप्लाई की जाती है लेकिन स्वामी आत्मानंद स्कूलों में खाद्यी ग्रामोद्योग सप्लाई नहीं करती। ऐसे में आत्मानंद स्कूलों में संस्था प्रमुखों को भी इतने कम दर में दो यूनिफार्म उपलब्ध कराना संभव नहीं होता। जिसके चलते बच्चों के खाते में सीधे पैसे देते है कि अभिभावक और पैसे लगाकर यूनिफार्म खरीद लें।

सार्वजनिक जगहों पर शराब पीने व पिलाने वाले 12 लोगों पर कार्रवाई

जांजगीर, 09 दिसम्बर (देशबन्धु)। सर्वजनिक जगहों पर शराब पीने एवं शराब पिलाने का साधन उपलब्ध कराने वाले 12 आरोपियों को जिले के अलग-अलग जगहों से गिरफ्तार कर आरोपियों के विरूद्ध धारा 36 च (1) एवं 36 सी आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही किया गया है।

जिले में अवैध शराब बिक्री तथा सार्वजनीक जगह पर शराब पीने एवं शराब पिलाने का साधन उपलब्ध कराने वालो पर अंकुश लाने के लिए जिला पुलिस द्वारा कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में 08 दिसम्बर को जिले के थाना व चौकी स्तर पर विशेष अभियान चलाया गया जिसमें थाना बम्हनीडीह क्षेत्र में आरोपी सालिक राम धनुहार,थाना पामगढ़ क्षेत्र में अनिकेत लहरे,थाना जांजगीर क्षेत्र में आरोपी शिवा सिंह,थाना चाम्पा क्षेत्र में आरोपी सीता राम राठौर, हरी धीवर, राधेश्याम देवांगन, थाना अकलतरा क्षेत्र में आरोपी धनीराम साण्डे, राम लाल सिंह,थाना मुलमुला क्षेत्र में आरोपी संतोष दास मानिकपुरी, रूपेश यादव, कुमार दास मानिकपुरी, कृष्ण कांत साहू को सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने पायें जाने पर इनके विरूद्ध अलग-अलग थाना में अपराध पंजीबद्ध किया जाकर आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही किया गया है। उपरोक्त

कार्यवाही में निरीक्षक मणीकांत पाण्डेय थाना प्रभारी बम्हनीडीह, निरीक्षक अशोक वैष्णव थाना प्रभारी जांजगीर, निरीक्षक मनीष सिंह परिहार थाना प्रभारी चाम्पा, निरीक्षक तुलसिंह पट्टावी थाना प्रभारी अकलतरा, उपनिरी. सागर पाठक थाना प्रभारी मुलमुला, उप निरीक्षक राकेश कुमार सूर्यवंशी थाना प्रभारी पामगढ़, सउनि सुनील टैगोर एवं महिला प्रआर बालमती थाना पामगढ़ का योगदान रहा।

स्वामी आत्मानंद विद्यालय में किया गया आनंद मेले का आयोजन

सक्ती 09 दिसंबर (देशबन्धु)। स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिन्दी माध्यम विद्यालय कसेरपारा सक्ती में हर्सोल्लास से आनंद मेला एवं विज्ञान प्रर्दशनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन कलेक्टर नुपूर राशि पन्ना द्वारा फीता काटकर किया गया साथ में शिक्षा विभाग के प्रमुख श्री बी.एल.खरे सपत्नीक व शहर के गणमान्य नागरिक अभिभावक, समस्त स्टॉफ व अशासकीय विद्यालयों के संचालक शिक्षक उपस्थित रहे।

अतिथियों ने बच्चों के द्वारा लगाये गये माडल एवं स्टाल का निरीक्षण बच्चों का उत्साहवर्धन किया । बच्चों को सफलता के टीप दिये आनंद मेला में कुल 15 स्टाल लगाये गये थे जो इय प्रकार है- कक्षा 12वी कला से संत कुमार, रामनारायण ग्रुप (12 विद्यार्थी) द्वारा बटाटा चाट एवं मिर्ची भजीया, देवकी अंजली (20 विद्यार्थी) कक्षा 12वी विज्ञान द्वारा बडा 12 वाणिज्य के अर्पिता साक्षी एवं साथी (15 विद्यार्थी) द्वारा दही गुझिया कक्षा 11वी के गीतांजली, नीतू एवं साथी (13 विद्यार्थी) द्वारा सलोनी मटर कक्षा 11वी के आस्था, यामिनि एवं साथी (15विद्यार्थी) द्वारा दाबेली एवं मोमोस कक्षा 10वीं बालिकाओं रानी कुसुम एवं साथी (18विद्यार्थी) द्वारा कचोडी एवं ढोकला एवं बालको सुरज, निखिल एवं साथी (8 विद्यार्थी) द्वारा फिंगर विप्स लडकियो कीर्ति कुसुम (15 विद्यार्थी) गुपचुप तथा चायनीज पकोडा कक्षा 9वी बालक चयन, समीर एवं साथी (8विद्यार्थी)द्वारा आलु भजीया कक्षा 8वीं के विद्यार्थी पवन चारू एवं कुनाल (17 विद्यार्थी) द्वारा पानी पुरी कक्षा 7वीं बालक आशीष शुभम एवं साथी (6विद्यार्थी) द्वारा समोसा मटर एवं 7वी बालिकाओं रंजना, रेशमी एवं साथी (8 विद्यार्थी) द्वारा कक्षा 6 वीं बालिकाओं कोनिका, अनन्या एवं साथी (10 विद्यार्थी) द्वारा झालमुरी एवं कक्षा 6 वीं बालकों रीशम,मनीष एवं साथी (8 विद्यार्थी) द्वारा भेल एवं प्राथमिक विभाग से समर खेमराज पवन एवं साथी (21विद्यार्थी) द्वारा रसगुल्ला चना मसाला एवं चाय का स्टाल लगाया गया था। इसी प्रकार विज्ञान माडल में प्राथमिक विभाग से कबाड से जुगाड के अंतर्गत कक्षा 5 वीं के रूपाली साहू, राशि,तृप्ती द्वारा संज्ञा के भेद का खेल, कक्षा 6 वीं द्वारा संज्ञा सर्वनाम किया, विशेषण का कैरम खेल नोमिषा कक्षा चौथी द्वारा हासिल द्वारा जोड, अनुराधा कक्षा चौथी द्वारा आकृतियों का चक तनय मिश्रा कक्षा चौथी द्वारा विलोम शब्द अंग्रेजी में कक्षा तीसरी के एकाक्ष द्वारा मिटटी से सब्जी एवं फल की आकृति प्रेया यादव कक्षा तीसरी द्वारा शब्द जोड, तुशांत गबेल कक्षा 5 वी द्वारा मिटटी का मुर्ति, भारती पटेल तीसरी द्वारा मिटटी से गमला एवं फुल का निर्माण काव्या रात्रें चौथी द्वारा सोलर कुकर माडल एवं खुशी कक्षा 5 वीं द्वारा सम विषम का गणितीय खेल को रोचक रूप से प्रस्तुत किया।

कलेक्टर ने बच्चों के बनाये व्यंजनो का लिया स्वाद

कलेक्टर एवं जिला शिक्षा अधिकारी ने प्रत्येक स्टॉल में जाकर बच्चो द्वारा बनाए गये लजीज व्यंजनो का आनंद लिया एवं उनके क्षरा बनाए गये व्यंजनो की तारीफ की अपने बीच अपने जिले के मुखिया को पाकर बच्चे गदगद हो गये एवं फोटोग्राफी का आनंद लिया। पूर्व माध्यमिक विभाग से कीर्ति एवं साथी द्वारा एग्रीकल्चर का मॉडल भूमिका कक्षा 7वी द्वारा ज्वालामुखी का मॉडल, सुमित साहू द्वारा वर्षा जल संग्रहण प्रेम कसेर कक्षा 9वी द्वारा पवन चक्की, सूरज नारायण एवं अनिश कक्षा 10वी द्वारा न्यूटन के नियम वाला मॉडल, निखिल कक्षा 10 वी द्वारा चलित रोबोट मॉडल, दिव्या कुसुम एवं साथी कक्षा 10 वी द्वारा जल प्रदुषण कक्षा 10 वी से सुंधाजली द्वारा उत्सर्जन तंत्र कक्षा 11वी जीवविज्ञान समूह द्वारा ह्रदय का जीवंत प्रदर्शन कक्षा 11वी विज्ञान रीना द्वारा जल चक, कक्षा 12 वी से अन्नपूर्णा एवं साथी द्वारा संचार सेटेलाईट, कक्षा 12 वी रोहन द्वारा गैस सेंसर मॉडल, कक्षा 12वी से अंजलि एवं साथी द्वारा आटोमेटिक ड्रेनेज सिस्टम,कक्षा 12 वी देवकी एवं साथी द्वारा सुरक्षा अलार्म, कक्षा 12वी कला से रामनारायण एवं साथी द्वारा जनसंख्या घनत्व, भारत के फसल उत्पादक प्रदेश का नक्शा द्वारा प्रर्दशन बहुत ही आकर्षक तरीके से किया गया था। कलेक्टर एवं जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रत्येक मॉडलो का निरीक्षण किया गया एवं कक्षा तीसरी के छात्र एकाक्ष द्वारा मिट्टी से निर्मित फल एवं सब्जियों के मॉडलो का अंग्रेजी में नाम पूछा गया जिसका उस छात्र ने सही जवाब दिया जिससे कलेक्टर मैडम ने उस छात्र की बहुत प्रशंसा की। इस अवसर पर मीडिया से उपस्थित रिपोर्टर से बातचीत करते हुए कलेक्टर श्रीमती नुपूर राशि पन्ना ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए बच्चो एवं विद्यालय परिवार की प्रशंसा करते हुए बच्चो की उज्जवल भविष्य के लिए आर्शिवाद प्रदान किया एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्री बी. एल. खरे द्वारा बच्चो का उत्साहवर्धन किया गया। स्वामी आत्मानंद कसेरपारा सक्ती में पहली बार इस प्रकार का आयोजन किया गया जिसके लिए कलेक्टर एवं जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा संस्था प्रमुख पी. गबेल एवं स्टॉफ के सभी सदस्यों को बधाई दी हैं।

देश विदेश

इजरायली ड्रोन हमले में हिजबुल्लाह नेता का बेटा मारा गया

तेल अवीव। हिजबुल्लाह ने शनिवार को कहा कि दक्षिणी सीरिया में संगठन के संचालन के प्रभारी अली मूसा डकडौक का बेटा हसन अली डकडौक कथित तौर पर इजरायली ड्रोन हमले में मारा गया। अली मूसा डकडौक अमेरिकी सेना पर हमला करने के लिए इराक में ईरानी समर्थक लड़ाकों को प्रशिक्षण देने के लिए जिम्मेदार था। उसे 2007 में इराक में अमेरिकी सेना ने हिरासत में लिया था, लेकिन बाद में रिहा कर दिया गया था। मारे गए चार लोग हिजबुल्लाह के थे। जबकि, एक सीरियाई था।

चार सप्ताह में समाप्त हो सकता है इजरायल का अभियान

सबसे बड़े शहर खान यूनिस को घेर रहा इजराइल

यरूसलम, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। इजरायली सेना का दक्षिणी गाजा पट्टी के सबसे बड़े शहर खान यूनिस में सैन्य अभियान तीन से चार सप्ताह में समाप्त हो सकता है। यह जानकारी शनिवार को एक वरिष्ठ इजरायली रक्षा अधिकारी के हवाले से दी। रक्षा अधिकारी के मुताबिक खान यूनिस में अभियान अभी शुरू हुआ है और इजरायली सेना का मानना है कि फिलिस्तीनी आंदोलन हमास का नेतृत्व वहां स्थित है। इजराइल और हमास के बीच संघर्ष का उच्च-तीव्रता वाला चरण तीन से चार सप्ताह तक चलेगा। रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका ने इजरायल गाजा में अभियान समाप्त करने की कोई स्पष्ट समय सीमा नहीं दी है, लेकिन कहा है कि समय सीमित है और लड़ाई को जल्द से जल्द और कम नागरिकों के नुकसान के साथ समाप्त करना आवश्यक है। इससे पहले मंगलवार को इजरायलयी जनरल स्टाफ के प्रमुख हर्जी हलेवी ने कहा कि इजरायली रक्षा बल (आईडीएफ) का जमीनी अभियान गाजा पट्टी में तीसरे चरण में चला गया है और खान यूनिस को घेर रहा है। गत 07 अक्टूबर को फिलिस्तीनी आंदोलन हमास द्वारा गाजा पट्टी से इजरायल के खिलाफ बड़े पैमाने पर रॉकेट हमला किया गया और सीमा का उल्लंघन किया गया।

यूएई के गाजा युद्धविराम प्रस्ताव पर अमेरिका ने लगाया वीटो

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में संयुक्त अरब अमीरात की ओर से गाजा में तत्काल युद्धविराम को लेकर जारी प्रस्ताव पर अमेरिका ने वीटो लगा दिया है। इस दौरान, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के 15 सदस्यों में से 13 ने इसके पक्ष में मतदान किया, जबकि ब्रिटेन अनुपस्थित रहा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के दो प्रांतों में जारी संघर्ष को रोकने के अथाह प्रयास को अमेरिका ने रोक दिया। पंद्रह सदस्यीय परिषद में एकमात्र अरब राज्य संयुक्त अरब अमीरात द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव पर शुक्रवार को मतदान हुआ। इससे पहले, संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत रॉबर्ट ए वुड ने स्पष्ट कर दिया था कि उनका देश तत्काल युद्धविराम का समर्थन नहीं करता है।

बंधकों को छुड़ाने के दौरान दो इजरायली सैनिक घायल

गाजा। फिलिस्तीनी समूह हमास द्वारा बंधक बनाए गए बंधकों को छुड़ाने के अभियान के दौरान दो इजरायली सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए। इजरायल रक्षा बल (आईडीएफ) ने यह जानकारी दी। आईडीएफ ने टेलीग्राम पर कहा, गाजा पट्टी में हमास द्वारा बंधक बनाए गए बंधकों को छुड़ाने के लिए रात भर चलाये गये एक ऑपरेशन के दौरान आईडीएफ के दो सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए। ऑपरेशन के दौरान बंधकों के अपहरण और बंधक बनाने में भाग लेने वाले कई आतंकवादी मारे गए। इसमें कहा गया कि इस अभियान में किसी बंधक को बचाया नहीं जा सका है।

सबसे पुरानी व सबसे बड़ी मस्जिद को किया नष्ट

गाजा। इजरायली लड़ाकू विमानों ने शुक्रवार को गाजा शहर की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी मस्जिद को नष्ट कर दिया। फिलिस्तीनी सुरक्षा सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने 'शिन्हुआ' को बताया, गाजा पट्टी की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी मस्जिद अल-ओमारी ग्रैंड मस्जिद इजरायली हमलों में बड़े पैमाने पर नष्ट हो गई। ओमारी मस्जिद की स्थापना 1,4 साल से भी पहले हुई थी, जिसका क्षेत्रफल लगभग 4,1 वर्ग मीटर है। तीन सप्ताह पहले इज़रायली तोपखाने के हमले में इसकी मीनार नष्ट हो गई। गाजा पर शासन करने वाले आतंकवादी समूह हमास ने गाजा शहर में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक और एक धार्मिक स्थल को निशाना बनाकर किए गए इजरायली हमलों की निंदा की।

सुडोकू 6401

	2	5			8			6
		8			2			
	6		3		7			5
	9							7
		3		4		6		
1							9	
5			8		3		6	
			1			7		
4			9			5	1	

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6401

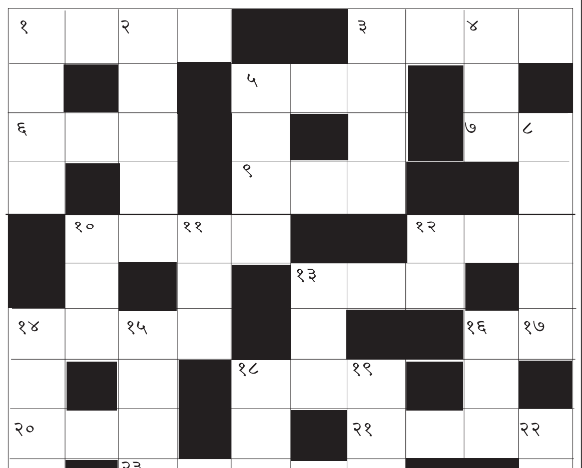

बायें से दायें:-

१. अपने ऊपर बीती घटनाओं का वृत्तांत
३. रणनायक
५. बल्कि, लेकिन. फिर भी
६. कारण, हेतु, उद्देश्य (उर्दू)
७. शर्म, लज्जा
९. सड़ी-गली वस्तुएं आदि की दुर्गंध
१०. मदिरालय
१२. ललक, गहरी इच्छा
१३. उपचार, चिकित्सा (उर्दू)
१४. सुकुमारता (उर्दू)
१५. संग रहने वाला
१८. ज्ञात-मालूम
२०. प्रतिष्ठा, सीमा
२१. रसीला
२३. रुधिरवर्ग (ब्लड ग्रुप)

ऊपर से नीचे:-

१. भरोसा देना, विश्वास दिलाना
२. अज्ञानी से ज्ञानभरी बातें करना, मुहावरा है भैंस के आगे...
३. पुल
४. पावन, शुद्ध
५. मौका, समय
८. श्रीकृष्ण
१०. पवित्र (उर्दू)
११. नष्ट, तबाह (उर्दू)
१२. शर्म, हया
१३. वगैरह
१४. घोंसला, रहने की जगह (उर्दू)
१५. ऋणी (उर्दू)
१७. बादल (उर्दू)
१८. तरक्की
१९. भांति, प्रकार
२२. खुदा, ईश्वर (उर्दू)

वर्ग पहेली-6400

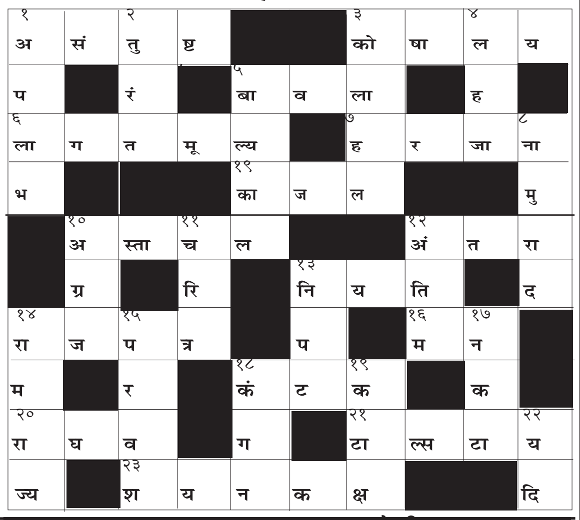

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : रविवार 10 दिसम्बर, 2023 अगहन कृष्ण पक्ष 13

राशिफल

मेष - आज आप सामाजिक तथा सार्वजनिक क्षेत्र में लोगों की प्रशंसा प्राप्त कर सकेंगे। धन की बेहतर आवक होगी। पारिवारिक और दांपत्यजीवन में सुख और संतोष का अनुभव होगा। वाहन सुख मिलेगा।

वृषभ - शारीरिक मानसिक स्वस्थता के साथ आप अपने काम निर्धारित रूप से पूरे कर सकेंगे। बीमार व्यक्ति आज स्वास्थ्य में सुधार का अनुभव करेंगे। ननिहाल पक्ष से अच्छे समाचार मिलेंगे।

मिथुन - नए कामों की शुरुआत के लिए दिन अनुकूल नहीं है। जीवनसाथी और संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखने की जरुरत है। चर्चा, वाद-विवाद के दौरान मानहानि न हो। मित्रों के पीछे धन खर्च होगा।

कर्क - आप में आज आनंद और स्फूर्ति का अभाव रहेगा। मन में खिन्नता रहेगी। छाती में दर्द या किसी कारण से तकलीफ होगी। अनिद्रा सताएगी। सार्वजनिक रूप से स्वाभिमान भंग न हो, इसका ध्यान रखें। धन खर्च होगा।

सिंह - कार्य सफलता और विरोधियों पर विजय मिलने से मन में प्रसन्नता छाई रहेगी। भाई-बहनों के साथ संबंधों में मधुरता रहेगी। मित्रों और स्नेहीजनों के साथ किसी रमणीय पर्यटनस्थल पर घूमने-फिरने का आनंद उठा सकेंगे।

कन्या - आपके लिए आज का दिन शुभ रहेगा। वाणी की मधुरता से दूसरे लोगों के मन पर अपनी सकारात्मक छाप छोड़ सकेंगे। पारिवारिक वातावरण भी अच्छा रहेगा। वाणी पर संयम बरतने से वाद-विवाद की संभावना कम हो जाएगी।

तुला - आपके प्रत्येक काम में आत्मविश्वास छलकता हुआ दिखेगा। आर्थिक योजनाएं भी सरलतापूर्वक बना सकेंगे। शारीरिक तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता का अनुभव होगा। वस्त्राभूषण और आनंद-प्रमोद के पीछे खर्च होगा।

वृश्चिक - स्वभाव में उग्रता और वाणी पर संयम रखने की जरूरत है। शारीरिक शिथिलता और मानसिक चिंता से आपका मन व्यथित रहेगा। वाहन चलाते समय दुर्घटना हो सकती है। संभव हो तो ऑपरेशन या नई चिकित्सा को आज टाल दें।

धनु - आज का दिन आपके लिए लाभदायी है। आपको आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक क्षेत्र में भी लाभ होने की संभावना है। मित्रों और परिजनों के साथ पर्यटन स्थल पर जाने से खुशी मिलेगी।

मकर - परिवार और संतान के विषय में आपको आनंद और संतोष का भी अनुभव होगा। मित्रों और स्नेहीजनों के साथ हुई भेंट से आपका मन प्रसन्न हो उठेगा। व्यापार में धन की उगाही के लिए बाहर जाना लाभप्रद रहेगा।

कुंभ - विरोधियों के साथ वाद-विवाद न करने की सलाह दी जाती है। शारीरिक रूप से अस्वस्थता बनी रहेगी। शिथिलता और आलस्य बना रहेगा। मानसिक रूप से प्रसन्नता बनी रहेगी।

मीन - आकस्मिक धन लाभ का योग है। व्यापारीवर्ग को रुके हुए पैसे मिलेंगे। आज आपको शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक परिश्रम करने पड़ेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खर्च अधिक रहेगा।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

ईएईयू व ईरान मुक्त व्यापार समझौते पर करेंगे हस्ताक्षर

तेहरान, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (ईएईयू) के सदस्य देश दिसंबर में ईरान के साथ एक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे। रूस के उप प्रधान मंत्री अलेक्जेंडर नोवाक ने यह जानकारी दी। श्री नोवाक ने रोसिया वन टीवी पर कहा, निकट भविष्य में कई महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। दिसंबर में ईरान और यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन के बीच मुक्त व्यापार क्षेत्र पर एक समझौता होगा और हम जल्द ही एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ पर भी पहुंचेंगे - यह एक अंतरराज्यीय समझौता है,। इसके एक दिन पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी ने प्रतिनिधिमंडलों की उपस्थिति में बातचीत की और फिर क्रेमलिन में वर्किंग लंच के प्रारूप में बातचीत जारी रखी।

श्री नोवाक ने कहा, राष्ट्रपति पुतिन और राष्ट्रपति रायसी ने वित्तीय और बैंकिंग संबंधों और बस्तियों से लेकर व्यापार और आर्थिक संबंधों की पूरी श्रृंखला पर विस्तार से चर्चा की, जिस पर निपटान को आसान बनाने के लिए बहुत ध्यान दिया गया।

भारतीय-अमेरिकी डेमोक्रेट कैनसस प्रांतीय सीनेट के लिए एक बार फिर मैदान में

अमेरिकी प्रांत के 22वें जिले से चुनाव लड़ने के लिए पर्चा दाखिल किया

न्यूयॉर्क, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। इस साल की शुरुआत में कैंसास में सीनेटर के रूप में शपथ लेने वाली भारतीय-अमेरिकी डेमोक्रेट उषा रेड्डी ने अमेरिकी प्रांत के 22वें जिले से चुनाव लड़ने के लिए पर्चा दाखिल किया है। रेड्डी 18 वर्षों तक एक पब्लिक स्कूल शिक्षक रही हैं। उनका कार्यकाल जनवरी 2025 में समाप्त हो रहा है। उन्होंने 2013 से 2023 तक मैनहट्टन शहर के लिए नगर आयुक्त के रूप में कार्य किया है।

उन्होंने इस सप्ताह अपने एक्स हैंडल पर कहा, 2024 के चुनाव में कैंसास के प्रांतीय सीनेट के लिए एक उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल किया। सार्वजनिक सेवा मेरे जीवन का एक बड़ा हिस्सा है और मैं आपके प्रांतीय सीनेटर के रूप में लोगों के लिए काम करना जारी रखने के लिए समर्पित हूं। यह कहते हुए कि कैंसास प्रांतीय सीनेट में जिला 22 का प्रतिनिधित्व करना एक सम्मान की बात है, रेड्डी ने कहा कि समुदाय के साथ उनका मजबूत रिश्ता है और उन्होंने वर्षों से उनका विश्वास अर्जित किया है। रेड्डी ने अपनी अभियान वेबसाइट पर लिखा, एक लोक सेवक के रूप में, मेरा मानना है कि एक प्रभावी नेता बनने के लिए सहयोग, साझेदारी और विचारशील निर्णय लेना आवश्यक है। उनका परिवार 1973 में भारत से अमेरिका आ गया, जब वह आठ साल की थीं, और अपने दो भाइयों के साथ कोलंबस, ओहियो में पली-बढ़ीं। उनके पास ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी से विकासात्मक मनोविज्ञान में कला स्नातक की डिग्री है, और प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान स्नातक की डिग्री और कैनसस स्टेट यूनिवर्सिटी से शैक्षिक नेतृत्व में मास्टर ऑफ साइंस है।

मध्य मेक्सिको में सशस्त्र संघर्ष, 11 लोगों की मौत

मेक्सिको सिटी, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। मेक्सिको में टेक्सकल्टिटलान नगर पालिका में एक सशस्त्र समूह और स्थानीय निवासियों के समुदाय के बीच हुये संघर्ष में शुक्रवार को कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई। राज्य सुरक्षा सचिवालय ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने एक बयान में कहा कि मृतकों में से आठ कथित तौर पर सशस्त्र समूह के सदस्य है जबकि अन्य तीन निवासी थे। स्थानीय मीडिया ने बताया कि संघर्ष भूमि अधिकारों के संग्रह को लेकर हुआ जो लैटिन अमेरिका में जबरन वसूली का एक आम चलन है। स्थानीय मीडिया आउटलेट 'मिलेनियो' के अनुसार, गोलीबारी कथित तौर पर एक असफल बातचीत के बाद हुई, जिसमें आपराधिक संदिग्धों ने निवासियों से ली गई राशि बढ़ाने की मांग की थी।

इंडोनेशिया का मेरापी ज्वालामुखी फटा

जकार्ता, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। सेंटर फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑफ जियोलॉजिकल डिजास्टर टेक्नोलॉजी के अनुसार, इंडोनेशिया का मेरापी ज्वालामुखी फट गया है, जिससे आसमान में 3,500 मीटर तक मोटी राख निकल रही है। निगरानी अधिकारी त्रियोनो ने शुक्रवार को कहा, चूंकि राख के बादल दक्षिण-पश्चिम में गिर रहे हैं, इसलिए लोगों को खतरे वाले क्षेत्र से दूर रहने की सलाह दी जाती है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इंडोनेशिया आपदा प्रबंधन एजेंसी के प्रवक्ता अब्दुल मुहरी ने कहा कि भारी बारिश के साथ ज्वालामुखी की राख मेरापी के आसपास के गांवों, खासकर बोयोलाली और मैगेलंग जिलों में गिरी। मेरापी की चोटी पर भारी बारिश से ठंडा लावा भी गिरा और अधिकारियों ने लोगों को क्रेटर से 7 किलोमीटर तक के दायरे में आने से दूर रहने की सलाह दी। योग्यकार्ता और मध्य जावा प्रांतों में फैला 2,968 मीटर ऊंचा ज्वालामुखी खतरे के तीसरे स्तर पर है।

सीरिया में आईएस आतंकवादियों के हमले में सात की मौत

दमिश्क। सीरिया की राजधानी दमिश्क के पूर्वी प्रांत दीर अल-जौर में सैन्य स्थलों पर इस्लामिक स्टेट (आईएस) के हमले में सात सैनिक और सरकार समर्थक लड़ाके मारे गए। एक युद्ध निगरानीकर्ता ने शनिवार सुबह यह जानकारी दी। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा कि यह हमला डेर अल-ज़ौर के दक्षिणी ग्रामीण इलाके में शुक्रवार को टी2 तेल स्टेशन के पूर्व में सैन्य ठिकानों पर किया गया। इसमें कुल सात लोग मारे गए। गौरतलब है कि ब्रिटेन स्थित निगरानी संस्था ने इस साल अब तक ऐसे हमलों में मरने वालों की संख्या 594 बताई है।

सुडोकू 6401 का हल

3	2	5	4	9	8	1	7	6
7	1	8	5	6	2	3	4	9
9	6	4	3	1	7	8	2	5
8	9	6	2	3	1	4	5	7
2	5	3	7	4	9	6	8	1
1	4	7	6	8	5	2	9	3
5	7	1	8	2	3	9	6	4
6	8	9	1	5	4	7	3	2
4	3	2	9	7	6	5	1	8

आज का इतिहास

1582-फ्रांस ने ग्रेगोरियन कैलेंडर का इस्तेमाल करना शुरु किया।
1887 - आस्ट्रिया, हंगरी, इटली और ब्रिटेन के बीच बाल्कन सैन्य समझौते पर हस्ताक्षर किये गये।
1902 - तस्मानिया में महिलाओं को वोट देने का अधिकार प्रदान किया गया।
1903 - पियरे क्यूरी और मैरी क्यूरी को भौतिक विज्ञानके लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
1936 - चीन जापान के बीच हुए युद्ध में चीन की सहायता के लिए भेजे गए भारतीय चिकित्सा सहायता दल के प्रमुख थे।
1947 - सोवियत संघ और चेकोस्लोवाकिया के बीच व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर।
1961 -सोवियत संघ और अल्बानिया के बीच राजनयिक संबंध समाप्त।
1963 - अफ्रीकी देश जंजीबार ने ब्रिटेन से स्वतंत्रता हासिल की।
1994 - यासिर अराफात, वित्जाक राबिन एवं शिमोन पेरेज संयुक्त रूप से नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित।
1998 - अमर्त्य सेन को स्टॉकहोम में अर्थशास्त्र के लिए 1998 का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।
1999 - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ समझौते के अनुसार आतंकवादी गतिविधियों के लिए धन उपलब्ध कराना आर्थिक अपराध घोषित।
2000 -नवाज़ शरीफ़ सपरिवार पाकिस्तान से दस साल के लिए निर्वासित।

बयान | गुटेरेस ने आर्मेनिया-अजरबैजान समझौते का किया स्वागत

संबंधों में सुधार के लिए आर्मेनिया-अजरबैजान ने किया समझौता

संयुक्त राष्ट्र, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने शुक्रवार को आर्मेनिया और अजरबैजान के बीच अपने संबंधों को बेहतर बनाने के लिए समझौते का स्वागत किया। श्री गुटेरेस के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा, महासचिव आर्मेनिया और अजरबैजान द्वारा जारी उस संयुक्त बयान का स्वागत करते हैं, जिसमें विश्वास-निर्माण उपायों की एक श्रृंखला की घोषणा की गई है और द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने के लिए उनकी प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई है।

दुजाजारिक ने एक दैनिक प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि संयुक्त राष्ट्र पार्टियों को आपसी विश्वास को आगे बढ़ाने और उनकी आबादी और क्षेत्र के लाभ के लिए दीर्घकालिक शांति सुनिश्चित करने के लिए समझौते पर निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। आर्मेनिया और अजरबैजान ने गुरुवार को कहा कि वे बिना किसी मध्यस्थ के शामिल हुए अपनी पहली सीधी बातचीत के बाद युद्धबंदियों को रिहा करके विश्वास-निर्माण के कदम उठाने पर एक समझौते पर पहुंचे हैं।

इथियोपिया में विस्थापन, बीमारियों का प्रकोप जारी : यूनिसेफ

अदीस अबाबा। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने कहा है कि इथियोपिया में कई प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं के कारण जारी गंभीर मानवीय स्थिति के बीच बड़े पैमाने पर विस्थापन तथा कई बीमारियों का प्रकोप जारी है। यूनिसेफ द्वारा जारी अपनी नवीनतम इथियोपिया मानवीय स्थिति रिपोर्ट में कहा गया है कि पूर्वी अफ्रीकी देश में मानवीय स्थिति मुख्य रूप से चल रहे संघर्षों, बीमारी के प्रकोप और बदलती जलवायु के कारण और भी खराब हो गई है। यूनिसेफ ने कहा, हाल ही में, अल नीनो के कारण बाढ़ ने इसे और बढ़ा दिया है, जिसका कमजोर व्यक्तियों, विशेषकर बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अल नीनो इफेक्ट मौसम संबंधी एक विशेष घटना क्या स्थिति है, जो मध्य और पूर्वी प्रशांत सागर में समुद्र का तापमान सामान्य से अधिक होने पर बनती है। आसान भाषा में समझे तो इस इफ़ेक्ट की वजह से तापमान काफी गर्म हो जाता है। इसकी वजह से पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में रहने वाला गर्म सतह वाला पानी भूमध्य रेखा के साथ पूर्व की ओर बढ़ने लगता है। ऐसी स्थिति में भयानक गर्मी का सामना करना पड़ता है और सूखे के हालात बनने लगते हैं।

दुनिया को जानें

बांग्लादेश में पहली बार महिलाएं 'फायर फाइटर' में शामिल

ढाका, 9 दिसम्बर (एजेंसियां)। बंगलादेश अग्निशमन सेवा और नागरिक सुरक्षा (एफएससीडी) के इतिहास में पहली बार, 15 महिलाओं को 'फायरफाइटर' के लिये चयनित किया गया हैं। स्थानीय मीडिया ने शनिवार को य जानकारी दी। ढाका ट्रिब्यून के अनुसार, बंगलादेश के गृह मंत्री असदुज्जमां खान कमाल ने गुरुवार को ढाका में एक समारोह में नवनियुक्त महिला अग्निशामकों का स्वागत किया। 2,707 आवेदकों में से उन 15 महिलाओं को प्रारंभिक स्क्रीनिंग, शारीरिक फिटनेस, चिकित्सा परीक्षण, लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा के माध्यम से अग्निशामक के रूप में चुना गया है। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने, वे आधिकारिक तौर पर ढाका के बाहरी इलाके पुरबाचल में स्थित बल में शामिल हो गईं। पहले, महिलाएं एफएससीडी में अधिकारी के रूप में काम करती थीं, लेकिन किसी भी महिला को फायर फाइटर पद पर नियुक्त नहीं किया जाता था। लैंगिक भेदभाव को खत्म करने के लिए प्रधानमंत्री शेख हसीना के आदेशानुसार हाल ही में देश में 'फायरमैन' का पद बदलकर 'फायरफाइटर' कर दिया गया है।

खेल जगत

दो या तीन श्रृंखलाओं में, हमें टी20 विश्व कप के लिए भारत के संयोजन का पता चल जाएगा : प्रज्ञान ओझा

सूरत, 9 दिसंबर (एजेंसियां)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर प्रज्ञान ओझा को लगता है कि बीसीसीआई प्रबंधन और चयनकर्ता 2024 में टी20 विश्व कप से पहले टीम का पूरी तरह से आकलन करने के लिए दो या तीन और टूर्नामेंट ले सकते हैं। भारत और दक्षिण अफ्रीका रविवार से शुरू होने वाली टी20 सीरीज में आमने-सामने होने के लिए तैयार हैं। मेहमान कमोबेश उसी टीम के साथ दक्षिण अफ्रीका गए हैं, जिसने वनडे विश्व कप के बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला था। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली 26 दिसंबर से सेंचुरियन में शुरू होने वाली टेस्ट सीरीज के दौरान टीम से जुड़ेंगे। हालाँकि, ओझा को लगता है कि भारत की सीमित ओवरों की टीम में कोहली और रोहित के भविष्य के बारे में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी।

भारत अब द. अफ्रीका में भी जीत का सिलसिला जारी रखने को बेताब

■ जडेजा व शुभमन टीम के जुड़ने से भारत द. अफ्रीका से निपटने के लिए बेहतर तौर पर तैयार

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 9 दिसंबर (देशबन्धु)। सूर्य कुमार यादव बतौर कप्तान और बल्लेबाज अनुकरणीय खेल दिखा अपने घर में भारत को मजबूत मेहमान ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टी-20 मैचों की क्रिकेट सीरीज 4-1 से जिताने के बाद अब मेजबान दक्षिण अफ्रीका पर तीन टी-20 अंतराष्ट्रीय मैचों की सीरीज के डरबन में रविवार को खेले जाने वाले पहले मैच में जीत दिला कर जीत का सिलसिला जारी रखने को बेताब होंगे। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच बीते बरस खेले गए पिछले पांच मैचों में दोनों टीमों ने दो -दो मैच जीते जबकि एक बेनतीजा अधूरा खत्म हुआ। नियमित कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे धुरंधरों के वन डे विश्व कप के बाद आराम लेने के बावजूद भारतीय टीम ने सूर्य की अगुआई में मेहमान ऑस्ट्रेलिया से टी-20 सीरीज दमदार ढंग से जीती। सूर्य की अगुआई वाली अपेक्षाकृत नौजवान भारतीय टीम मौजूदा दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए तीन टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों की सीरीज के लिए बतौर उपकप्तान अनुभवी उपकप्तान रवींद्र जडेजा, शुभमन गिल व मोहम्मद सिराज के टीम से जुड़ने से मेजबान दक्षिण अफ्रीका से निपटने के लिए जेहनी तौर बेतहर तैयार नजर आती है।

भारत और दक्षिण अफ्रीका दोनों के लिए रविवार से शुरू हो रही तीन टी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों की यह सीरीज अगले साल के मध्य में वेस्ट इंडीज और अमेरिका की संयुक्त मेजबानी में होने वाले आईसीसी टी-20 क्रिकेट विश्व कप की तैयारियों और सभी विकल्पों को आजमाने का बड़ा मौका है। ऐसे में टी-20 विश्व कप के लिए बतौर फिनिशर सबसे मजबूत दावेदार बताए जा रहे रिंकू सिंह और जीतेश शर्मा के दक्षिण अफ्रीका में उसकी तेज पिचों पर प्रदर्शन पर करार पूरा होने के बाद टीम इंडिया के चीफ कोच की जिम्मेदारी जारी रखने वाले राहुल द्रविड़ की खासतौर पर निगाहें रहेंगी। रिंकू सिंह और जीतेश शर्मा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बड़ा जिगरा दिखा छोटी पर मैच जिताउ पारी खेल कर सभी का ध्यान खींचा है। यह देखना भी दिलचस्प होगा कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज में बल्ले से दमदार करने वाली बाएं हाथ के यशस्वी जायसवाल और ऋतुराज गायकवाड़ की सलामी जोड़ी व अपने बड़े दिल वाले लेग स्पिनर रवि बिश्नोई को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चीफ कोच कितने मैचों में मौका देंगे।

भारत के चीफ कोच राहुल द्रविड़ के सामने सबसे बड़ी चुनौती दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ डरबन में पहले टी-20 मैच के लिए सर्वश्रेष्ठ एकादश चुनने की रहेगी। कप्तान सूर्य, शुभमन गिल, श्रेयस अय्यर ,इशान किशन व रवींद्र जडेजा के अनुभव के साथ शीर्ष क्रम में नौजवान यशस्वी जायसवाल और ऋतुराज गायकवाड़ की सलामी जोड़ी की मौजूदगी में भारत की बल्लेबाजी खासी दमदार और दक्षिण अफ्रीका के मौजूदा तेज गेंदबाजी आक्रमण के साथ उसके स्पिनर महाराज और तबरेज शम्सी से बेहतर ढंग से निपटने में सक्षम नजर आती है। भारत के पास रिंकू के रूप में आखिर में दस गेंदों में दक्षिण अफ्रीका से मैच छीनने में सक्षम फिनिशर भी हैं। दरअसल भारत को अपने बल्लेबाजी क्रम को लेकर खासी माथापच्ची करनी होगी कि क्योंकि उसक पास शीर्ष क्रम में दो नहीं बल्कि चार सलामी बल्लेबाज हैं। यशस्वी और ऋतुराज के बढ़िया फॉर्म के मद्देनजर भारत को मजबूरन शुभमन गिल को तीसरे नंबर पर और श्रेयस को चौथे और फिर कप्तान सूर्य को पांचवें नंबर पर उतारना पड़ सकता है। बेशक चीफ कोच द्रविड़ और कप्तान सूर्य आपस में मिल बैठ कर इस बाबत जरूर गंभीरता से चर्चा करेंगे।

दक्षिण अफ्रीका ने अपने तुरुप के अनुभवी तेज गेंदबाज कसिगो रबाडा के साथ नियमित कप्तान तेंबा बाबुमा को टेस्ट सीरीज के लिए तरोताजा रहने के लिए भारत के खिलाफ इस टी-20 सीरीज के लिए आराम दिया है। वहीं तेज गेंदबाज लुंगी एंगिडी टखने में चोट के बाहर हो गए हैं जबकि आंद्रे नोकिया चोट के चलते पहले ही बाहर हैं। एंगिडी के बाहर होने पर दक्षिण अफ्रीका ने बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ब्यूरन हैंड्रिक्स को अपनी टीम में शामिल किया है। दक्षिण अफ्रीका की कप्तानी संभालने वाले एडन मरक्रम के पास अपने तीन शीर्ष तेज गेंदबाजों एंगिडी, रबाडा और नौकिया की गैरमौजूदगी के बावजूद मार्को येनसन, जेराल्ड कोइत्जी, लिजार्ड विलियम्स, ओटीनेल बार्टमैन, ब्यूरन हेंड्रिक्स के साथ ऑलराउडंर नेंड्रे बर्जरन और एंडले फेलुकायो के रूप में अपनी तेज गेंदबाजों की मुफीद पिचों पर भारतीय बल्लेबाजों का इम्तिहान लेने के लिए पर्याप्त विकल्प हैं। तेज गेंदबाजों के साथ दक्षिण अफ्रीका के पास बाएं हाथ के स्पिनर केशव महाराज , लेग स्पिनर तबरेज शम्सी और अपनी ऑफ स्पिन से भारतीय बल्लेबाजों पर लगाम लगाने के साथ विकेट चटकाने का दम रखने वाले कप्तान एडन मरक्रम भी हैं।

भारत के पास खुद कप्तान सूर्य कुमार यादव के साथ अलग अलग अंदाज में पारी को बढ़ाने वाले यशस्वी जायसवाल व ऋतुराज गायकवाड़ की सलामी जोड़ी, शुभमन गिल, श्रेयस अय्यर , इशान किशन अथवा जीतेश शर्मा, रिंकू सिंह, स्पिन ऑलराउंडर उपकप्तान रवींद्र जडेजा, ऑफ आठवें नंबर तक मजबूत बल्लेबाजी है। भारत यदि तीन तेज गेंदबाज के साथ उतरता है तो फिर बाएं हाथ के अर्शदीप सिंह, मोहम्मद सिराज और मुकेश के साथ उतरना होगा क्योंकि दीपक चाहर अपने पिता के अस्वस्थ होने के कारण उपलब्ध नहीं हैं। भारत यदि तीन तेज गेंदबाजों और दो स्पिनरों के साथ उतरने का फैसला करता है तो फिर वह यह देखना दिलचस्प होगा कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे ज्यादा 9 विकेट चटका मैन ऑफ द' सीरीज रहे रवि बिश्नोई , अनुभवी कुलदीप यादव और ऑफ स्पिन ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर में किस एक को शामिल करेगा। अपने अनुभव के चलते केवल एक स्पिनर को एकादश में शामिल करने की स्थिति में उपकप्तान रवींद्र जडेजा से बेहतर भारत के लिए कोई अन्य स्पिनर नहीं है। भारत के चीफ कोच राहुल द्रविड़ और कप्तान सूर्य कुमार यादव के लिए सबसे बड़ी चुनौती डरबन की पिच के मुताबिक दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ संतुलित एकादश चुनने की होगी।

जिम्बाब्वे के कप्तान सिंकदर रजा पर दो मैच की पाबंदी

दुबई 9 दिसंबर (एजेंसियां)। आयरलैंड के खिलाफ मैच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिसंघ (आईसीसी) की आचार संहिता की लेवल-1 का उल्लंघन के दोषी पाये जाने जिम्बाब्वे के कप्तान सिंकदर राजा पर दो मैचों का प्रतिबंध लगाया गया है।

जिम्बाब्वे और आयरलैंड के बीच गुरुवार को हरारे स्पोर्ट्स क्लब में हुए पहले टी20 मैच मे रजा के अलावा आयरलैंड के खिलाड़ी कर्टिस केम्फर और जोस लिटिल को भी आईसीसी की आचार संहिता के उल्लघंन का दोषी पाया गया था, इसलिये उन दोनो पर भी दो मैच खेलने पर पाबंदी लगायी गयी है। जिम्बाब्वे के कप्तान रजा पर उनकी मैच फीस का 50 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है और दो डिमेरिट अंक दिये गये है , जिसका अर्थ है कि उनके नवीनतम उल्लंघन के बाद 24 महीने की अवधि के भीतर उनके संचित डिमेरिट अंक चार तक पहुंचने के बाद उन्हें मौजूदा तीन मैचों की श्रृंखला के शेष दो मैचों के लिए निलंबित कर दिया गया है।

आईसीसी ने एक बयान में कहा कि इन तीनों को आईसीसी आचार संहिता की लेवल-1 का उल्लंघन करते पाया गया, जो 'खेल की भावना के विपरीत आचरण' से संबंधित है। कप्तान रजा के हरफनमौला खेल की बदौलत जिम्बाब्वे ने यह मैच एक विकेट से जीत लिया था।

आईसीसी ने बयान जारी कर कहा कि कैंपर और लिटिल पर उनकी मैच फीस का 15 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है और प्रत्येक को एक डिमेरिट अंक प्राप्त हुआ है, जो 24 महीने के भीतर एक मैच खेलने से वंचित रहेंगे। कैंपर और लिटिल ने अपनी गलती स्वीकार कर ली है और आईसीसी मैच रेफरी के एमिरेट्स एलीट पैनल के एंडी पाइक्रॉफ्ट द्वारा प्रस्तावित मंजूरी को स्वीकार कर लिया और इस तरह से अब औपचारिक सुनवाई की कोई जरुरत नहीं रही। सिकंदर रजा ने भी अपनी गलती मान ली है, लेकिन पाइक्रॉफ्ट द्वारा प्रस्तावित दंड को स्वीकार नहीं किया है। इस मामले में शुक्रवार को औपचारिक सुनवाई में मंजूरी की पुष्टि की गई। रजा ने कहा कि कैम्फर और लिटिल ने उस पर हमला करने के उद्देश्य से अपना बल्ला दिखाने और अंपायर को दूरी बनाने को बोला था। जिन्होंने स्थिति को शांत करने की कोशिश की थी।

मैदानी अंपायर फोर्स्टर मुतिज़्वा और इकोनो चाबी, तीसरे अंपायर लैंगटन रूसेरे और चौथे अधिकारी क्रिस्टोफर फिरी ने आरोप लगाए। आईसीसी की आचार संहिता की लेवल 1 के उल्लंघनों में न्यूनतम जुर्माना आधिकारिक फटकार, अधिकतम जुर्माना खिलाड़ी की मैच फीस का 50 प्रतिशत और एक या दो डिमेरिट अंक काटने होते हैं।

रजा की अनुपस्थिति में शनिवार और रविवार को आयरलैंड के खिलाफ बाकी दो टी20 मैचों के लिए सीन विलियम्स को जिम्बाब्वे के कप्तान होंगे। कैंपर और लिटिल पर उनकी संबंधित मैच फीस का 15 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है और प्रत्येक को एक डिमेरिट अंक प्राप्त हुआ है। क्योंकि 24 महीने के भीतर यह उनका पहला अपराध है।

बांग्लादेश के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका की महिला वनडे टीम घोषित

केप टाउन, 9 दिसंबर (एजेंसियां)। बांग्लादेश के खिलाफ आगामी तीन मैचों की आईसीसी महिला चैम्पियनशिप श्रृंखला के लिए दक्षिण अफ्रीका ने अपनी महिला वनडे टीम का ऐलान कर दिया है।

टीम में तीन प्रमुख खिलाड़ी तेज गेंदबाज अयाबोंगा खाका, ऑलराउंडर मारिजैन कप्प और नादिन डी क्लार्क की वापसी हुयी है। ये खिलाड़ी बांग्लादेश के खिलाफ टी20 श्रृंखला में नहीं थे। टी20 सीरीज 1-1 से बराबरी पर समाप्त हुयी थी। हालाँकि, चोट के कारण टी20ई श्रृंखला से बाहर होने वाली अनुभवी क्लो ट्रायोन को वनडे टीम में भी जगह नहीं मिल सकी है। टी20 सीरीज के जरिये अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाली 20 वर्षीय एलिज़-मैरी मार्क्स के अलावा मिके डी रिडर भी वनडे टीम में जगह बनाने में सफल रही हैं। टीम का नेतृत्व हाल ही में नियुक्त पूर्णकालिक कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट करेंगी। चयनकर्ताओं की प्रोटियाज़ महिला संयोजक क्लिंटन डु प्रीज़ ने कहा, हम बांग्लादेश के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला के लिए चयनित खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई देते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी ने असाधारण कौशल, प्रतिबद्धता और सफल होने की भूख का प्रदर्शन किया है। विशेष रूप से एलिज़-मैरी मार्क्स , जिन्होंने मैदान पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। टीम की मुख्य कोच हिल्टन मोरेंग ने कहा मुझे बहुत खुशी है कि हम अपने अनुभव को बढ़ाने के लिए युवाओं को लाना जारी रख सकते हैं। हम जानते हैं कि दांव पर क्या है, दोनों टीमों ने हाल ही में सफल एकदिवसीय श्रृंखला जीती है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना है कि जिस तरह से हमने टी20ई की शुरुआत की है, उसके बाद हम उसमें सुधार कर सकते हैं।

टीम~ लौरा वोल्वार्ड्ट (कप्तान), एनेके बॉश, ताज़्मिन ब्रिट्स, नादिन डी क्लार्क, मिके डी रिडर*, लारा गुडॉल, सिनालो जाफ्ता, मारिज़ैन कप्प, अयाबोंगा खाका, मसाबाता क्लास, सुने लुस, एलिज़-मारी मार्क्स*, नॉनकुलुलेको म्लाबा, तुमी सेखुखुने, डेल्मी टकर।

बीबीएल छोड़ने का मकसद अपनी गेंदबाजी में सुधार करना : शादाब खान

नई दिल्ली, 9 दिसंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के हरफनमौला खिलाड़ी शादाब खान ने अपने गेंदबाजी कौशल को निखारने और टेस्ट टीम में वापसी के उद्देश्य से चार दिवसीय क्रिकेट को प्राथमिकता देने के लिए बिग बैश लीग (बीबीएल) अनुबंध से अलग होने के पीछे के कारण का खुलासा किया है। शादाब ने क्रिकेट पाकिस्तान से कहा, बिग बैश कॉन्ट्रैक्ट छोड़ने के पीछे का मकसद सबसे पहले चार दिवसीय क्रिकेट खेलकर अपनी गेंदबाजी में सुधार करना है और दूसरा अच्छा प्रदर्शन करके टेस्ट टीम में वापसी करना है। हालांकि उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी गेंदबाजी में सुधार की जरूरत है, 25 वर्षीय खिलाड़ी को भरोसा है कि लंबे खेल प्रारूप में खेलने से उन्हें अपने कौशल को और अधिक बढ़ाने में मदद मिलेगी। उन्होंने आगे कहा, मैंने राष्ट्रीय टी20 खेलने के कारण बिग बैश अनुबंध नहीं छोड़ा; बल्कि मेरा ध्यान चार दिवसीय क्रिकेट खेलने पर अधिक था। क्योंकि मुझे लगा कि मुझे अपनी गेंदबाजी में सुधार की जरूरत है, और वह चार दिवसीय क्रिकेट खेलने से आएगा। शादाब ने यह भी कहा कि वह खुद को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और वह ट्रैक पर वापस आने और राष्ट्रीय टीम में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए उत्सुक हैं। शादाब ने बताया, मैंने चार दिवसीय क्रिकेट खेलने और अपनी गेंदबाजी में सुधार करने के लिए खुद में निवेश करने की कोशिश की है। अगर मेरी गेंदबाजी में सुधार होता है और इसके साथ ही अगर मेरी बल्लेबाजी में भी सुधार होता है, तो यह पाकिस्तान टीम के लिए फायदेमंद होगा। आगामी विश्व कप के साथ अपने उद्देश्यों को संरेखित करने के लिए, शादाब ने कहा कि वह चार दिवसीय क्रिकेट खेलने को एक स्मार्ट कदम और अपने कौशल में निवेश के रूप में देखता है। प्रयास चार दिवसीय क्रिकेट के माध्यम से खुद को बेहतर बनाने और अपनी फॉर्म वापस लाने का है। क्योंकि विश्व कप नजदीक आ रहा है और अगर मैं अच्छी फॉर्म में रहा तो इससे पाकिस्तान को फायदा होगा। शादाब खान ने बाबर आजम के सभी प्रारूपों में राष्ट्रीय क्रिकेट टीम की कप्तानी छोड़ने के फैसले पर भी अपने विचार साझा किए। शादाब ने बाबर की पसंद के प्रति सम्मान के साथ-साथ अपनी ईमानदार इच्छाओं को भी व्यक्त किया। लेग स्पिनर ने टीम के हाल ही में नामित टी20 कप्तान शाहीन शाह आफरीदी के लिए भी आभार व्यक्त किया। देखिए, हर किसी का अपना निर्णय है, और बाबर ने पद छोड़ दिया है। हम उन्हें अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं। हमने पाकिस्तान के कप्तान के रूप में उनके साथ बहुत अच्छा समय बिताया है। अब, शाहीन ने भूमिका निभा ली है, और हम इसे लेकर उत्साहित हैं। हमने पीएसएल में उनकी (शाहीन की) कप्तानी देखी है और यह बहुत अच्छा लगता है। आइए देखें कि पहली बार उनकी कप्तानी में खेलना कैसा होता है; इससे अंदाजा लगेगा कि यह कितना मजेदार है और मैं शाहीन की कप्तानी में खेलने के लिए बहुत उत्साहित हूं।

डब्ल्यूएफआई का चुनाव 21 दिसंबर को होगा, परिणाम भी उसी दिन

नई दिल्ली, 9 दिसंबर (एजेंसियां)। रिटर्निंग पोलिंग ऑफिसर ने शनिवार को पुष्टि की कि भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के चुनाव 21 दिसंबर को होंगे और वोटों की गिनती के बाद उसी दिन नतीजे घोषित किए जाएंगे। यह सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल ही में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा लगाई गई रोक को रद्द करने के बाद आया है, जिससे नए डब्ल्यूएफआई गवर्निंग बॉडी के चुनाव की प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

चुनाव के लिए रिटर्निंग अधिकारी की ओर से जारी एक बयान में कहा गया, चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की अंतिम सूची की तैयारी और प्रदर्शन तक के सभी चरण (7 अगस्त को) पूरे हो चुके थे और मतदान, वोटों की गिनती और परिणाम की घोषणा जैसी विभिन्न गतिविधियां बाकी हैं।

इसमें आगे कहा गया है, डब्ल्यूएफआई के चुनावों पर मतदान से ठीक एक दिन पहले 11.08.2023 को पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा रोक लगा दी गई थी और इसलिए, 12.08.2023 को मतदान नहीं हो सका... सुप्रीम कोर्ट ने स्थगन आदेश हटा दिया है और इसलिए शेष चरण जैसे मतदान आदि अब निम्नलिखित संशोधित कार्यक्रम के अनुसार 21.12.2023 को फिर से शुरू होंगे।

चुनाव प्रक्रियाएं डब्ल्यूएफआई के अनुसमर्थित संविधान की आवश्यक आवश्यकताओं और शर्तों के साथ-साथ भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित मॉडल दिशानिर्देश, 2011 का अनुपालन करेंगी।

यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्लूडब्लू) ने समय पर चुनाव नहीं कराने के लिए भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) को अस्थायी रूप से तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया था । राष्ट्रीय कुश्ती संचालन संस्था को जून में चुनाव कराने थे। दुर्भाग्य से, विभिन्न राज्य इकाइयों द्वारा पेश की गई कई कानूनी चुनौतियों के कारण इन चुनावों में कई देरी का सामना करना पड़ा।

फिर, नए प्रशासकों को चुनने के लिए चुनाव 12 अगस्त को होने थे, लेकिन हरियाणा कुश्ती संघ (एचडब्ल्यूए) की एक याचिका के बाद पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा अगले आदेश तक डब्ल्यूएफआई चुनावों पर रोक लगाने के बाद इसमें और देरी हो गई।

न्यूजीलैंड ने बांग्लादेश को चार विकेट से हराया

मीरपुर 9 दिसंबर (एजेंसियां)। ग्लेन फिलिप्स के (31 रन पर तीन विकेट और 87 एवं 40 नाबाद) के हरफनमौला प्रदर्शन की मदद से न्यूजीलैंड ने शनिवार को दूसरे और अंतिम टेस्ट में मेजबान बांग्लादेश को चार विकेट से हरा कर श्रृखंला को 1-1 की बराबरी पर खत्म किया। शेर-ए-बांग्ला नेशनल स्टेडियम पर टॉस जीत कर बांग्लादेश ने पहले बल्लेबाजी करते हुये पहली पारी में 172 रन बनाये जिसके जवाब में फिलिप्स के 80 रनों की बदौलत न्यूजीलैंड ने पहली पारी में 180 रन बनाकर आठ रन की लीड हासिल की और एजाज पटेल (57 रन पर छह विकेट) की घातक गेंदबाजी से बांग्लादेश की दूसरी पारी को 144 रनों पर समेट दिया। कीवी टीम को जीत के लिये 136 रन का आसान लक्ष्य मिला जिसे मेहमान टीम ने छह विकेट खोकर हासिल कर लिया।

मात्र तीन दिनो तक चले टेस्ट में गेंदबाजों का बोलबाला रहा। टेस्ट का दूसरा दिन बारिश के कारण प्रभावित रहा। बांग्लादेश के तैजुल इस्लाम को टेस्ट श्रृखंला में 15 विकेट लेने के कारण मैन आफ द सीरीज घोषित किया गया। उन्होने दूसरे टेस्ट की पहली पारी में तीन और दूसरी पारी में दो विकेट चटकाये।

डब्ल्यूपीएल नीलामी : वृंदा को पछाड़ कर काशवी बनी सबसे महंगी अनकैप्ड खिलाड़ी

मुंबई, 9 दिसंबर (आईएएनएस) अनकैप्ड भारतीय खिलाड़ियों काशवी गौतम और वृंदा दिनेश ने महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2024 की नीलामी के दूसरे सत्र में गुजरात जायंट्स और यूपी वारियर्स के बीच बड़ा बोली युद्ध शुरू कर दिया और उन पर दांव लगाने के लिए बैंक तोड़ दिया। काशवी गौतम को 2 करोड़ रुपये में खरीदा गया, जबकि कर्नाटक की बल्लेबाज वृंदा दिनेश को 1.3 करोड़ रुपये में चुना गया।

गुजरात जायंट्स ने चंडीगढ़ की 20 वर्षीय ऑलराउंडर काशवी गौतम के लिए 2 करोड़ रुपये की विजयी बोली लगाई, जिससे वह डब्ल्यूपीएल 2024 नीलामी के पहले चरण में ऑस्ट्रेलिया की एनाबेल सदरलैंड के साथ संयुक्त रूप से सबसे महंगी खिलाड़ी बन गईं।

दाएं हाथ की बल्लेबाज और दाएं हाथ की मध्यम तेज गेंदबाज, काशवी ने हाल ही में मुंबई में इंग्लैंड ए महिला टीम के खिलाफ तीन टी20 मैचों में भारत ए के लिए खेला है और ऐसा प्रतीत होता है कि फ्रेंचाइजी के स्काउट्स ने कुछ ऐसा देखा है जो उन्हें लगता है कि खिलाड़ी को मेगा बनाता है। गुजरात ने यूपी वारियर्स के साथ एक भयंकर बोली युद्ध के बाद उसे जीता, जो इस नीलामी में गहरे पर्स वाली फ्रेंचाइजी में से एक है। वृंदा को एक निरंतर बल्लेबाज के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने कर्नाटक में स्थानीय लीगों में अच्छा प्रदर्शन किया है और यूपी वारियर्स ने गुजरात, मुंबई इंडियंस और दिल्ली को पछाड़ते हुए उन्हें चुना है। छह विदेशी खिलाड़ियों सहित कुल 17 खिलाड़ियों को अब तक की कार्रवाई में बेचा गया है, जिसमें अब तक कुल 10.25 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं।

अन्य महत्वपूर्ण बोलियों में, एकता बिष्ट 60 लाख रुपये में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के पास गईं, जिन्होंने 30 लाख रुपये के आधार मूल्य पर इंग्लैंड की स्पिनर केट क्रॉस को भी खरीद लिया। गुजरात जायंट्स को अब अपनी 18 सदस्यीय टीम पूरी करने के लिए पांच खिलाड़ियों को चुनने की जरूरत है, जबकि रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को चार खिलाड़ियों की जरूरत है। दिल्ली कैपिटल्स और यूपी वारियर्स के पास 17-17 खिलाड़ी हैं और उन्हें अपनी टीम पूरी करने के लिए एक और खिलाड़ी की जरूरत है। मुंबई इंडियंस के पास अब 16 खिलाड़ी हैं और नीलामी के शेष दौर में दो और खिलाड़ियों की जरूरत है।

महिला प्रीमियर लीग 22 फरवरी से शुरू होगी : रिपोर्ट

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई)ने महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के लिए एक समय सीमा की पहचान की है, जिसका दूसरा सीजन 22 फरवरी से 17 मार्च के बीच होने की संभावना है। क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार, महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल), जिसका दूसरा सीजन 22 फरवरी से 17 मार्च तक होने की संभावना है। हालांकि पांच टीमों की लीग के लिए विशिष्ट स्थान को अंतिम रूप नहीं दिया गया है, लेकिन ऐसे संकेत हैं कि लीग एक केंद्र के बजाय कई स्थानों पर आयोजित की जा सकती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुंबई में शनिवार को होने वाली डब्ल्यूपीएल नीलामी से पहले इस जानकारी पर चर्चा की गई। ऐसा माना जाता है कि पांच प्रतिद्वंद्वी टीमों- दिल्ली कैपिटल्स, गुजरात जायंट्स, मुंबई इंडियंस, रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर और यूपी वारियर्स को बीसीसीआई द्वारा इस अस्थायी समय सारिणी के बारे में सूचित कर दिया गया है। लीग के उद्घाटन संस्करण में, मुंबई ने सभी मैचों की मेजबानी की।

सार संक्षेप

प्रो टेनिस लीग : सांकरा स्टैग बबोलट योद्धा की बड़ी जीत

नई दिल्ली। इचिहबान समुराई ने हार्वेन प्रो टेनिस लीग (पीटीएल) के पांचवें सत्र में इंद्रप्रस्थ वॉरियर्स को हरा कर अपनी दूसरी जीत हासिल की, वहीं संकरा स्टैग बबोलट योद्धा और पैरामाउंट प्रोक टाइगर्स ने अपने अपने मैच जीते। डीएलटीए कॉम्प्लेक्स में प्रतियोगिता के दूसरे दिन शुक्रवार को इचिहबान समुराई ने इंद्रप्रस्थ वॉरियर्स को हराया।संकरा स्टैग बबोलट योद्धा ने शुरुआती दिन की हार से उबरते हुए लखनऊ एविएटर्स को 3 अंकों के बड़े अंतर से हराया। पैरामाउंट प्रोक टाइगर्स शाम को डीएमजी दिल्ली क्रूसेडर्स पर करारी जीत के साथ ग्रुप बी स्टैंडिंग में शीर्ष पर पहुंच गया। चैंपियन सांकरा स्टैग बाबोलट योद्धाओं ने लखनऊ एविएटर्स को 95-65 से हराया। इस बीच, लखनऊ एविएटर्स को अपनी चुनौती को जीवित रखने के लिए पैरामाउंट प्रोक टाइगर्स के खिलाफ एक बड़ी जीत की आवश्यकता होगी।

चीन के चेंगदू में होगी कलात्मक जिमनास्टिक विश्व चैंपियनशिप

बीजिंग। दक्षिण-पश्चिम चीन के सिचुआन प्रांत की राजधानी चेंगदू, 227 कलात्मक जिमनास्टिक विश्व चैंपियनशिप की मेजबानी करेगी। अधिकृत सूत्रों ने शनिवार को बताया कि 22 और 23 नवंबर को बांग्लादेश के ढाका में अंतर्राष्ट्रीय जिम्नास्टिक महासंघ (एफआईजी) की कार्यकारी समिति की बैठक आयोजित की गई थी जिसके बाद एफआईजी ने घोषणा की थी कि उन्हें चीनी जिमनास्टिक एसोसिएशन से 55वीं विश्व चैंपियनशिप की मेजबानी की पेशकश मिली है। बाद में, एफआईजी के महासचिव निकोलस बुओम्पेन ने एक आधिकारिक पत्र के जरिये बताया कि एफआईजी की कार्यकारी समिति ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग के जरिये चीन के चेंगदू शहर को चैंपियनशिप आवंटित करने का निर्णय लिया है। यह चैंपियनशिप 28 सितंबर से 6 अक्टूबर 227 तक होगी।

आरसीबी मजबूत टीम सुनिश्चित करना चाहती है : ल्यूक विलियम्स

मुंबई। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) को पता चल जाएगा कि शनिवार को मुंबई में महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 224 के लिए खिलाड़ियों की नीलामी के दौरान कब और कहां पैडल उठाना है, क्योंकि मुख्य कोच ल्यूक विलियम्स ने टीम की तैयारियों पर भरोसा जताया है और महत्वपूर्ण घटना के लिए व्यापक योजना बनायी है। अतीत में महिला बिग बैश लीग और महिला हंड्रेड चैंपियनशिप का खिताब जीतने वाली दुनिया के सबसे सफल कोचों में से एक विलियम्स नीलामी के लिए उत्साहित हैं और उनका लक्ष्य आगामी सीज़न के लिए एक मजबूत टीम बनाना है।

साहित्य

वह गीतकार जिसने गुलाम भारत में अंग्रेज़ों को ललकारा

'दूर हटो ऐ दुनिया वालों...'

■ ज़ाहिद ख़ान

संदर्भ : 11 दिसम्बर, गीतकार प्रदीप का स्मृति दिवस

हिंदी सिनेमा में गीतकार प्रदीप वह हस्ती हैं, जो अपने देश प्रेम और देशभक्ति गीतों की वजह से सारे देश में जाने-पहचाने जाते हैं। साल 1943 में फ़िल्म 'किस्मत' में लिखे उनके क्रांतिकारी गीत %दूर हटो ऐ दुनिया वालों...' की लोकप्रियता से घबराकर, बर्तानिया हुकूमत ने गीतकार प्रदीप के ख़िलाफ़ गिरफ़्तारी वारंट जारी कर दिया था। जिसके चलते प्रदीप कई दिनों तक अंडरग्राउंड रहे, लेकिन न तो फ़िल्म से यह गाना हटाया गया और न ही उन्होंने अंग्रेज़ी हुकूमत से माफ़ी मांगी। उस ज़माने में यह गीत इस क़दर लोकप्रिय हुआ कि सिनेमाघरों में दर्शक इसे बार-बार सुनने की फ़रमाइश करते थे। आलम यह था कि दर्शकों की फ़रमाइश पर फ़िल्म के आख़िर में इस गीत को दोबारा सुनाया जाने लगा। गीतकार प्रदीप के देशभक्ति गीत की बात हो, और 'चल चल रे नौजवान...'का ज़िक्र न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। फ़िल्म 'बंधन' (1940) में लिखे उनके इस गीत को, तो राष्ट्रीय गीत का मर्तबा मिला। वह दौर, देश की ग़ुलामी का दौर था। सिंध और पंजाब असेंबली ने इस गीत को राष्ट्रीय गीत की मान्यता दे दी और ये गीत वहां की असेंबली में गाया जाने लगा। अदाकार बलराज साहनी, उस वक़्त लंदन में बीबीसी हिंदी रेडियो में एनाउंसर थे, वे भी इस गीत को वहां प्रसारित करने से अपने आप को नहीं रोक पाये। स्वतंत्रता दिवस हो या गणतंत्र दिवस 'ऐ मेरे वतन के लोगों...' गीत के बिना अधूरा होता है।

साल 1954 में आई फ़िल्म 'जागृति' में भी गीतकार प्रदीप ने कई यादगार गीत लिखे। 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की...', 'हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के...,' और 'दे दी हमें आज़ादी बिना खड्ग बिना ढाल...' आदि गीतों ने बच्चों में जितनी धूम उस ज़माने में मचाई थी, उतनी ही मक़बूलियत आज भी क़ायम है। एक के बाद एक आये इन देशभक्ति भरे गीतों ने कवि प्रदीप को राष्ट्रकवि का मर्तबा दिला दिया। प्रदीप को सिर्फ़ देशभक्ति भरे गीत लिखने में ही अकेले महारत नहीं थी, बल्कि उन्होंने अनेक धार्मिक और दार्शनिक गीत भी सफलता से लिखे। उनकी मधुर आवाज़ ने इन गीतों को और नई ऊंचाईयां दीं। 'देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान' (फ़िल्म-नास्तिक), 'तेरे द्वार खड़ा भगवान' (फ़िल्म-वामन अवतार), 'काहे को बिसारा हरी नाम...', 'माटी के पुतले...' (फ़िल्म-चक्रधारी), 'पिंजरे के पंक्षी रे...' (फ़िल्म-नागमणि), 'कोई लाख़ करे चतुराई...' (फ़िल्म-चंडीपूजा), 'दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले' (फ़िल्म-दशहरा), 'मुखड़ा देख ले प्राणी' (फ़िल्म-दो बहन), 'सुख दुःख दोनों रहते' (फ़िल्म-कभी धूप कभी छांव)। प्रेरणास्पद गीत लिखने में भी प्रदीप का कोई सानी नहीं था। फ़िल्म 'पैग़ाम' का 'इंसान का इंसान से हो भाईचारा...' और फ़िल्म 'संबंध' का 'चल अकेला चल अकेला तेरा मेला पीछे छूटा....' ऐसे ही कुछ नग़में हैं, जिनके ज़रिए उन्होंने समाज को एक पैग़ाम देने की कोशिश की। यह गाने आज भी अंधेरे में हमें एक नई राह दिखलाते हैं।

> साल 1954 में आई फ़िल्म 'जागृति' में भी गीतकार प्रदीप ने कई यादगार गीत लिखे। 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की...', 'हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के...,' और 'दे दी हमें आज़ादी बिना खड़ग बिना ढाल...' आदि गीतों ने बच्चों में जितनी धूम उस ज़माने में मचाई थी, उतनी ही मक़बूलियत आज भी क़ायम है। एक के बाद एक आये इन देशभक्ति भरे गीतों ने कवि प्रदीप को राष्टकवि का मर्तबा दिला दिया। प्रदीप को सिर्फ़ देशभक्ति भरे गीत लिखने में ही अकेले महारत नहीं थी, बल्कि उन्होंने अनेक धार्मिक और दार्शनिक गीत भी सफलता से लिखे।

कवि प्रदीप ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल की। अपने कॉलेज के दिनों में वह आनंद भवन के नज़दीक रहते थे। पं. जवाहरलाल नेहरू का घर होने की वजह से यह स्थान उस वक़्त सियासत का मरक़ज था। जहां आये दिन सियासी बैठकें होती रहतीं। नौजवान रामचन्द्र नारायण द्विवेदी भी इनमें शामिल होते। उन्हें बचपन से ही लिखने का भी बड़ा शौक़ था। साहित्यिक दिलचस्पी बढ़ी, तो गीत-कविताएं लिखने लगे। इलाहाबाद के साहित्यिक वातावरण ने उनके इस शौक़ को और बढ़ाया। वह कवि सम्मेलनों में शिरकत करने लगे और उन्होंने अपना उपनाम %प्रदीप% रख लिया। अपने उत्कृष्ट लेखन और सुरीली आवाज़ से वह थोड़े से ही अरसे में साहित्यिक जगत में लोकप्रिय हो गए। यहां तक कि महाकवि निराला भी उनके गीत-कविताओं की तारीफ़ करने से अपने आप को नहीं रोक पाए। कवि प्रदीप फ़िल्मों में कैसे आये ?, इसका मुख़्तर सा क़िस्सा कुछ इस तरह से है, एक बार वह कवि सम्मेलन के लिए मुंबई गए, तो उनकी मुलाक़ात 'बॉम्बे टॉकीज' से जुड़े निर्देशक एनआर आचार्य से हुई। उन्होंने प्रदीप को 'बॉम्बे टॉकीज' के मालिक हिमांशु रॉय से मिलवाया। उन्होंने प्रदीप को अपनी फ़िल्म 'कंगन' के लिए साइन कर लिया। हर महीने उनकी तनख़्वाह 200 रुपए मुक़र्रर की गई। ज़ाहिर है वह इस नौकरी के वास्ते मुम्बई में ही शिफ़्ट हो गए। बतौर गीतकार प्रदीप ने इस फ़िल्म में चार गाने लिखे और इनमें से तीन को अपनी आवाज़ भी दी। साल 1939 में आई इस फ़िल्म ने बॉक्स ऑफिस पर सिल्वर जुबली मनाई। फ़िल्म में उनके लिखे गीत 'हवा तुम धीरे बहो...', 'हम आज़ाद परिंदों को..' ख़ूब लोकप्रिय हुए।

'कंगन' फ़िल्म की कामयाबी के बाद गीतकार प्रदीप 'बॉम्बे टॉकीज' का अभिन्न हिस्सा हो गए। बाद में 'बॉम्बे टॉकीज' की ही फ़िल्म 'बंधन', 'पुनर्मिलन', 'झूला', 'नया संसार' और 'किस्मत' में भी उन्होंने गाने लिखे। अपने गानों की वज़ह से इन फ़िल्मों ने एक नया इतिहास रचा। यह वह दौर था, जब देश में चारों और 'भारत छोड़ो आंदोलन' की गूंज थी। प्रदीप के लिखे गीत 'दूर हटो ऐ दुनियावालों हिंदुस्तान हमारा है' ने उन्हें बड़ा गीतकार बना दिया। %भारत छोड़ो आंदोलन% में ये गीत सत्याग्रहियों के लिए एक नारा बन गया था। फ़िल्म 'किस्मत' के बाक़ी गीत भी सुपर हिट साबित हुए। ख़ास तौर से 'धीरे-धीरे आ रे बादल...', 'पपीहा रे मेरे पिया से', 'अब तेरे सिवा कौन मेरा..' गानों ने देश के घर-घर में धूम मचा दी। अपने गीत-संगीत की वज़ह से ही 'किस्मत' देश की पहली गोल्डन जुबली फ़िल्म बनी। फिल्म 'पैग़ाम' में प्रदीप ने अलग ही रंग के गीत लिखे। ख़ास तौर पर 'ओ अमीरों के परमेश्वर'। इस गाने के ज़रिये उन्होंने अमीरों की दुनिया में ग़रीबों की परेशानियों को बड़े ही संवेदनशीलता से दिखलाया है, ''ऐसा लगता ग़रीबों के जग में/आज रख़वाला कोई नहीं/ऐसा लगता के दुखियों के आंसू/पोछने वाला कोई नहीं/ओ अमीरों के परमेश्वर।''

साल 1954 में आई फ़िल्म 'नास्तिक' के गीतों से प्रदीप को धार्मिक गीतकार के तौर पर नई पहचान मिली। इस फ़िल्म में उन्होंने न सिर्फ़ गीत लिखे, बल्कि उन्हें गाया भी। ज़ाहिर है कि यह फिल्म भी कामयाब रही। साल 1975 में आई छोटे बजट की फ़िल्म 'जय मां संतोषी' भी गीतकार प्रदीप के गीतों की वजह से पूरे देश में ख़ूब चली। 'मैं तो आरती उतारूं मां', 'यहां वहां जहां तहां', 'करती हूं मैं तुम्हार व्रत मैं' और 'मदद करो संतोषी मां' फ़िल्म के सारे गानों ने लोकप्रियता की नई मिसाल पेश की। साल 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान कवि प्रदीप ने सैनिकों की शहादत और उनके सम्मान में 'ऐ मेरे वतन के लोगों....' लिखा। इस गाने को पूरे देश में क्या मक़बूलियत मिली, अब यह एक इतिहास है। कवि प्रदीप के ही सुझाव पर इस गाने से हुई कमाई को युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की विधवाओं के कल्याण के लिए दिया जाता है।

गीतकार प्रदीप ने इकहत्तर फ़िल्मों में तक़रीबन सत्रह सौ गाने लिखे। साल 1958 में एचएमवी ने उनकी तेरह कविताओं से सजा एक एलबम 'राष्ट्रकवि' निकाला। प्रदीप वैसे तो कई पुरस्कार-सम्मानों से नवाज़े गए। साल 1961 में उन्हें 'संगीत नाटक अकेदमी अवार्ड' तो साल 1997 में उन्हें भारतीय सिनेमा के सबसे प्रतिष्ठित सम्मान 'दादा साहेब फ़ाल्के सम्मान' से नवाज़ा गया। मध्य प्रदेश जहां प्रदीप ने जन्म लिया, यहां की सरकार ने उनकी स्मृति में 'राष्ट्रीय कवि प्रदीप सम्मान' स्थापित किया है। जो हर साल किसी गीतकार को दिया जाता है। 'राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' और 'संत ज्ञानेश्वर सम्मान' से भी वह सम्मानित किए गए, लेकिन देश की सरकारों ने उन्हें अपने सबसे बड़े नागरिक सम्मानों 'पद्म श्री', 'पद्म भूषण' आदि के क़ाबिल नहीं समझा। जबकि उनसे कई दर्जे जूनियर और कम प्रतिभावान लोगों को इन सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। आज भले ही गीतकार प्रदीप हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपने देशभक्ति गीतों की वज़ह से हमेशा अमर रहेंगे। देशवासी उन्हें कभी भुला नहीं पायेंगे।

कविता

वर्णमाला

■ मंगलेश डबराल

एक भाषा में अ लिखना चाहता हूँ
अ से अनार अ से अमरूद
लेकिन लिखने लगता हूँ अ से अनर्थ अ से अत्याचार
कोशिश करता हूँ कि क से क़लम या करुणा लिखूँ
लेकिन मैं लिखने लगता हूँ क से क्रूरता क से कुटिलता
अभी तक ख से खरगोश लिखता आया हूँ
लेकिन ख से अब किसी ख़तरे की आहट आने लगी है
मैं सोचता था फ से फूल ही लिखा जाता होगा
बहुत सारे फूल
घरो के बाहर घरों के भीतर मनुष्यों के भीतर
लेकिन मैंने देखा तमाम फूल जा रहे थे
ज़ालिमों के गले में माला बन कर डाले जाने के लिए
कोई मेरा हाथ जकड़ता है और कहता है
भ से लिखो भय जो अब हर जगह मौजूद है
द दमन का और प पतन का सँकेत है
आततायी छीन लेते हैं हमारी पूरी वर्णमाला
वे भाषा की हिंसा को बना देते हैं
समाज की हिंसा
ह को हत्या के लिए सुरक्षित कर दिया गया है
हम कितना ही हल और हिरन लिखते रहें
वे ह से हत्या लिखते रहते हैं हर समय ।

बोधकथा

मिट्टी ने मटके से पूछा- 'मैं भी मिट्टी तू भी मिट्टी, परंतु पानी मुझे बहा ले जाता है और तुम पानी को अपने में समा लेते हो. वह तुम्हें गला भी नहीं पाता, ऐसा क्यों?' मटका हंसकर बोला- 'यह सच है कि तू भी मिट्टी है और मैं भी मिट्टी हूं. पर मेरा संघर्ष अलग है. पहले मैं पानी में भीगा, पैरों से गूंथा गया फिर चाक पर चला कुम्हार के. थापी की चोट, आग की तपन को झेला. संघर्ष झेलकर पानी को अपने में रखने की ताकत मैंने पायी.

मंदिर की सीढ़ियों पर जड़े पत्थर ने मूर्ति के पत्थर से पूछा- 'भाई तू भी पत्थर मैं भी पत्थर पर लोग तुम्हारी पूजा करते हैं और मुझे पैरों से रौंदकर, बिना ध्यान दिये चलते हैं. ऐसा क्यों? मूर्ति के पत्थर ने उत्तर दिया- क्या तू मेरे संघर्ष को जानता है? मैंने इस शरीर पर कितनी छैनियों के प्रहार सहे हैं, मुझे कई बार घिसा गया है, मार और संघर्ष की पीड़ा को सहकर ही मैं इस रूप में आया हूं. संघर्षों की भट्टी में तपकर ही 'जीवन' स्वर्ण बनता है.

प्रस्तुति : श्रीकांत कुलश्रेष्ठ

व्यंग्य ■ जश्रीलाल शुक्ल

दो आदमी पुराने

कुछ दिन हुए, रामानंदजी और राकेशजी अपने-अपने पेशे से रिटायर हो कर सिविल लाइन्स में बस गए थे। अपने यहाँ का चलन है कि रिटायर होने के बाद और इस लोक से ट्रांसफर होने के पहले बहुत से लोग सिविल लांइस में बँगले बनवा लेते हैं। इन्होंने भी वहाँ अपने-अपने बँगले बनवा लिए।

रामानंदजी किसी समय में चोरी किया करते थे। वे पुराने स्कूल के चोर थे। इस कारण उनका विश्वास तांत्रिक क्रियाओं में भी था। बाद में चोरी सिखलाने के लिए उन्होंने एक नाइट स्कूल भी खोला। कुछ समय बीतने पर चोरी के माल के क्रय-विक्रय की उन्होंने एक दुकान कर ली। इस सबसे अब वे रिटायर हो चुके थे और अपने को रिटायर कहा करते थे।

राकेशजी रिटायर तो हो चुके थे, पर चूँकि वे कवि थे इस कारण वे अपने को रिटायर मानने को तैयार न थे। कभी उन्होंने एम.ए. पास किया था; और फिर वे एक कॉलेज में प्रोफेसर हो गए थे। उस पेशे में तो वे ज्यादा नहीं चल पाए पर कवि की हैसियत से उन्हें ऊँचा स्थान मिल गया था। अर्थात अब तक उनके पास उनकी अपनी कविताएँ थी, अपने प्रकाशक थे, अपने ही आलोचक थे, अपने ही प्रशंसक और पुरस्कारदाता थे। इधर कुछ आलोचक उन्हें कविता के क्षेत्र में भी रिटायर कहने लगे थे।

दोनों पड़ोसी थे। दोनों को एक-दूसरे के पुराने व्यवसाय का ज्ञान था। उनमें मित्रता हो गई। दोनों प्राय- हर बात में एकमत रहते थे। दोनों यही समझते थे कि इस युग में योग्यता और कला का ह्रास हो रहा है और आज की पीढ़ी बिल्कुल जाहिल, निरर्थक और अयोग्य है।

इसीलिए एक दिन लॉन में टहलते-टहलते राकेशजी ने कहा, 'आज की पढ़ाई में रक्खा ही क्या है? मैं आठवें दर्जे में हिंदी कविता का अर्थ अंग्रेजी में लिखता था। अब बी.ए. में अंग्रेजी कविता का अर्थ हिंदी में लिखाया जाता है।'

रामानंदजी बोले, 'आप ठीक कहते हैं। हमारे जमाने में कुछ लोग फर्श पर डंडा ठोंक कर जमीन में गड़े हुए धन का हाल जान लेते थे। आज के दिन सामने कपड़े से ढँकी तिजोरी रक्खी रहती है और लोग उसे मेज समझ कर बिना छुए ही निकल जाते हैं।'

राकेशजी ने कहा, 'और जम कर साधना करने का तो समय ही चला गया है। आजकल...।'

बात काट कर रामानंदजी बोले, 'साधना अब कौन कर सकता है? हम लोगों ने अमावस की रात में मसान जगाया था। मुर्दे की खोपड़ी में चावल पका कर उसे जिस घर में डाल देते वहाँ का माल...।'

> राकेशजी रिटायर तो हो चुके थे, पर चूँकि वे कवि थे इस कारण वे अपने को रिटायर मानने को तैयार न थे। कभी उन्होंने एम.ए. पास किया था; और फिर वे एक कॉलेज में प्रोफेसर हो गए थे। उस पेशे में तो वे ज्यादा नहीं चल पाए पर कवि की हैसियत से उन्हें ऊँचा स्थान मिल गया था। अर्थात अब तक उनके पास उनकी अपनी कविताएँ थी, अपने प्रकाशक थे, अपने ही आलोचक थे, अपने ही प्रशंसक और पुरस्कारदाता थे। इधर कुछ आलोचक उन्हें कविता के क्षेत्र में भी रिटायर कहने लगे थे।

राकेशजी ने जल्दी में कहा, 'नहीं नहीं, वैसी साधना से मेरा मतलब नहीं है। मैं साहित्य-साधना की बात कर रहा हूँ। आजकल लोग व्याकरण, पिंगल, काव्यशास्त्र का नाम तक नहीं जानते और नई-नई बातों के आविष्कारक बन जाते हैं। कोई दो-दो पंक्तियों को लिए मुक्तक लिख रहा है, अतुकांत चला रहा है, कोई क्रियाओं के नए-नए प्रयोग भिड़ा रहा है : और पूछ बैठिए कि अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया में क्या भेद है तो अंग्रेजी बोलने लगेंगे।'

एक गहरी साँस खींच कर रामानंदजी बोले, 'आप सच कहते हैं, अपने यहाँ भी यही दशा है। दीवाल की कौन कहे, कागज पर कायदे की सेंध नहीं लगा सकते और बात करेंगे सिटकनी खोलने की, रोशनदान तोड़ने की, जेब काटने की। नई-नई तरकीबों की डींग हाँकेंगे। और पुरानी...।'

राकेशजी अपनी धुन में कहते गए, 'और विनम्रता तो रही ही नहीं। कुछ सिखाओ तो सीखेंगे नहीं। कुछ बताओ तो बिना समझे-बूझे अकड़ने लगेंगे। आज के साहित्यिक, साहित्यिक नहीं - लठैत हैं, लठैत।'

रामानंदजी समर्थन करते हुए बोले, 'साहित्यिकों के क्या पूछने राकेशजी। यहाँ तो अबके चोर नहीं रहे। वे तो डकैत हैं, डकैत। अपना पुराना तरीका तो यह था कि घर में घुसे और बच्चे ने खाँस दिया तो विनम्रतापूर्वक बाहर निकल आए। पर आजकल के ये लोग किसी को जागता हुआ पा जाएँ तो...' सहम कर उन्होंने वाक्य पूरा किया, '%बाप रे बाप..'

अब राकेशजी उत्साहित हो गए और बोले, 'ये सब जाहिल हैं, निरर्थक हैं। पहले तो लिखते-लिखते हाथ ऐसा मँज जाता था कि पाठक बिना पढ़े ही दूर से समझ जाते थे कि अमुक कवि की कविता है। उस पर उनका व्यक्तित्व झलकता था...।'

रामानंदजी ने धीरे से कहा, 'यही तो। सेंध की शकल देख कर लोग कह देते थे कि यह फँला ने लगाई है। अब तो सिटकनी खुली पड़ी है...।'

उपमा राकेशजी को पसंद आ गई। 'बोले, 'आजकल यही तो है ही। साहित्य के दरवाजे की सिटकनी अंदर से खोल-खोल कर न जाने कितने लोग घुस आए हैं।'

बिन समझे हुए, रामानंद जी ने कहा, 'जी हाँ, पहले तो सेंध का ही चलन था।'

राकेशजी ने जल्दी से कहा, 'जी, आप मेरा मतलब नहीं समझे। मैं कहा रहा था कि...।'

अकस्मात उन्होंने चौंक कर कुरते की जेब पकड़ ली। रामानंदजी का हाथ उनकी मुट्ठी में आ गया। नाराजगी से राकेशजी बोले, 'यह क्या? आप मेरी जेब काट रहे थे।'

रामानंदजी ने विनम्रता से हाथ छुड़ा कर कहा, 'यही समझ लीजिए। बात यह है कि...बात यह है कि ये नौसिखिए कुछ काम तो बड़ी सफाई से कर दिखाते हैं। मैं आपस में वही देख रखा था कि यह जेब वाला काम मुझसे भी चल पाता या नहीं।'

रामनंदजी नर्म पड़े। बोले, 'देख लिया आपने।'

बिना उत्साह के, रामानंदजी साँस खींच कर बोले, 'देख लिया राकेशजी यह सब के बूते की बात नहीं। जो हमने कर लिया वह आज वाले नहीं कर पाते हैं। पर इनके भी कुछ ऐसे खेल हैं जो हम नहीं खेल पाते। अपना-अपना जमाना है।'

सहसा राकेशजी बिगड़ कर बोले, 'यह सब आप ही के यहाँ चलता होगा। अपने यहाँ तो अब भी जो कहिए, करके दिखा दूँ। रामानंदजी, यह तो करने की विद्या है। चाहे कवित्व हो, चाहे कविता हो, या हो नई कविता। लिखूँगा तो अब भी आजकल वालों से अच्छा ही लिखूँगा।'

रामानंदजी राकेशजी की ओर देखते रहे। उनमें कभी मतभेद नहीं हुआ था। पहली बार उन्हें लगा कि कुछ ऐसी भी बातें हैं जहाँ उनकी राय हमेशा एक नहीं होगी।

अब बढ़ेगी ठंड,आसमान से बादलों के छंटते ही रात में गिरेगा पारा

पर्यटन स्थलों में रहेगी भारी भीड़

बिलासपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। चार दिनों की बारिश के बाद धूप निकलने से लोगों को राहत मिली। हालांकि, आसमान साफ होने से ठंड बढ़ गई है। दिनभर ठंड़ी हवाएं चलती रहीं। धूप निकलने के बावजूद लोगों को ठंड का अहसास होता रहा। सर्द हवाओं ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं।

सुबह के समय कोहरा छाया रहा। पिछले सप्ताह की अपेक्षा ठिठुरन बढ़ गई है। शहर के तापमान में आई गिरावट का असर आम लोगों की दिनचर्या पर भी दिखा। पिछले कई दिनों से लगातार ठंड में वृद्धि हुई है। घने धुंध ने भी लोगों को परेशान कर रखा है। लोग सिर से पैर तक गर्म कपड़ों से ढके दिखाई दे रहे हैं। ठंड मौसम में कई बीमारियों का प्रभाव बढ़ जाता है।

अंचल में पर्यटक की दृष्टि से मौसम शानदार बना हुआ है। ऐसा लग रहा है कि रविवार को पर्यटन स्थलों में खूब भीड़ उमड़ेगी। तीन दिनों बाद सूर्यदेव के दर्शन हुए। मौसम खुशनुमा बना हुआ है। रेनकोट और छाता फिर से वापस आलमारी में चले गए। इधर शुक्र को लोग घर के आंगन

व छतों में गर्म कपड़ों के साथ धूप सेंकते दिखे। मौसम विशेषज्ञ सिराज खान की मानें तो विक्षोभ का असर समाप्त हो चुका है। अब सर्दी बढ़ेगी। इसके कारण लोगों को अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने की जरूरत है। खासकर छोटे बच्चों और बुजुर्गों को। मौसम वेधशाला के मौसम विज्ञानी डा.एचपी चंद्रा के मुताबिक एक ऊपरी हवा का चक्रीय चक्रवाती परिसंचरण दक्षिण छत्तीसगढ़ और उससे लगे विदर्भ के ऊपर 1.5 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। एक पश्चिमी विक्षोभ चक्रीय चक्रवाती परिसंचरण के रूप में हरियाणा और उसके आसपास 1.5 किलोमीटर से 4.5 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है और इसका अक्ष 5.8 किलोमीटर पर 75 डिग्री पूर्व और 28 डिग्री उत्तर में स्थित है। प्रदेश में आठ दिसंबर को एक-दो स्थानों पर बहुत हल्की वर्षा होने की संभावना बनी हुई है।

अधिकतम तापमान में अगले चार दिनों में पांच से छह डिग्री वृद्धि और न्यूनतम तापमान में इसी अवधि में तीन से चार डिग्री की गिरावट होने की संभावना है। प्रदेश में बादल अब छंटने लगे हैं। ठंड बढ़ने के साथ एक बार फिर ऊलन मार्केट और रेडीमेड दुकानों में भीड़ बढ़ेगी। बाजार को काफी समय से कड़ाके की ठंड का इंतजार था। इस सीजन में अभी तक एक बार भी ऐसा मौका नहीं आया जब न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से नीचे आया हो। लेकिन जिस तरह से तीन दिनों तक वर्षा और झड़ी की स्थिति बनी है मौसम विभाग ने भी संभावना जताते हुए कहा है कि आने वाले एक दो दिनों में सुबह घना कोहरा और पारा पांच डिग्री तक नीचे आ सकता है,ऐसी स्थिति में लोग गर्म कपड़ों की बिक्री निश्चित रूप से बढ़ेगी।

शिक्षक पात्रता परीक्षा की वैधता आजीवन

बिलासपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, रायपुर द्वारा वर्ष 2023 में बस्तर एवं सरगुजा डिवीजन में शिक्षक पद पर भर्ती हेतु विज्ञापन जारी किया गया। दीनदयाल नगर, राजनांदगांव निवासी मनीषा ठाकुर द्वारा बस्तर डिवीजन में शिक्षक पद पर भर्ती हेतु आवेदन किया गया एवं संपूर्ण प्रक्रिया के पश्चात् वह परीक्षा में चयनित हुई परन्तु 30 सितम्बर 2023 को संयुक्त संचालक, शिक्षा संभाग, बस्तर द्वारा मनीषा ठाकुर को इस आधार पर अपात्र कर दिया गया कि उसका टी.ई.टी. सर्टिफिकेट की वैधता समाप्त हो चुकी है। उक्त आदेश से क्षुब्ध होकर मनीषा ठाकुर द्वारा हाईकोर्ट अधिवक्ता अभिषेक पाण्डेय एवं दुर्गा मेहर के माध्यम से हाईकोर्ट बिलासपुर के समक्ष रिट याचिका दायर की गई।

अधिवक्ता अभिषेक पाण्डेय एवं दुर्गा मेहर द्वारा हाईकोर्ट के समक्ष यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि पूर्व में शिक्षक पात्रता परीक्षा टी.ई.टी. की वैधता सात वर्ष के लिए की गई थी परंतु दिनांक 09.06.2021 को नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (एनसीटीई) द्वारा टी.ई.टी. परीक्षा की वैधता आजीवन (लाइफटाईम) कर दी गई थी, उसके पश्चात् 26 जून 2021 को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा एक सर्कुलर जारी कर शिक्षक पात्रता परीक्षा टी.ई.टी. परीक्षा की वैधता आजीवन (लाइफटाईम) कर दी गई है। चूंकि याचिकाकर्ता द्वारा वर्ष 2011 में टी.ई.टी. परीक्षा पास कर ली गई है। अतः एनसीटीई एवं छत्तीसगढ़ शासन द्वारा जून 2021 में जारी सर्कुलर के तहत याचिकाकर्ता की टी.ई.टी. सर्टिफिकेट की वैधता लाईफटाईम है, अतः वह शिक्षक पद पर भर्ती की पात्र है। उच्च न्यायालय, बिलासपुर द्वारा उक्त रिट याचिका की सुनवाई के पश्चात् रिट याचिका को स्वीकार कर संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, रायपुर एवं संयुक्त संचालक, शिक्षा संभाग, बस्तर को यह निर्देशित किया गया कि वे उपरोक्त वर्णित सर्कुलर के आधार पर याचिकाकर्ता के अभ्यावेदन का निराकरण कर याचिकाकर्ता को बस्तर संभाग में शिक्षक पद पर ज्वाईनिंग प्रदान करे।

सार-संक्षेप

डीपीएस के निशानेबाजों ने नेशनल राइफल शुटिंग चैंपियनशिप में लहराया परचम

बिलासपुर,9 दिसंबर (देशबन्धु)।दिल्ली पब्लिक स्कूल में स्थित बुल्स आई शुटिंग एकेडमी से अनुष्का पटेल स्कोर 599.9, तारूण्य शेंडे स्कोर 599.1, मनीत कौर मक्कड़ स्कोर 589.8 और आदित्य सिंह ने 589.4 अंक अर्जित कर उपाधि प्राप्त किया, वही अन्वेषा तिवारी ने स्कोर 602.5 अंक अर्जित करते हुए इंडिया टीम की ट्रायल में स्थान प्राप्त किया.नई दिल्ली में 15 नवम्बर से 2 दिसम्बर के बीच 66 वी राष्टीय राइफल शुटिंग चैंपियनशिप का आयोजन किया गया था। मौके पर उपस्थित संस्था के प्राचार्य जसपाल सिंह मथ, प्रशासनिक अधिकारी आर सी मोहन्ती, खेल विभाग प्रमुख मनोज कश्यप, शूटिंग कोच पवन दुबे, रॉबिंसन जॉन, राजनारायण श्रीमोर, निरूपा विश्वास, साहनवाज एवं अन्य शिक्षक ने बधाई व शुभकामनाएं दिए।

सिलपहरी-धुमा में जर्जर सड़क से हादसे की आशंका

बिलासपुर , 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। सिलपहरी से धुमा होते हुए पिरेया जाने वाली सड़क निर्माण कार्य अब लोगों के लिए बारिश में मुसीबत बन गई है। कई माह से ठेकेदार ने सड़क पर अधूरा पुलिया निर्माण और मिट्टी फिलिंग का ही काम पूरा किया है। इससे सड़क पर बारिश के बाद कीचड़ और फिसलन से हादसे का खतरा है। सड़क पर बारिश में से पहले जीएसबी वर्क पूरा हो जाना था, लेकिन मौके सिर्फ पुलिया निर्माण और मिट्टी फिलिंग का ही काम ज किया जा सका है। अब बारिश के बाद सड़क पर कीचड़ से लोगों का चलना दूभर हो गया। कुछ बाइक व स्कूटी सवार तो फिसलन भरी सड़क पर गिर तक गए। शुक्रवार को कई मोटरसाइकिल सड़क पर कीचड़ की होने की वजह से उनकी गाड़ियां फस गई। लेदेकर राहगीरों ने बड़ी मुश्किल से अपनी गाड़ियों को यह से निकाला।

नाबालिग से छेड़छाड़ करने वाला गिरफ्तार

बिलासपुर , 9 दिसम्बर(देशबन्धु)। नाबालिग से छेड़छाड़ करने वाले आरोपी को कोटा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। कोटा पुलिस ने बताया कि प्रार्थी थाना उपस्थित आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि इसकी नाबालिक लड़की उम्र 7 साल को गांव का ही विकास कुमार उर्फ गोरे पोर्ते पिता श्याम आश्रय पोर्ते उम्र 30 साल के द्वारा बजे खाई दूंगा कहकर अपने घर ले गया और मेरी लड़की के साथ अश्लील हरकत किया। प्रार्थी के रिपोर्ट पर अपराध पंजीबध्द कर विवेचना कार्यवाही में लिया गया। विवेचना दौरान अपराध धारा सबूत के आधार पर आरोपी विकास कुमार उर्फ गोरे पोर्ते को गिरफ्तार कर आज न्यायिक रिमांड पर भेजी जाती है।

पोकलेन लगाकर कर रहे रेत की डंपिंग

बिलासपुर , 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। शहर और उसके चारों तरफ ही नहीं आसपास के ग्रामीण इलाकों में भी रेत की जगह-जगह अवैध डंपिंग की गई है। माफिया घाटों में पोकलेन मशीन लगाकर 24 घंटे रेत खोद रहे हैं । सबसे गंभीर बात ये है कि रेत घाटों और पूरे जिले में हो रही रेत की अवैध डंपिंग की मॉनीटरिंग का जिम्मा खनिज विभाग के महज एक इंस्पेक्टर के जिम्मे है। अवैध रेत भंडारण को रोकने और रेत की कीमत कम करने कलेक्टर अवनीश शरण ने खनिज के अधिकारियों को जमकर फटकारा भी था। लेकिन उसके बाद भी रेत की अवैध रुप से डंपिग की जा रही है और लोगो को महँगे दामो में बेची जा रही है। अलग अलग जगहों पर माफिया रेत की डंपिंग कर उन्हें टैक्टर के माध्यम से ग्राहकों महंगे दाम में बेच रहे हैं।

डबल इंजन की सरकार से होगा चहुंमुखी विकास-ज्ञान सिंह

बिलासपुर , 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ में पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा सरकार बनने पर पूर्व प्रदेश प्रभारी ज्ञान सिंह राजपाल ने मतदाताओं का आभार व्यक्त कर कहा कि भाजपा सरकार बनने से राज्य का चहुमुखी विकास होगी, भारी मतो से विजयी होने पर छ.ग. भाजपा पूर्व प्रदेश प्रभारी ज्ञान सिंह राजपाल ने प्रदेश के प्रत्याशियों को जीत दिलाने का श्रेय तथा सरकार बनाने में प्रमुख रूप से प्रदेश के विधानसभा वार के शक्ति केन्द्र प्रभारी संयोजक सह संयोजक, बूथ अध्यक्ष, सचिव, बुथ कमेटी पन्ना प्रभारी सहित समस्त मोर्चा प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों कार्यकर्ताओं एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत की। भाजपा प्रदेश के पूर्व प्रभारी ज्ञान सिंह राजपाल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की यह जीत कांग्रेस के पांच साल के आतंक का परिणाम है। सभी वर्ग के लोग कांग्रेस से परेशान थे, त्रस्त थे। प्रदेश के कर्मचारी एवं अधिकारियों में भी गुस्सा था।अराजकता का माहौल था। कांग्रेस ने छत्तीस वादों में एक वादा पूरा नहीं किया। गंगा जल हाथ में लेकर झूठे वादे कर गंगा जल का अपमान किया। परिणाम स्वरूप प्रदेश में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया । राजपाल ने कहा कि राज्य में सरकार बनने के बाद अब पूरे प्रदेश के हर क्षेत्र में बिना भेदभाव का चहुंमुखी विकास होगा। डबल इंजन की सरकार केन्द्र में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तथा राज्य में सरकार बनने से अब विकास में बाधा नहीं होगी सबका साथ, सबका विकास एवं सबके विश्वास के सबके प्रयास से आने वाले वर्ष में नगरीय एवं पंचायत चुनाव होने है जिसमें नगर पंचायत, नगर परिषद, नगर निगम एवं जनपद पंचायतों, जिला पंचायतों के चुनाव में जनता के आशीर्वाद से भाजपा के अध्यक्ष बन जाने से चार इंजन की सरकार बन जायेगी। इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ऐतिहासिक विजय रैली में भी मोदी ने गारंटी दी कि अब भाजपा की सरकार छ.ग. में पुनः विकास की गाथा लिखेगी।

हवाई सेवा आंदोलन को समर्थन देने वाले विधायकों का समिति करेगी सम्मान

विधायक धर्मजीत,धरमलाल,अटल और सुशांत शुक्ला ने दिया समर्थन

चार साल से चल रहा हवाई सेवा संघर्ष समिति का आंदोलन

बिलासपुर, 9 दिसंबर(देशबन्धु)। हवाई सेवा संघर्ष समिति के द्वारा आंदोलन में सहयोग देने वाले विधायक धरमलाल कौशिक धर्मजीत सिंह सुशांत शुक्ला का सम्मान किया जाएगा। हवाई सेवा संघर्ष समिति के सुदीप श्रीवास्तव ने बताया छत्तीसगढ़ की विधानसभा से दिल्ली तक महानगर तक हवाई के आंदोलन को लेकर धर्मजीत सिंह तथा धरमलाल कौशिक ने सदन में अपनी बात रखी है। अटल श्रीवास्तव तथा सुशांत शुक्ला भी लगातार धरना आंदोलन को अपना समर्थन देते रहे हैं। अब विधानसभा चुनाव में इनकी की जीत हुई है और हवाई सेवा संघर्ष समिति इन सभी विधायकों का सम्मान करेगी।

आज के धरना आंदोलन में प्रमुख रूप सुदीप श्रीवास्तव महेश दुबे नारायण राय राकेश शर्मा बद्री यादव संजय पिल्लई रंजीत खनूजाशिवा मुदलियार, राजेंद्र भंडारी केशव गोरख, मनोज श्रीवास बाटु सिंह ने कहां है कि पिछले 4 साल से चल रहे हैं हवाई सेवा संघर्ष समिति के धरना आंदोलन को नवनिर्वाचित विधायकों ने हमेशा समर्थन दिया है । धर्मजीत सिंह ने तो विधानसभा में इस मुद्दे को उठाया था सुदीप श्रीवास्तव ने बताया कि चकरभाटा एयरपोर्ट में महानगर तक हवाई सेवा का लाभ मिले। इसके लिए लगातार आंदोलन किया जा रहा है। हवाई सेवा संघर्ष समिति के आंदोलन को आगे बढ़ाने में अटल श्रीवास्तव धर्मजीत सिंह धरमलाल कौशिक तथा सुशांत शुक्ला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसलिए हवाई सेवा संघर्ष समिति के द्वारा उनका सम्मान किया जाएगा।समिति ने यह भी कहा है कि अब प्रदेश में भी भाजपा की सरकार है और दिल्ली में भी भाजपा की सरकार अब केंद्र और राज्य सरकार मिलकर चकर भाटा एयरपोर्ट में जो समस्या आ रही है उसका निराकरण करेंगे। ऐसी संभावना है की चकरभाटा एयरपोर्ट के रनवे का विस्तार करने के लिए अब सेना से जमीन वापसी का मामला भी सुलझ जाएगा और जल्दी ही रनवे का विस्तार होने के बाद महानगर तक हवाई सेवा प्रारंभ उनकी उम्मीद है। अब प्रदेश में भाजपा की सरकार बन गई है केंद्र में भी भाजपा की सरकार का लाभ यहां के लोगों को मिलेगा।

नॉन इंटरलॉकिंग कुछ ट्रेनों का परिचालन प्रभावित

बिलासपुर,9 दिसम्बर(देशबन्धु)।दक्षिण मध्य रेलवे के अंर्तगत काजीपेट जं-कोंडापल्ली सेक्शन एवं विजयवाड़ा -गोधरा जं के बीच तीसरी रेलवे लाइन का कार्य जाएगा, इस नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के लिए कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहने की घोषणा की गयी थी, इस में कुछ संशोधन किया गया है । इस कार्य के फलस्वरुप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे होकर चलने वाली कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा है, जिसकी जानकारी इस प्रकार है। परिवर्तित मार्ग से चलाई जाएगी 17 दिसम्बर, 2023 को तिरुनेलवेली से चलने वाली गाड़ी संख्या 22620 तिरुनेलवेली-बिलासपुर एक्सप्रेस परिवर्तित

मार्ग काटपाडी जंक्शन-पाकाला जंक्शन-धर्मवरम जंक्शन-रेणिगुंटा जंक्शन-गुंतकल जंक्शन-सुलेहल्ली-सिकंदराबाद-काजीपेट-बल्हारशाह होकर रवाना होगी।

18 दिसम्बर को बिलासपुर चलने वाली गाड़ी संख्या 22815 बिलासपुर-एर्णाकुलम एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग बल्हारशाह-काजीपेट-सिकंदराबाद-सुलेहल्ली-गुंतकल जंक्शन-रेणिगुंटा जंक्शन-धर्मवरम जंक्शन-पाकाला जंक्शन-काटपाडी जंक्शन होकर रवाना होगी । 10 एवं 17 दिसम्बर को बिलासपुर से चलने वाली गाड़ी संख्या 12851 बिलासपुर-चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग बिलासपुरङ्करायपुर-लखोली-विजयनगरम-दुव्वाडा-विजयवाड़ा होकर रवाना होगी । 18 दिसम्बर को चेन्नई से चलने वाली गाड़ी संख्या 12852 चेन्नई-बिलासपुर सेंट्रल एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग विजयवाड़ा-दुव्वाडा-विजयनगरम-बिलासपुर होकर रवाना होगी।

ट्रांसपोर्ट नगर बदहाल व्यवसायी परेशान

बिलासपुर , 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। ट्रांसपोर्ट से जुड़े व्यवसाईयों के लिए कुछ साल पहले सर्व सुविधा युक्त ट्रांसपोर्ट नगर बनाकर देने का सपना दिखाया गया था। करोड़ों रुपए लगाकर नगर बनाया भी गया मगर आज उस ट्रांसपोर्ट नगर की हालत काफी जर्जर है। चोर उचक्कों का यह सुरक्षित ठिकाना बना हुआ है। यहां सड़क,बिजली,नाली की कोई व्यवस्था नहीं है। पूरी तरह यहां बदहाली का आलम है। तिफरा के नजदीक परसदा में कुछ साल पहले करोड़ों रूपयों की लागत से ट्रांसपोर्ट नगर विकसित किया गया था। शासन प्रशासन की मंशा थी कि शहर में यहां वहां अलग-अलग जगह मे ट्रांसपोर्ट का काम कर रहे व्यवसाईयों को एक व्यवस्थित स्थान देकर उन्हें वहां से कार्य करने दिया जाए। इसी बात को ध्यान में रखकर ट्रांसपोर्ट नगर की कल्पना की गई और उसे साकार भी किया गया। ट्रांसपोर्ट नगर बना और लोगों ने अपना व्यवसाय भी वहां स्थापित किया, मगर आज जो दुर्दशा यहां के ट्रांसपोर्ट व्यवसायियों को झेलनी पड़ रही है वह किसी बड़ी परेशानी से कम नहीं है। अब तो यहां चोर उचक्कों का साम्राज्य है। बिजली के नाम पर सिर्फ और सिर्फ पोल खड़े नजर आ रहे है।सड़क का नामोनिशान मिट चुका है। नाली रह नही गई,मच्छरों का आतंक अलग से जारी है। कुल मिलाकर शहर में रहने वाले ट्रांसपोर्ट व्यवसाईयों को बर्बाद होने के लिए इस नगर में भेजा गया है। राज्य में सरकार बदली है।एक बार फिर से भाजपा की सरकार शपथ लेकर शासन करने जा रही है। ट्रांसपोर्ट व्यवसाईयों को भरोसा है की एक बार फिर से यहां हालात सुधरेंगे और व्यवसाईयों को काम करने का एक बेहतर माहौल मिलेगा।

निगम,मंडल,बोर्ड व प्राधिकरण के पदाधिकारियों की रवानगी तय

प्रदेश में कांग्रेस सरकार के दौर में निगम,मंडल,बोर्ड व प्राधिकरण की कुर्सी पर काबिज नेताओं की अब छुट्टी तय हो गई है

बिलासपुर, 9 दिसम्बर (देशबन्धु)। प्रदेश में कांग्रेस सरकार के दौर में निगम,मंडल,बोर्ड व प्राधिकरण की कुर्सी पर काबिज नेताओं की अब छुट्टी तय हो गई है। राज्य की सत्ता पर भाजपा की वापसी हो गई है। नई सरकार के गठन के बाद विभिन्न मंडलों व बोर्ड में काबिज कांग्रेसी नेताओं के इस्तीफे का दौर चलेगा। त्यागपत्र ना देने वाले नेताओं की सरकार की ओर से छुट्टी भी तय की जाएगी। भाजपा के दिग्गज नेताओं की नजरें भी इस ओर लगी हुई है। सरकार बनने के बाद सबसे पहले निगम मंडल व बोर्ड में बैठे कांग्रेसी ही निशाने पर रहेंगे। प्रदेश में सरकार बदलते ही अब बोर्ड ओर प्राधिकरण के पदाधिकारियों के कार्यकाल की उल्टी गिनती शुरू हो गई है।आमतौर पर यह माना जाता है कि जिस पार्टी की सरकार प्रदेश में होती है उनके हिसाब से नियुक्तियां होती है, और सरकार के बदलते ही नैतिकता के नाते पदों पर काबिज नेता राजनीतिक सूचिता का पालन करते हुए अपना पद छोड़ देते हैं। माना जा रहा है कि मुख्यमंत्री की घोषणा होने और सरकार के कामकाज प्रारंभ करते ही इस्तीफों का दौर प्रारंभ होगा। जाहिर सी बात है कि दिग्गज भाजपा नेताओं की नजरें भी इस ओर लगी हुई है। दिग्गजों की चिंता अपने समर्थकों को महत्वपूर्ण जगहों पर काबिज कराना भी है। बीते विधानसभा चुनाव में भाजपाई दिग्गजों ने कार्यकर्ताओं की नाराजगी को भी नजदीक से देखा है। नाराजगी के चलते 15 साल की सत्ता से हाथ धोना पड़ा था।

कैबिनेट में लेना होगा निर्णय

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष के अलावा सहकारी समितियों में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने कांग्रेसी नेताओं व कार्यकर्ताओं को काबिज किया था। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष व समिति के पदाधिकारियों को उनके पदों से हटाने के लिए कैबिनेट में प्रस्ताव पारित कराना होगा। इसके बाद ही प्रक्रिया आगे बढ़ेगी। माना जा रहा है कि इस प्रक्रिया के चलते इनके पद एक से दो महीने सुरक्षित रहेगा। इसके बाद प्रक्रिया पूरी कर इनको पद से हटाया जाएगा।

ये देंगे इस्तीफा

छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के अध्यक्ष अटल श्रीवास्तव,अरपा बेसिन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अभयनारायण राय,सदस्य नरेंद्र बोलर,महेश दुबे,आशा दुबे,अपेक्स बैंक के अध्यक्ष बैजनाथ चंद्राकर को अपने पद से इस्तीफा देना होगा। इसके अलावा सेंट्रल जेल में बनाई गई समिति के सदस्यों को भी अपना पद छोड़ना होगा।

सांसद आवास अब होगा विधायक आवास

बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद अरुण साव को जिला प्रशासन ने नेहरु चौक स्थित शासकीय आवास आवंटित किया है। साव ने सांसद पद से इस्तीफा दे दिया है। लोरमी विधानसभा क्षेत्र के विधायक निर्वाचित हो गए हैं। अब यह बंगला विधायक निवास के नाम से आवंटित कर दिया जाएगा।

NECC

10.12.2023	अंडा	मुर्गी	काकरेल
फार्म	570	75	135
चिल्हर	675	90	165

डिलीवरी 585 सैकड़ा
दर्जन अंडा 80 रु.
मुर्गी खाद प्रति ट्राली 1000 रू.
CSPFA

प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक- राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन, प्रा.लि. के लिए पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. प्रेस में मुद्रित एवं गर्ल्स कॉलेज के पास, जरहाभाटा, बिलासपुर से प्रकाशित। प्रेस पंजीयन- 52158/91 डाक पंजीयन 112-002/2002 सी जी फोन- 07752 422771, 428159 फैक्स नं. 415188